माघ माह , कृष्ण पक्ष 21 वर्ष, अंक 28 पृष्ठ 8 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज रविवार 20 फरवरी 2022 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

पंजाब में मतदान आज, तैयारियां पूरी, कई नेताओं की प्रतिष्ठा दांव पर

सभी दुकानें और व्यवसायिक संस्थान बंद; कर्मचारियों को मिलेगी पेड छुट्टी

चंडीगढ़: पंजाब विधानसभा चुनाव 2022 के लिए आज, यानी रविवार को मतदान होगा। सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक लोग वोट डाल सकेंगे। इसके लिए प्रदेश में 14,751 जगहों पर 24,740 पोलिंग बूथ बनाए गए हैं। प्रदेशभर में पुलिस का कड़ा पहरा रहेगा। इस दौरान राज्य में सभी दुकानें और व्यवसायिक संस्थान बंद रहेंगी।

कर्मचारी भी वोटिंग कर सकें, इसलिए चीफ सेक्रेटरी की तरफ से पेड छुट्टी और श्रम विभाग की स्पेशल सेक्रेटरी ने सभी व्यवसायिक संस्थान बंद रखने को कहा है। 117 सीटें, 1304 कैंडिडेट: पंजाब में 117 विधानसभा सीटों के लिए विधायक चुने जाने हैं। इसके लिए 1,304 उम्मीदवार के बीच मुकाबला होगा। कड़ी टक्कर आम आदमी पार्टी, कांग्रेस, अकाली दल-बसपा गठबंधन, भाजपा, पंजाब लोक कांग्रेस और शिअद संयुक्त गठबंधन के अलावा पंजाब के 22 किसान संगठनों के संयुक्त समाज मोर्चा के बीच है।

एक करोड़ महिला वोटर: पंजाब में पहली बार एक करोड़ से ज्यादा महिलाएं वोट डालेंगी। पंजाब में कुल वोटरों की संख्या 2 करोड़ 14 लाख 99 हजार 804 है।

इनमें 1 करोड़ 12 लाख 98 हजार 81 पुरुष और 1 करोड़ 2 लाख 996 महिला वोटर हैं। इसके अलावा 727 वोटर ट्रांसजेंडर हैं।

एशिया के सबसे बड़े सीएनजी प्लांट का लोकार्पण

कचरे से 'कंचन' बनाने के अभियान का हो रहा असर: पीएम, शिवराज सरकार 5 रु. प्रति किलो गोबर खरीदेगी

नई दिल्ली/इंदौर: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को इंदौर में बने एशिया के सबसे बड़े गोबर धन प्लांट का वर्चुअली लोकार्पण किया। इस दौरान पीएम मोदी ने कई बड़ी घोषणाएं की। उन्होंने कहा कि यह प्लांट दूसरे शहरों को प्रेरणा देगा। अगले दो साल में 75 बड़े शहरों में इस प्रकार के बायो सीएनजी प्लांट बनाए जाएंगे। यह अभियान भारत के शहरों को स्वच्छ बनाने, प्रदूषण रहित बनाने, क्लीन एनर्जी की दिशा में बहुत मदद करेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने वर्चुअली ही इस बायो सीएनजी प्लांट के लोकार्पण में भाग लिया। उन्होंने कहा कि गोबर धन बायो सीएनजी प्लांट से इंदौर को प्रतिदिन 17 से 18 हजार किलो बायो सीएनजी प्लांट मिलेगी तो इससे प्रदूषण कम होगा। इस प्लांट में जो जैविक खाद बनेगी, उससे हमारी धरती मां को भी नया जीवन मिलेगा। हमारी धरती का कायाकल्प होगा। एक अनुमान है कि इस प्लांट में जो सीएनजी बनेगी, उससे इंदौर शहर में हर रोज करीब-करीब 400 बसें चलाई जा सकेंगी। इस प्लांट से सैकड़ों युवाओं को किसी न किसी रूप से रोजगार भी मिलने वाला है। यह ग्रीन जॉब्स बढ़ाने में भी मददगार होगा।

इंदौर की सफाई देखने आते हैं लोग: पीएम मोदी ने कहा कि 2014 की तुलना में शहरी कूड़े के निसरण की क्षमता चार गुना तक बढ़ चुकी है। सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्ति दिलाने के लिए 1600 से अधिक निकायों में मटेरियल रिकवरी फेसिलिटी भी तैयार हो रही है। स्वच्छ होते शहर से नई संभावना जन्म लेती है। जब शहर स्वच्छ होंगे, तो दूसरी जगह से लोगों को आने का मन करेगा। कितने ही लोग तो केवल यह देखने इंदौर आते हैं कि यहां सफाई में क्या काम हुआ है। जहां स्वच्छता होती है, पर्यटन होता है। पूरी नई अर्थव्यवस्था चल पड़ती है। हाल ही में इंदौर ने वाटर प्लस होने की उपलब्धि हासिल की है। यह अन्य शहरों को दिशा देने का काम करेगा। जहां जल स्रोत साफ होते हैं।

नाले का गंदा पानी उनमें नहीं गिरता, तो एक अलग ही जीवंत ऊर्जा उस शहर में आ जाती है। सरकार का प्रयास है कि भारत के ज्यादा से ज्यादा शहर वाटर प्लस बने। इसके लिए स्वच्छ भारत मिशन के दूसरे चरण पर जोर दिया जा रहा है। एक लाख से कम आबादी वाले नगर निकायों में गंदे पानी के ट्रीटमेंट की सुविधाएं बढ़ाई जा रही है।

सफाईकर्मियों का जताया आभार

पीएम मोदी ने इस अवसर पर इंदौर समेत देशभर के सफाईकर्मियों का आभार जताया। इंदौर की जागरुक बहनों ने कूड़े के प्रबंधन को अलग मुकाम पर पहुंचा दिया है। कूड़े को छह हिस्सों में अलग-अलग करते हैं। इससे कूड़े की प्रोसेसिंग और रीसाइकलिंग ठीक से हो सकती है। स्वच्छता के साथ-साथ रीसाइकिलिंग के संस्कारों को सशक्त बनाना देश की बड़ी सेवा है। यही तो लाइफ यानी लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट का दर्शन है। जीवन जीने का तरीका है। इंदौर के साथ ही देशभर के लाखों सफाईकर्मियों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं। सर्दी-गर्मी हो, सुबह-सुबह निकल पड़ते हैं अपने शहर को स्वच्छ बनाने में। कोरोना के मुश्किल समय में भी जो सेवा भाव दिखाया है, उसने कितने ही लोगों का जीवन बचाने में मदद की है। पूरा देश सफाईकर्मी भाई-बहन का अत्यंत ऋणी है।

हवा-हवाई वादों पर अब लगेगी लगाम!

नई दिल्ली: राजनीतिक पार्टियों को घोषणा पत्र के प्रति जवाबदेह बनाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की गई है। इस याचिका में मांग की गई है कि राजनीतिक दलों को चुनावी वादों के प्रति जवाबदेह बनाने और घोषणापत्र को विनियमित करने के लिए निर्देश दिया जाए। अधिवक्ता अश्विनी कुमार दुबे की ओर से दायर इस याचिका के तहत कहा गया है कि घोषणा पत्र में किए गए वादों को पूरा न करने पर राजनीतिक दलों के चुनाव चिन्ह को जब्त करने के साथ उनकी मान्यता को भी रद्द किया जाए।

केंद्र व चुनाव आयोग ने नहीं उठाए कोई कदम: याचिका में कहा गया है ।

जल्द लौटेंगे यूक्रेन में फंसे भारतीय

कीव से दिल्ली के लिए 22, 24 और 26 फरवरी को उड़ान भरेंगे विमान; 18,000 भरतीयों की होगी वतन वापसी

नई दिल्ली/कीव: यूक्रेन और रूस के बीच उपजा तनाव लगातार बढ़ रहा है। रूस कभी भी यूक्रेन की राजधानी कीव पर हमला कर सकता है। ऐसे में भारत सरकार ने अपने नागरिकों को वापस वतन लाने के लिए पहल की है। सरकार ने यूक्रेन की राजधानी कीव से दिल्ली के बीच फ्लाइट चलाने का फैसला किया है। एयर इंडिया ने ट्वीट कर इसकी जानकारी दी है। इसमें बताया गया है कि 22, 24 और 26 फरवरी को कीव के बोरिस्पोल इंटरनेशनल एयरपोर्ट से दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट के बीच उड़ानें भरी जाएंगी। फ्लाइट्स के लिए बुकिंग एयर इंडिया कार्यालयों, वेबसाइट, कॉल सेंटर और ट्रैवल एजेंट के जरिए की जा सकती है। रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे विवाद की वजह से भारत के लिए उड़ानें महंगी हो गई हैं और 20 फरवरी के बाद ही उपलब्ध हैं। एक टिकट की कीमत एक लाख रुपए तक पहुंच गई है। एयर इंडिया की फ्लाइट शुरू होने से टिकट के दाम कुछ कम हो सकते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, यूक्रेन में पढ़ाई कर रहे करीब 18,000 भारतीय छात्र फंसे हैं।

हिजाब बन गया हक की लडाई...

हिजाब विवाद: मैसूर के कॉलेज ने हिजाब पहनने की परमिशन दी, तुमकुर में हिजाब के लिए प्रोटेस्ट कर रही 30 छात्राओं पर केस

बेंगलुरु: कर्नाटक के मैसूर शहर के एक निजी कॉलेज ने शुक्रवार को अपना यूनिफॉर्म रूल रद्द कर दिया है। मुस्लिम छात्रों को हिजाब के साथ कक्षाओं में बैठने की इजाजत दे दी है। इस तरह का फैसला करने वाला यह राज्य का पहला कॉलेज बन गया है। मैसूर के डीडीपीयू डीके श्रीनिवास मूर्ति ने बताया कि शुक्रवार को चार छात्राओं ने बिना हिजाब के कक्षाओं में जाने से इनकार कर दिया और प्रदर्शन करने लगे। कुछ संगठनों ने उन्हें समर्थन दिया। मैंने कॉलेज का दौरा किया और सभी से चर्चा की। इस बीच, कॉलेज ने घोषणा की कि यूनिफॉर्म रूल को रद्द करने का फैसला लिया गया है।

हिजाब को हटाने से इनकार के बाद कॉलेज में छुट्टी: दक्षिण कन्नड़ और उडुपी जिलों के 6 से अधिक कॉलेजों में छात्रों ने प्रर्दशन किया। जिदेकल्लू के गवर्नमेंट फर्स्ट ग्रेड कॉलेज में तीन छात्रों ने हिजाब को हटाने से इनकार कर दिया। विवाद बढ़ने के बाद कॉलेज में छुट्टी घोषित कर दी गई।

30 छात्राओं के खिलाफ एफआईआर दर्ज: उधर, कर्नाटक हाई कोर्ट के अंतरिम आदेश के बावजूद तुमकुर में गर्ल्स एम्प्रेस गवर्नमेंट पीयू कॉलेज में छात्राएं पिछले दो दिनों से हिजाब पहन कर प्रवेश करने की मांग कर रही हैं। इस पर कॉलेज के प्रिंसिपल ने तुमकुर सिटी पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। मामले पर एक्शन लेते हुए पुलिस ने 30 छात्राओं के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। इनमें वो छात्राएं शामिल हैं, जिन्होंने 17 और 18 फरवरी को हिजाब नियम के खिलाफ हंगामा किया था।

अखिलेश बाबू किसे डराते हो...: शाह

पहले और दूसरे चरण में साफ हो जाएगा सपा का सूपड़ा

बांदा: यूपी में बांदा जिले के तिंदवारी विधानसभा क्षेत्र में आयोजित जनसभा में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सपा, बसपा और कांग्रेस पर निशाना साधा। अखिलेश यादव पर तंज कसते हुए उन्होंने कहा कि पहले व दूसरे चरण में सपा-बसपा का सूपड़ा साफ होने वाला है। अखिलेश यादव को चेताया कि हम किसी से डरते नहीं हैं। उन्होंने बुंदेलखंड में पानी का संकट दूर करने के लिए भाजपा सरकार द्वारा शुरू की गई परियोजनाओं को गिनाया और डिफेंस कॉरीडोर की स्थापना किए जाने की बात कही। जनसभा में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने संबोधन की शुरूआत भारत माता की जय के उद्घोधन से की। उनहोंने बाबा बामदेव की धरती को नमन किया और मां रानी दुर्गावती के साहस को याद किया। उन्होंने चालीस साल से गायब मां योगिनी की मूर्ति वापस लाए जाने पर प्रणाम किया। कहा, पहले और दूसरे चरण में जाकर आया हूं, इसमें सपा और बसपा का सूपड़ा साफ हो गया है।

'हिटमैन' रोहित शर्मा बने नए टेस्ट कप्तान

श्रीलंका के खिलाफ टी20 और टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम का एलान

नई दिल्ली: श्रीलंका के खिलाफ तीन टी20 और दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए भारतीय टीम का एलान हो गया। शनिवार (19 फरवरी) को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के मुख्य चयनकर्ता चेतन शर्मा ने टीम की घोषणा की। इस दौरान रोहित शर्मा को भारतीय टेस्ट टीम का नया कप्तान घोषित किया गया है। वे टेस्ट में भारत के 35 कप्तान होंगे। चेतन शर्मा ने कहा- रोहित की कप्तानी में खेलते हुए केएल राहुल, ऋषभ पंत और जसप्रीत बुमराह अगले टेस्ट कप्तान के रूप में तैयार होंगे। इन तीनों में से कोई एक भविष्य में भारत का नेतृत्व करेगा। रोहित का ध्यान टी20 और वनडे वर्ल्ड कप पर ज्यादा है।

विराट कोहली और ऋषभ पंत को वेस्टइंडीज के खिलाफ तीसरे टी20 मैच और श्रीलंका के खिलाफ पूरी टी20 सीरीज के लिए आराम दिया गया है। शार्दुल को श्रीलंका के खिलाफ टी20 और टेस्ट सीरीज के लिए आराम दिया गया है। उत्तर प्रदेश के बाएं हाथ के स्पिनर सौरभ कुमार को पहली बार भारतीय टेस्ट टीम में शामिल किया गया है। वे दक्षिण अफ्रीका में स्टैंडबाई के तौर पर गए थे।

रहाणे और पुजारा टेस्ट टीम से बाहर: अजिंक्य रहाणे और चेतेश्वर पुजारा को टेस्ट टीम से बाहर कर दिया गया है। चेतन शर्मा ने टीम घोषणा के समय कहा कि दोनों को सिर्फ श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज से बाहर किया गया है।

अब गरीब रथ का सफर भी होगा आरामदायक

नई दिल्ली: भारतीय रेलवे अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए लगातार नए तरीके अपना रहा है। इसी के तहत रेलवे अब गरीब रथ के कोचों में सुविधाएं बढ़ाने जा रहा है। जल्द ही गरीब रथ के कोच भी सामान्य एसी कोच की तरह हो जाएंगे। इन्हें नए थर्ड एसी इकोनॉमी कोच से बदला जाएगा। राजद नेता लालू प्रसाद यादव ने यूपीए सरकार के कार्यालय में रेल मंत्री रहते हुए गरीब रथ ट्रेन सेवा की शुरूआत की थी। इसमें साइड में दो की बजाय तीन तीन बर्थ लगाई गई थीं।

एनआईए ने किया डी-कंपनी के प्लान का खुलासा

दाउद ने भारत में हमलों के लिए स्पेशल यूनिट बनाई, दिल्ली और मुंबई में बड़े नेताओं और हस्तियों को बनाया टारगेट

नई दिल्ली/मुंबई: डी-गैंग की एक साजिश की खबर भारतीय खुफिया एजेंसियों के हाथ लगी है। नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए) ने अपनी एफआईआर में इस साजिश का जिक्र किया है। एनआईए के मुताबिद डी-गैंग के सरगना और भारत के मोस्ट वांटेड आतंकी दाउद ने भारत में हमलों के लिए एक स्पेशल यूनिट बनाई है। जिसके निशाने पर बड़े नेता और हस्तियां हैं।

हिंसा को हवा देना है मकसद: एफआईआर के मुताबिक, दाउद अपनी स्पेशल यूनिट के जरिए भारत में हमले करना चाहता है और उसका फोकस दिल्ली और मुंबई हैं। यहां के बड़े नेता और बड़ी हस्तियां उसके टारगेट हैं। दाउद विस्फोटक और घातक हथियारों से लैस इस यूनिट के जरिए भारत के कई इलाकों में हमले करना चाहता है। जांच एजेंसी के मुताबिक, ये हमलों का मकसद भारत के विभिन्न हिस्सों में हिंसा भड़काना है।

ईडी की कस्टडी में दाउद का भाई इकबाल कासकर

एनआईए के खुलासे से एक दिन पहले ही यानी शुक्रवार को ईडी ने दाउद के भाई इकबाल कासकर को कस्टडी में लिया है। मनी लॉन्ड्रिंग के एक मामले में एऊ अगले 7 दिन यानी 24 फरवरी तक इकबाल से पूछताछ करेगी

। ईडी ने हाल ही में दाउद और उसके करीबियों के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग का केस दर्ज किया है। ईडी के मुताबिक, ये लोग आतंकवादी गतिविधियों की फंडिंग कर रहे हैं।

कुमार विश्वास को वाई श्रेणी की सुरक्षा

नई दिल्ली: दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर खालिस्तान समर्थकों के साथ संबंध होने का आरोप लगाने वाले कुमार विश्वास की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। केंद्र सरकार ने उन्हें सीआरपीएफ कवर के साथ वाई श्रेणी की सुरक्षा देने का फैसला किया है। दरअसल, देश के चर्चित कवि कुमार विश्वास ने बुधवार को अपने पूर्व साथी अरविंद केजरीवाल पर बड़ा आरोप लगाया था। उन्होंने कहा था कि केजरीवाल पंजाब में अलगाववादियों के समर्थक थे। कुमार ने कहा कि केजरीवाल ने एक बार उनसे कहा था कि वे या तो पंजाब के मुख्यमंत्री बनेंगे या स्वतंत्र राष्ट्र खालिस्तान के पहले प्रधानमंत्री। विश्वास ने दावा किया था कि केजरीवाल को अलगाववादियों की मदद लेने में भी कोई परहेज नहीं है। पंजाब कोई राज्य नहीं है। पंजाब एक भावना है। पूरी दुनिया में पंजाबियत एक भावना है। ऐसे में एक ऐसा आदमी जिसे एक समय मैंने ये तक कहा था कि अलगाववादियों का साथ नहीं लीजिए।

खबर संक्षेप

मानव श्रृंखला बनाकर मतदान के प्रति किया जागरूक

प्रयागराज। ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज के एनएसएस की ओर से शनिवार को रैली निकालकर मतदान के प्रति लोगों को जागरूक किया गया। प्राचार्य डॉ. आनंद शंकर सिंह ने स्वयं सेवकों को मतदान की शपथ दिलाई। डॉ. मान सिंह और सुमन अग्रवाल ने झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। रैली शुक्ला मार्केट, सलोरी, काटजू कॉलोनी, होते हुए ईश्वर शरण आश्रम में समाप्त हुई। इस दौरान छात्रों ने मानव श्रृंखला बनाकर लोगों को मतदान करने की अपील की। इस अवसर पर डॉ. अंजना श्रीवास्तव, डॉ. विवेक कुमार राय, डॉ. शिव, डॉ. अरविंद मिश्र, डॉ. अविनाश पांडेय, डॉ. नरेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

रसूलपुर में जनसभा के साथ पैदल भी घूमेंगे ओवैसी

प्रयागराज। ऑल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुस्लिमीन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद असद उद्दीन ओवैसी 22 फरवरी को शहर दक्षिणी के रसूलपुर चौराहे पर जनसभा करेंगे। साथ ही घर-घर प्रचार भी करेंगे।

आंगनबाड़ी को न देकर सीडीपीओ ने बेच दिया 25 लाख रुपए का खाद्यान्न, जांच शुरू

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़ की एक दुकान पर बेचा गया राशन

प्रयागराज। होलागढ़ में सूखा राशन के वितरण में गबन की पुष्टि हुई है। सीडीपीओ ने 26.98 लाख रुपये का सूखा राशन प्रतापगढ़ में बेच दिया था। पूछताछ के दौरान यह बात सामने आई है। कमेटी ने जांच पूरी कर ली है।हालांकि शनिवार देर रात तक रिपोर्ट डीएम को नहीं सौंपी गई थी। बताया जा रहा है कि आरोपी सीडीपीओ ने राशन बेचने की बात खुद कबूली है। अब तक की जांच के आधार पर सीडीपीओ के खिलाफ निलंबन की कार्रवाई की बात कही जा रही है।होलागढ़ में आंगनबाड़ी केंद्रों को दिया जाने वाला नवंबर महीने का सूखा राशन गोदाम पर ही नहीं पहुंचा था। शिकायत के बाद प्रारंभिक जांच में राशन बेचे जाने की बात सामने आई थी। इसके बाद डीएम के निर्देश पर दो सदस्यीय जांच कमेटी गठित की गई थी। जांच में पाया गया कि आरोपी सीडीपीओ ने प्रतापगढ़ की एक दुकान पर पूरा राशन बेच दिया था।इसमें दलिया, घी, कई अनाजों का मिश्रित आटा आदि खाद्य वस्तुएं शामिल थीं। अफसरों के अनुसार सीडीपीओ ने कबूला है कि उसे पैसे की जरूरत थी। इसलिए उसने महिलाओं एवं बच्चों के लिए आया राशन बेच दिया। जांच टीम ने आरोपी अफसर के अलावा अन्य सभी संबंधित से पूछताछ की। डीएम संजय कुमार खत्री का कहना है कि जांच आख्या अभी नहीं मिली है। रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सोरांव में 24 फरवरी को होगी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सभा

प्रयागराज। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गुरुवार 24 फरवरी को होने वाली जनसभा फाफामऊ विधानसभा की जगह अब सोरांव विधानसभा क्षेत्र में होगी। पीएम की सभा सोरांव विधानसभा क्षेत्र स्थित एलडीसी कालेज परिसर नहर दरौली, मऊआइमा में होगी। पहले कार्यक्रम स्थल फाफामऊ तय किया गया था। पीएम की सभा में केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल भी शामिल हो सकती हैं। इसके अलावा इसमें प्रयागराज के साथ प्रतापगढ़ जिले के सभी विधानसभा सीटों के प्रत्याशी भी शिरकत कर सकते हैं। पीएम की सभा को लेकर शनिवार को भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री कैलाश विजयवर्गीय, प्रदेश उपाध्यक्ष लक्ष्मण आचार्य, काशी क्षेत्र चुनाव प्रभारी महिला मोर्चा नंदा डगला ने आयोजन स्थल का निरीक्षण भी किया। उधर पीएम मोदी और अमित शाह के प्रयागराज आगमन को लेकर पार्टी कार्यालय में पदाधिकारियों की बैठक हुई।बैठक में महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी ने कहा कि पार्टी के कार्यकर्ता गंगापार और यमुनापार में निकले और अधिक से अधिक लोगों को प्रधानमंत्री की चुनावी सभा में शामिल होने के लिए आग्रह करें। बैठक में झारखंड के संगठन महामंत्री धर्मपाल, यमुनापार जिला प्रभारी ओंकार केसरी, अश्वनी दुबे, विभव नाथ भारती, राजेश केसरवानी, रोहित पप्पू पांडेय, विवेक अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

महाविद्यालय में रोजगार मेले का हुआ आयोजन

नैनी। हेमवती नंदन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रोजगार एवं सेवायोजन प्रकोष्ठ द्वारा गुड वर्कर्स टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से महाविद्यालय में आयोजित होने वाले रोजगार मेले के संदर्भ में छात्र-छात्राओं को रोजगार उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान करने हेतु रोजगार मेले का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर महाविद्यालय के कुल 103 छात्र साक्षात्कार हेतु उपस्थित हुए। जिसमें प्रथम चरण के अंतर्गत 54 छात्रों को ऑनलाइन ऑफलाइन एवं स्थानीय रीति के रोजगार हेतु वेलस्पन ,रेमंड, अमेजन, स्विगी, जोमैटो ,जे एस डब्ल्यू फ्लिपकार्ट , रैपिडोआदि कंपनियों के लिए सफल घोषित किया गया। उक्त कार्यक्रम महाविद्यालय प्रांगण में अपराहन 12:00 बजे से सायं काल 5:00 बजे तक चला जिसमें गुड वर्क टेक्नोलॉजी के स्टेट मोबिलाइजर प्रभाकर तिवारी के नेतृत्व में विशेषज्ञों अफजल इदरीसी, रजनीश पांडेय, अरविंद कुमार, रोहित पांडेय की टीम ने छात्रों का साक्षात्कार लिया एवं उनकी कुशलता को जांचा परखा। उक्त अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर सुनंदा चतुर्वेदी ने रोजगार मेले के प्रथम चरण के सफल प्रतिभागियों को बधाई एवं भविष्य हेतु शुभकामनाएं प्रेषित की। इस आयोजन में रोजगार एवं सेवायोजन समिति की अध्यक्ष डॉ सुवर्णा सरकार एवं समिति के सदस्य डॉ स्मिता पॉल, डॉ अनुभा श्रीवास्तव, डॉ पूनम शुक्ला, डॉ अजय मिश्र व डॉ अमित कुमार मिश्र समेत महाविद्यालय परिवार उपस्थित रहे। उक्त जानकारी मीडिया समिति के डॉ भास्कर शुक्ल ने दी।

किसके सर बंधेगा कोरांव विधानसभा के तीसरे विधायक का ताज

आरती कोल शिवसेना

राजबली जैसल बसपा

रामकृपाल कोल कांग्रेस

राजमणि कोल भाजपा

रामदेव निडर एसपी

डॉ. शमीम

पसना। कोरांव विधानसभा का गठन मई 2008 में परिसीमन आयोग के सर्वेक्षण के बाद हुआ,इस प्रकार नवसृजित कोरांव विधानसभा का अस्तित्व 2012 में विधानसभा चुनावों के साथ आया।2012 के पहले कोरांव विधानसभा का क्षेत्र मेजा विधानसभा के दायरे में आता था।पूर्व में मेजा विधानसभा अनुसूचित जाति हेतु आरक्षित थी,नई विधानसभा सभा कोरांव के गठन के बाद मेजा विधानसभा तो अनारक्षित हो गयी लेकिन नवगठित कोरांव विधानसभा अनुसूचित जाति हेतु आरक्षित हो गयी। 2012 में सम्पन्न विधानसभा चुनाव में तत्कालीन मेजा विधायक राजबली जैसल बसपा उम्मीदवार के रूप में माकपा के पूर्व विधायक राम कृपाल कोल को पराजित कर कोरांव विधानसभा के प्रथम विधायक होने का गौरव प्राप्त किया।गौरतलब है कि इस चुनाव में भाजपा उम्मीदवार तुलसीदास तीसरे स्थान पर रहे। कभी कम्यूनिस्टों के गढ़ रहे कोरांव क्षेत्र से मेजा विधायक के रूप में सी.पी.एम. के रामकृपाल लगातार 1996 एवं 2002 के विधानसभा चुनावों में विजयी रहे।कोरांव में कम्युनिस्ट पार्टी को खड़ा करने वाले वयोवृद्ध कम्यूनिष्ट नेता कामरेड हरिराम पांडेय से वैचारिक मतभेद के बाद रामकृपाल तिबारा विधानसभा नहीं पहुंच पाये।2007 एवं 2012 के चुनावों में सी.पी.एम.व 2017 के चुनाव में पाला बदलकर कांग्रेसी हाथ के सहारे भी रामकृपाल की नैया पार नहीं लग पायी। 2017 के विधानसभा चुनाव में पहली बार कोरांव विधानसभा में भाजपा के नये उम्मीदवार राजमणि कोल ने मोदी लहर के सहारे एक लाख से ऊपर मत प्राप्त कर कोरांव विधानसभा के दूसरे विधायक बनने का गौरव प्राप्त किया।गौरतलब है कि तत्कालीन बसपा विधायक राजबली जैसल को तीसरे स्थान पर संतोष करना पड़ा। वर्तमान 2022 के विधानसभा चुनावों के पांचवे चरण(प्रयागराज जनपद)के मतदान में कुछ दिन ही बचे हैं,सत्तारूढ दल के साथ-साथ सभी प्रमुख राजनीतिक दलों ने अपने-अपने उम्मीदवारों को चुनाव मैदान में उतार दिया है। सत्तारुढ़ दल भाजपा ने पहले अपने निवर्तमान विधायक का टिकट काटकर पार्टी की महिला कार्यकर्ता को उम्मीदवार घोषित किया था,लेकिन नामांकन समाप्ति के दो दिन पूर्व आरती कोल का टिकट बदलकर पुनः राजमणि कोल को टिकट देकर उम्मीदवार बना दिया,जिससे आरती कोल पाला बदलकर शिवसेना उम्मीदवार के रूप में चुनाव मैदान में उतर गयीं,क्षेत्र में उन्हें एकमात्र महिला उम्मीदवार होने लाभ भी मिल रहा है। कांग्रेस से 6 माह पूर्व सपा में शामिल रामकृपाल कोल टिकट न मिलने पर पुनः कांग्रेस की शरण मे जाकर पंजे के सहारे चुनाव मैदान में हैं।कोल बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण कोल वोटरों पर एकाधिकार जताते हुए विधानसभा में तीसरी बार पहुचनें का सपना सँजोये हैं। समाजवादी पार्टी ने पूर्व में दो बार घोषित होने के बावजूद गठबंधन के कारण चुनाव न लड़ पाने वाले पुराने कार्यकर्ता रामदेव निडर को अपना उम्मीदवार बनाया है।किसान बाहुल्य क्षेत्र होने एवं किसानों के सत्तारूढ़ दल के विरोध स्वरूप एवं वर्तमान विधायक राजमणि के प्रति जनमानस में उपजे असन्तोष के कारण रामदेव निडर मजबूत प्रत्याशी के रूप में उभर रहे हैं।कुल मिलाकर कोरांव विधानसभा में भाजपा,सपा,बसपा,कांग्रेस चारों दलों के उम्मीदवार जनता में अपने-अपने को मजबूत प्रत्याशी बता रहे हैं लेकिन चुनावी विश्लेषकों की नजर में पूरे प्रदेश की भांति मुख्य मुकाबला भाजपा एवं सपा के बीच ही नजर आ रहा है। कोरांव विधानसभा में आम आदमी पार्टी,जन अधिकार पार्टी एवं निर्दलीयों को मिलाकर कुल 12 उम्मीदवार विधायक बनने की दौड़ में शामिल है, देखना यह है कि 10 मार्च को जीत का सेहरा किसके सर सजता है।

10 मार्च को खुल जायेगा राज

कोरांव विधानसभा में मोदी योगी के विकास कार्यों की लहर है। पिछली बार से बड़ी जीत भाजपा की होगी।दूसरे नंबर पर के लिए लड़ाई बसपा सपा और कांग्रेस में करारी है।। अबकी बार डेढ़ लाख पार का हमारा नारा है भाजपा जिताओ राजमणि जीताओ 2022हमारा है।

अनिल मिश्र पूर्व जिला मंत्री भाजपा यमुनापार प्रयागराज

भारतीय किसान यूनियन(लोकशक्ति) के जिला प्रवक्ता रामलाल सिंह का मत है कि मौजूदा सरकार किसान,मजदूर,रोजगार विरोधी सरकार है।वर्तमान विधानसभा चुनाव भाजपा बनाम आम जनता है,इस बार जनता स्वयं चुनाव लड़ रही है। अवाम की एकजुटता वर्तमान तानाशाही सरकार को हटाने के लिए प्रतिबद्ध है।

रामलाल सिंह

वोट मांगने आए अब तक के प्रत्याशियों में राजबली जैसल, रामकृपाल या फिर वर्तमान विधायक राजमणी कोल हो सबको मौका दिया गया क्षेत्र में विकास करने के लिए परन्तु किसी ने भी धरातल पर कोई काम नहीं किया। सबसे मेरा यही सवाल है कि क्षेत्र की मूलभूत समस्याएं बिजली, पानी, बसअड्डे, रेलवे लाइन, सिंचाई, रोजगार के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर, रोजगार के लिए फैक्ट्री, उद्योग आदि पर फोकस किसी ने भी नहीं किया सिर्फ वोट लेकर ठगने का काम किया है। इन लोगों ने सिर्फ अपना विकास डिग्री कालेज खोलकर किया है जनता या समाजिक सरोकरिता से कोई वास्ता नहीं रहा है इस बार परिवर्तन के विकल्प के तौर पर युवाओं की उम्मीद अखिलेश यादव के नाम पर वोट किया जाएगा।

फरहान गांधी (छात्र)

शादी से वापस लौटते, बाईक सवार की टक्कर से मौत

सहसों। चचेरी बहन की शादी में शामिल होकर घर लौट रहे बाइक सवार युवक की चार पहिया अज्ञात वाहन की टक्कर से मौत हो गई। घटना से घर में कोहराम मचा हुआ है। सरायइनायत थाना क्षेत्र के सहसों निवासी विजय कुमार (15) पुत्र गुनई की चचेरी बहन की शादी शुक्रवार को थरवई थाना क्षेत्र के कांदी गांव में आयोजित थी। जिसमें शामिल होने के बाद वह रात साढ़े 10 बजे बाइक से अपने घर वापस आ रहा था। सहसों-कांदी रोड पर कसेरूआ कला गांव के सामने पीछे से किसी अज्ञात चार पहिया वाहन ने जोरदार टक्कर मार दिया। जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी मिलने पर आनन-फानन में परिजन उसे लेकर एसआरएन अस्पताल प्रयागराज के लिए चल दिए। परन्तु रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। घरवाले शव को लेकर वापस लौट आए। सहसों चौकी इंचार्ज दयाराम सिंह को घटना की जानकारी होने पर शनिवार को सुबह उन्होंने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

यूपी में नारियां सुरक्षित नहीं : प्रियंका चतुर्वेदी

अखंड भारत संदेश

शिवसेना का कोरांव और लेंडियारी में विशाल जन सभा, कोरांव में नारी के अपमान और आरती के आंसुओं का बदला लिया जायेगा : शिवसेना

शिवसेना प्रत्यासी आरती कोल के जनसभा में भाषण देती प्रियंका चतुवेर्दी सांसद

कोरांव। कोरांव विधान सभा सुरक्षित सीट पर सालों से भाजपा के लिए मेहनत कर रहीं श्रीमती आरती कोल भाजपा प्रत्यासी को टिकट दे कर तमाम तरह की रुसवाई करके अचानक टिकट काट कर भाजपा के निवर्तमान विधायक को भाजपा द्वारा टिकट दिए जाने से नाराज शिवसेना ने गले लगाते हुए आरती कोल को शिवसेना से टिकट दे कर नारी के अपमान का बदला लेने के लिए भाजपा को सबक सिखाने हेतु अपना उम्मीदवार बना कर मैदान में उतारा है,जिस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राज्य सभा सांसद प्रियंका चतुवेर्दी ने दोनो जन सभाओं में संबोधित करते हुए कहा कि यूपी में नारियां कदापि सुरक्षित नहीं हैं। भाजपा की ओर इशारा करते हुए कहा कि कोरांव में आरती कोल का बदला आरती कोल को चुनाव जिताने से होगा।

मुख्य अतिथि ने कहा कि जो नारी रात दिन भाजपा के लिए काम किया टिकट दिया अचानक उसको हटा कर निवर्तमान विधायक को दे दिया यह नारी का अपमान नहीं तो और क्या है। पार्टी किसी की बपौती नहीं होती। उन्होंने कहा कि यूपी में आए दिन बहु बेटियों के साथ बलात्कार,जुल्म जारी है,उनकी लाशें तक परिजनों को नहीं दी जाती, यह प्रदेश कैसे उत्तर प्रदेश बन सकता है। राज्य सभा सांसद शिवसेना ने सवर्ण समाज एवं बिरसा मुंडा के अनुयाइयों से कहा कि कोरो में एक नारी शक्ति का अपमान का बदला लखनऊ विधान सभा में भेज कर लें। और एक नारी के फंसे सम्मान को बचाएं। उन्होंने कहा की भाजपा का कहां गया वह नारी सम्मान नारी सुरक्षा,नारी सशक्तिकरण स्कीम,जिसे यहां से महिला को टिकट दे कर अचानक टिकट काट दिया। उन्होंने कहा मुख्य मंत्री जी महाराष्ट्र भाई ठाकरे साहब ने यूपी की नारी सम्मान में कोराव प्रयागराज का उम्मीदवार बनाया है,जो गर्व की बात है। उन्होंने कहा की ठाकरे सरकार में सभी जाति धर्म के लोग सम्मान पूर्वक जीवन यापन कर रहे हैं,और यूपी के ही लोग वहां की अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ कर रहे हैं,और वहीं अपनी जीविका चला रहे हैं,यदि भाजपा सरकार यूपी की चाहती तो यहां के लोग रोजगार के लिए बाहर न जाते। उन्होंने कहा भाजपा किसान बेरोजगार की हितैषी नहीं है। चतुवेर्दी ने आरती कोल को 27फरवरी को चुनाव में सभी से करबद्ध निवेदन कर तीर कमान के निशान के सामने वाली बटन दबा कर भारी मतों से विजई बनाने की अपील किया। शिवसेना प्रत्याशी श्रीमती आरती कोल ने मंच पर रोते हुए कहा की में आप से वोट के साथ जीवन दान मांग रही हूं। उन्होंने कहा कि मेरे साथ भाजपा ने जो अन्याय और एक नारी की रुसवाई तथा अपमान किया है मेरा मेहनत ब्यार्थ किया है वह कभी भूल नहीं सकती। उन्होंने कहा कि आप सब से करबद्ध निवेदन है कि आप सब नारी के सम्मान में शिवसेना सम्मान में नारे को साकार करें और रावण रूपी लोगों का सर्वनाश करें। इसी प्रकार शिवसेना के धर्म मिश्रा,आनंद दुबे, उदयशंकर मिश्र, रंजय मिश्र, शैलेंद्र मिश्र, यश पांडेय, संदीप पाण्डेय, रत्नाकर पांडेय आदि ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन बी के सिंह ने किया और अध्यक्षता पूर्व जिला पंचायत सदस्य छोटेलाल कोल ने किया।

मतदाता सूची का वर्किंग सीट की तैयारी जोरों पर

अखंड भारत संदेश

मतदाता सूची का वर्किंग सीट तैयार करते कर्मचारी/अधिकारीगण

सोरांव। जैसे-जैसे विधान सभा चुनाव की तारीख नजदीक आ रही है। वैसे- वैसे चुनाव संबंधी अभिलेखीय कार्य जोरों पर चल रहा है। इसी को लेकर तहसील सोरांव अंतर्गत विधान सभा फाफामऊ(254) व सोरांव (255) की अभिलेखीय तैयारियां कानूनगो अपर्णा श्रीवास्तव व कानूनगो जय प्रकाश के देखरेख में संगम सभागार में युद्ध स्तर पर चल रही है।मिली जानकारी के अनुसार 17 फरवरी से 23 फरवरी तक तहसील अंतर्गत पांचों ब्लाकों सोरांव, मऊआइमा, होलागढ़, श्रींग्वेरपुर, तथा कौड़िहार के ग्राम विकास/पंचायत अधिकारियों सफाई कर्मचारियों लेखपालों आदि की ड्यूटी सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक मतदाता सूची की तैयारियों हेतु लगाई गई है। जिसमे सभी बूथ स्थलों के भागों की 10 सेट कापियां बनाई जा रही है। तथा चारों राजनीतिक पार्टियों की ज्यादातर कापियां बनाई जा चुकी है। वहीं पर ग्राम पंचायत अधिकारी अखिलेश कुमार का कहना है कि मतदान हमारे संवैधानिक और नैतिक अधिकारों की कड़ी में एक प्रमुख प्रक्रिया है। इसके चलते हम लोकतंत्र में अपने मनचाही सरकार और जनप्रतिनिधियों को चुनने का पावन कार्य करते हैं। आप सभी मतदाताओं को चाहिए कि अधिक से अधिक मतदान के प्रति अपने घर और पास पड़ोस के लोगों को जागरूक करें। इस मौके पर सुबह से शाम तक अपने कार्य का जिम्मेदारी से निर्वाहन करते सभी अधिकारी व कर्णचारीगण मौजूद हैं। इस मौके पर ग्राम पंचायत अधिकारी अन्नपूर्णा शुक्ला, ग्राम पंचायत अधिकारी रितुप्रिया संग मिलकेश कुमार,बनवारी लाल,शिव बहादुर, सुनील कुमार यादव,आनंद कुमार यादव,नरेश कुमार,प्रमोद कुमार गुप्ता,फूलचंद्र, धर्मेंद्र कुमार, जीतलाल संग सैकड़ों कर्मचारी व अधिकारी मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

सारे काम छोड़कर सबसे पहलें मतदान करें : इमरान खान

घूरपुर। मतदात लोकतंत्र का अभिन्न अंग होता हैं।छात्रों का यह नैतिक दायित्व भी हैं कि खुद मतदान करें इसके साथ ही समाज में नौजवान, किसान, कामगार सभी लोगों को मतदान के लिए प्रेरित करें इसके साथ ही दिव्यांग, असहाय, बुजुर्ग लोगों को पोलिंग बूथ पर लें जाकर मतदान करने में सहयोग करें उक्त बातें अध्ययन एकेडमी के निदेशक इमरान खान ने शुक्रवार को मतदाता जागरूकता अभियान में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहें थे आगे बोलते हुए उन्होंने यह भी कहा कि मतदान के दिन को अवकाश का दिन मानकर आराम नहीं करना चाहिए। शराब, भय, लोभ जाति धर्म से ऊपर उठकर मतदान के लिए प्रेरित किये। सारे काम छोड़कर सबसे पहलें मतदान करने की भी अपील इमरान खान ने छात्रों से किये । इस अवसर पर संयोजक अभिषेक सिंह पटेल ने मतदाता जागरूकता अभियान पर पत्रक, पोस्टर वितरित करके उपस्थित छात्र एवम छात्राओं को मतदान के लिए शपथ दिलवाये। इस दौरान अभिषेक सिंह पटेल ने मतदान के साथ जल संरक्षण, वृक्षारोपण, बेटी बचाओं एवम बेटी पढ़ाओं आदि सामाजिक विषयों पर जागरूक किया। उक्त कार्यक्रम में श्रद्धा, दीपक, रोशनी, रिया, पंकज तिवारी समेत संस्थान के अन्य विद्यार्थी मौजूद रहें।

अपहरण का अभियुक्त गिरफ्तार, नाबालिग बरामद

शंकरगढ़। शंकरगढ़ पुलिस ने नाबालिग के अपहरण के आरोपी को गिरफ्तार किया है। इसके साथ ही बहला-फुसलाकर भगाई गई किशोरी को भी बरामद कर लिया है। शंकरगढ़ थाना प्रभारी बृजेश सिंह ने बताया कि अपहृता को भगा ले जाने वाला अभियुक्त अनूप सेन उर्फ छोटाली पुत्र राजेश सेन उर्फ बल्लू (निवासी ग्राम सुरबल साहनी) पर विगत दिनों किशोरी को भगा ले जाने का आरोप लगा था। उक्त शिकायत के क्रम में धारा 363,366 3(2)5 एससी-एसटी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही थी।आज मुखबिर की सूचना पर शंकरगढ़ रेलवे स्टेशन से अभियुक्त अनूप सेन उर्फ छोटाली को गिरफ्तार कर किशोरी को सकुशल बरामद कर लिया गया। पुलिस टीम की इस सफलता में नारीबारी चौकी प्रभारी संतोष कुमार सिंह, कांस्टेबल रामअवध यादव महिला कांस्टेबल कीर्तिलता भी शामिल रहीं।

घनश्याम पांडेय के लिए पिता ने किया जनसंपर्क

प्रतापपुर। प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र से बसपा प्रत्याशी इंजीनियर घनश्याम पांडेय को विजयी बनाने हेतु उनके पिता राजनारायण पांडेय द्वारा क्षेत्र के चौका भूलेंद्र, मठोई, जंघई, पतवां, रस्तीपुर, सोरों, उग्रसेनपुर, जनुवाडीह, भोगवारा आदि गांवों में डोर टू डोर जनसंपर्क करके अपने पुत्र हेतु वोट देने के लिए अपील किया और प्रतापपुर से विधायक बनाने के लिए अनुरोध किया इस अवसर पर अभिषेक पांडेय, पप्पू पांडेय, अरविंद पांडेय, अशोक पांडेय, रजनीश पांडेय, अमलेश पांडेय, आनंद पांडेय, शौकत अली, रमाकांत दुबे सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

अम्बेडकर जयन्ती पर दिया जायेगा डा. अम्बेडकर समाज सेवा सम्मान व प्रबुद्ध गौतम बाल रंगमंच सम्मान

बहुजन समाज के अधिकारी व बाल कलाकार होंगे सम्मानित

प्रयागराज। आगामी 14 अप्रैल बाबासाहेब डा. भीमराव रामजी अम्बेडकर जयंती के पावन अवसर पर डा. अम्बेडकर वेलफेयर एसोसिएशन (दावा) और प्रबुद्ध फाउंडेशन द्वारा बाल कलाकारों व समाजसेवी अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्मानित किया जायेगा उक्त निर्णय शनिवार को दावा और प्रबुद्ध फाउंडेशन के अलोपीबाग स्थित कार्यालय पर प्रबंध कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता फाउंडेशन के प्रबन्धक/ सचिव उच्च न्यायालय के अधिवक्ता रंग निर्देशक रामबृज गौतम ने की। संयुक्त बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास हुआ कि अम्बेडकर जयंती के अवसर पर हाईकोर्ट स्थित डा. अम्बेडकर प्रतिमा स्थल पर आयोजित हो रहे डा. अम्बेडकर मेला में एक ओर जहां डा. अम्बेडकर वेलफेयर एसोसिएशन ((दावा) की ओर से जनपद हरदोई में तैनात उद्योग विभाग के डिप्टी कमिश्नर संजय कुमार, प्रयागराज के भूमि संरक्षण अधिकारी गौरव प्रकाश, असि. कमिश्नर वाणिज्य कर केदार नाथ व मिथलेश कुमार, लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता रामस्वरूप, सहायक अभियंता कामिनी कौशल, ज्योति प्रकाश सोनकर, विजय कुमार, जूनियर इंजीनियर सतीश चंद्र व मुन्ना कुमार तथा जल निगम के अधिशासी अभियंता नीरज कुमार, सहायक अभियंता ऋषिकेश कुमार, रंजीत कुमार तथा मोतीलाल नेहरू मेडिकल कालेज के डा. दिनेश कुमार को डा. अम्बेडकर समाज सेवा सम्मान- 2020 व 2021 दिया जायेगा तो वहीं दूसरी ओर प्रबुद्ध फाउंडेशन की ओर से बहुजन साहित्य कला और संस्कृति के साथ साथ बहुजन रंगमंच के संरक्षण संबर्धन व उसके विकास के साथ साथ उसके पुनरस्थापत्य के लिये सतत कार्य कर रहे बाल कलाकारों में प्रज्ञा गौतम, आंचल, रिया, प्रज्ञा रश्मि गौतम, उन्नति राज, पायल तथा इशान्त, श्रेष्ठ, शशि सिद्धार्थ व हर्षराज को प्रबुद्ध गौतम बाल रंगमंच सम्मान-2020 व 2021 प्रदान किया जाएगा। एक ओर जहां डा. अम्बेडकर समाज सेवा सम्मान-2020 व 2021 के लिये प्रत्येक अधिकारी को अंगवस्त्र व सम्मान पत्र दिया जाएगा तो वही प्रबुद्ध गौतम बाल रंगमंच सम्मान-2020 व 2021 के लिये प्रत्येक बाल कलाकारों को दो-दो हजार रुपये व सम्मान पत्र दिया जाएगा। कोविड-19 जैसी भयंकर महामारी के प्रकोप और लाकडाउन के चलते विगत दो वर्षों का सम्मान एक साथ दिया जाएगा।

अगर तुम हंस के बोलो तो सिकन्दर टूट जाता है...

अखंड भारत संदेश

कवियों के शब्द रंगों से सराबोर हुए श्रोता

करछना। क्षेत्र की लोंहदीं गांव में आयोजित सबरस कवि सम्मेलन में मंच पर पहुंचे कवियों ने शब्द रंगों की फुहार से श्रोताओं को सराबोर कर दिया। लोक कवि राम लोचन सांवरिया की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ कवि सुशील शुक्ल हर्ष की वाणीवंदना और आध्यात्मिक गीत के साथ हुआ। अपने धारदार संचालन के दौरान मुक्तक और छंन्दों के द्वारा हास्य कवि अशोक बेशरम ने श्रोताओं को जी भर गुदगुदाया। उन्होंने पढा:- अगर तुम हंस के बोलो तो सिकंदर टूट जाता है,उछलते ज्वार भाटो में समुंन्दर टूट जाता है।हमारी अपनी फितरत है,मेरा अपना तजुर्बा है कि शीशा तान के मारो तो पत्थर टूट जाता है। कृष्णकांत कामिल की गजल, उन्हीं के घरों में उजाला न होगा। चरागों को जिसने संभाला न होगा,खूब सराही गई। सबरेज इलाहाबादी ने वसन्ती गीत प्रस्तुत कर लोगों को खूब गुदगुदाया तो वही संजय पाण्डेय सरस ने,फिर वह वसन्त कब आएगा जैसे गीतों पर खूब तालियां बटोरी। बिपिन बिहारी त्रिपाठी की रचनाओं पर भी श्रोता देर रात तक लोटपोट होते रहे। अध्यक्षीय काव्य पाठ के दौरान नरिया होइ गइ नहर फलाने और भाइ रहे भइकरा होइ गए,बइरी के चउतरा होइ गए जैसी कविताओं द्वारा रामलोचन सांवरिया ने खूब वाहवाही लूटी। आयोजक कमलाशंकर त्रिपाठी ने कवियों के प्रति स्वागत आभार प्रकट करते हुए मंच पर सम्मानित किया इस मौके पर बड़ी संख्या में श्रोता जन मौजूद रहे।

शिवाजी महाराज की मनाई गई जयंती

सहसों। धर्म रक्षक, हिंदू हृदय सम्राट, अन्याय और अत्याचार के विरोध में लड़ने वाले पराक्रमी योद्धा एवं मराठा सम्राट छत्रपति शिवाजी महाराज की सहसों स्थित छत्रपति शिवाजी डिग्री कॉलेज के समय में शनिवार को वीर पुरुष छत्रपति शिवाजी की जयंती पर लोगों ने उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शत-शत नमन किया। इस अवसर पर कॉलेज के प्रबंधक अनिरुद्ध सिंह पटेल ने कहा महान शासक, प्रशासक,कुशल योद्धा छत्रपति शिवाजी को आज पूरा देश श्रद्धा के साथ नमन कर रहा है। माँ भवानी के उपासक, स्वराज्य के संस्थापक ,कुशल प्रशासक, मुगलों के क्रूरता हिंदू विरोधी शासन को उखाड़ फेकनेवाले महान छत्रपति शिवाजी महाराज जी की जयंती हम सब मिलकर उन्हें शत शत नमन करते हैं। मौके पर उपस्थित पूर्व जिला अध्यक्ष हौसला प्रसाद पाठक ने कहा शिवाजी महाराज 10 वर्ष की आयु से ही अपनी प्रतिभा के धनी शिवाजी महाराज ने दुश्मनों से लोहा मनवा रहे थे युवावस्था होते होते उन्होंने मुगलों के छक्के छुड़ाते हुए अखंड साम्राज्य की स्थापना की। इस अवसर पर,गोपीनाथ स्वर्णकार, पुष्पेंद्र सिंह, धर्मेंद्र सिंह, इंद्रभान सिंह आदि लोग उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

डीएम आवास के सामने से स्कूटी चोरी

प्रयागराज। खंड शिक्षा अधिकारी प्रज्ञा सिंह की ड्यूटी कार्मिक मतदान में बिशप जॉनसन स्कूल गर्ल्स विंग्स मे लगी थी। शनिवार को उन्होंने डीएम आवास के सामने पार्किंग फुटपाथ पर स्कूटी खड़ी की थी। शाम को लौटी तो पता चला कि स्कूटी चोरी हो गई है। हैरानी की बात यह है कि पुलिस से शिकायत करने पर पता चला कि कंट्रोल रूम का कैमरा बंद था। कर्नलगंज पुलिस मामले की जांच कर रही है।

भागवत कथा सुनने गए भक्त की बाइक चोरी

सहसों। थाना सराय इनायत के पुलिस चौकी सहसों क्षेत्र के निवासी एलआईसी अभिकर्ता शैलेंद्र सिंह सहसों बाजार में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा सुनने के लिए गए हुए थे। कथा के समापन के पश्चात घर जाने के लिए जैसे ही बाहर निकले तो देखा कि उनकी बाइक गायब थी। काफी खोजबीन के पश्चात बाइक न मिलने पर उन्होने सराय इनायत थाने में जाकर तहरीर दिया और उचित कार्यवाही की मांग की है।

छात्रों का आंदोलन एक दिन के लिए स्थगित

अखंड भारत संदेश

सोमवार को होगी कुलपति से वार्ता

ऑफलाइन परीक्षा का विरोध करते छात्र

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) में ऑनलाइन परीक्षाएं कराए जाने की मांग को लेकर तीसरे दिन भी धरना-प्रदर्शन जारी रहा। छात्रों ने शनिवार को कुलपति कार्यालय का घेराव किया।पांच घंटे तक चले घेराव के बाद शाम को आश्वासन मिला कि सोमवार तक इस मसले पर कुलपति की ओर से गठित कमेटी के सदस्य पांच छात्र प्रतिनिधियों से वार्ता करेंगे और कोई न कोई सकारात्मक हल निकाल लिया जाएगा, जिसके बाद छात्रों ने एक दिन के लिए आंदोलन स्थगित कर दिया। सोमवार को दोपहर 12 छात्र एक बार फिर कुलपति कार्यालय के बाहर इकट्ठा होंगेहालांकि, इविवि प्रशासन की ओर से निर्णय लिया जा चुका है कि अप्रैल में स्नातक द्वितीय एवं तृतीय वर्ष और मई में परास्नातक सम सेमेस्टर की ऑफलाइन परीक्षाएं आयोजित की जाएंगी।

कक्षाएं ऑनलाइन तो परीक्षा भी हो ऑनलाइन

विश्वविद्यालय में महीनों बाद ऑफलाइन कक्षाओं का भी नियमित संचालन शुरू किया जा चुका है। वहीं, छात्र मांग कर रहे हैं कि जब पूरे साल ऑनलाइन मोड में कक्षाओं का संचालन किया गया तो परीक्षाएं भी ऑनलाइन मोड में ही आयोजित की जानी चाहिए। इसी मुद्दे पर इविवि प्रशासन और छात्रों के बीच टकराव की स्थिति बनी हुई है।ऑनलाइन परीक्षाओं की मांग को लेकर छात्र लगातार तीन दिनों से विश्वविद्यालय परिसर में धरना दे रहे हैं। शनिवार दोपहर 12 बजे के आसपास विश्वविद्यालय परिसर के मेन गेट पर धरने पर बैठे छात्र कुलपति कार्यालय के सामने पहुंच गए और वहां धरना-प्रदर्शन शुरू कर दिया।

आज तय होंगे वार्ता में शामिल होने वाले छात्रों के नाम

कुलपति की ओर से गठित कमेटी के सदस्य सोमवार को पांच छात्र प्रतिनिधियों से वार्ता करने जा रहे हैं। इसके लिए रविवार को पांच छात्रों के नाम तय किए जाएंगे। आंदोलनकारी छात्र अपने बीच से ही किन्हीं पांच छात्रों को वार्ता के लिए नामित करेंगे।

प्रदर्शन के चलते कैंपस में फोर्स तैनात

इस दौरान धरना स्थल पर बड़ी संख्या में फोर्स तैनात कर दी गई। शाम पांच बजे के आसपास छात्रों के बीच पहुंचे चीफ प्रॉक्टर प्रो. हर्ष कुमार एवं रजिस्ट्रार प्रो. एनके शुक्ला ने छात्रों को बताया कि परीक्षाओं के मुद्दे पर जारी आंदोलन को गंभीरता से लेते हुए कुलपति ने मामले की जांच कर रिपोर्ट सौंपने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया है। शनिवार को उच्च स्तरीय कमेटी की पहली बैठक हुई है। इस बैठक में ऑफलाइन शिक्षण और प्रस्तावित परीक्षा कार्यक्त्रस्म के सभी पहलुओं का विश्लेषण किया गया। कमेटी ने 21 फरवरी को दोपहर दे बजे विज्ञान संकाय के डीन के कार्यालय में आंदोलनकारी छात्रों के पांच प्रतिनिधियों से मुलाकात कर उनकी शिकायत सुनने का निर्णय लिया है।इस आश्वासन के बाद छात्रों ने एक दिन के लिए आंदोलन स्थगित करने और सोमवार को कुलपति कार्यालय के बाहर फिर से इकट्ठा होने का निर्णय लिया। इस मौके पर छात्र नेता सुनील केसरवानी, नवनीत यादव, अभिषेक द्विवेदी, हरिओम यादव, सत्यम कुशवाहा, मसूद अंसारी, मनजीट पटेल आदि मौजूद रहे।

पीड़ित 12 साल बाद पारित आदेश को धारा 372 में नहीं दे सकता चुनौती : हाईकोर्ट

प्रयागराज। उच्च न्यायालय ने अपने एक अहम फैसले में कहा है कि सीआरपीसी की धारा 372 के तहत 2009 के बाद पारित आदेशों के खिलाफ याचिका दाखिल की जा सकती है, उसके पहले के पारित आदेशों के खिलाफ नहीं। अगर 2009 के बाद दाखिल की जाती है तो वह परिसीमा अधिनियम की धारा पांच के तहत पोषणीय होगी।यह आदेश न्यायमूर्ति विवेक कुमार बिरला और न्यायमूर्ति मोहम्मद असलम ने देवरिया जिले के विसुनपूरा थाने के तूफानी की अपील को खारिज करते हुए दिया है।पीठ ने कहा कि सीआरपीसी की धारा 372 के प्रावधान में कहा गया है कि पीड़ित को अदालत द्वारा पारित किसी भी आदेश के खिलाफ अपील दायर करने का अधिकार है। जिसमें आरोपी को बरी कर दिया गया है, कम अपराध के लिए दोषी ठहराया गया है या अपर्याप्त मुआवजा लगाया गया है।हाईकोर्ट ने याची के मामले में पाया कि देवरिया की सत्र न्यायालय की ओर से 2002 में आदेश पारित किया गया था, जिसमें अभियुक्तों को बरी कर दिया गया था।अब इसमें सवाल यह खड़ा हुआ कि क्या 31 दिसंबर 2009 से पहले जारी किए गए बरी करने के आदेश के खिलाफ अपील दायर की जा सकती है। जब धारा 372 का प्रावधान प्रभावी हो गया था। कोर्ट ने पाया कि मामले में अपील 5172 दिन के बाद दाखिल की गई। तूफानी ने अपनी अपील में निचली अदालत केफैसले को चुनौती दी थी।

केवल राज्य सरकार दाखिल कर सकती थी अपील

हाईकोर्ट ने कहा कि याची के पक्ष में वैधानिक अधिकार 31 दिसंबर 2009 को सीआरपीसी की धारा 372 में संशोधन द्वारा प्रदान किया गया था और उस संशोधन से पहले केवल राज्य सरकार अपील दायर कर सकती थी। याची एक आपराधिक पुनर्विचार याचिका दायर करके निर्णय को चुनौती दे सकता था लेकिन याची की ओर से ऐसा नहीं किया गया। हाईकोर्ट ने कहा कि ऐसा कोई विशेष प्रावधान नहीं है कि धारा 372 सीआरपीसी का प्रावधान पूर्वव्यापी (पूर्व के मामलों में भी लागू होना) प्रकृति का है। इस प्रकार कोर्ट ने कहा अपील पोषणीय नहीं है। कोर्ट ने याचिका को खारिज कर दिया।

नौकरी दिलाने के नाम पर एक करोड़ 37 लाख ठगे, सात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज

प्रयागराज। हाईकोर्ट में नौकरी दिलाने के नाम पर ठगों के एक गिरोह ने एक करोड़ 37 लाख रुपये ठग लिए। ठगों ने तमाम पदों के लिए पांच अलग अलग लोगों से कई बार में एक करोड़ रुपये लिए। कई साल बीत जाने के बाद भी न नौकरी मिली न ही ठगों ने रुपये लौटाए। कैंट थाने में सात लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। एजी आफिस से सेवानिवृत्त राम जतन मंडेला राजापुर के रहने वाले हैं। रामजतन और उनके साथी धर्मराज अपने अपने बेटों को सरकारी नौकरी दिलाने लिए काफी परेशान थे। 2017 में एजी आफिस के पास उनकी मुलाकात राघवेंद्र सिंह से हुई। उनके साथ कई लोग थे।उन लोगों ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट के निदेर्शानुसार इलाहाबाद हाईकोर्ट और अधीनस्थ अदालतों में विभिन्न पदों पर नियुक्तियां होनी हैं। उन लोगों ने एक जज की फोटो लगी एक गोपनीय आदेश भी दिखाया।

ठगों ने बताए अलग-अलग रेट

रामजतन और धर्मराज को लगा कि अब उनका काम हो जाएगा। ठगों ने दोनों की मुलाकात शमीम सिद्दीकी नाम के शख्स से कराई। शमीम के बारे में बताया कि वह डिप्टी रजिस्ट्रार है। भर्ती प्रक्रिया शमीम ही देखते हैं। ठगों ने तमाम पदों के लिए अलग अलग रेट बताए। रामजतन और धर्मराज ने अपना फंड निकाल लिया। खेत बेच दिया।कई दोस्तों से रुपये उधार लिए। इसी दौरान धर्मराज से तीन और लोगों ने नौकरी दिलाने को कहा। उन लोगों को ठगों से मिलवाया गया। 2017 में ही धर्मराज के बेटे कृष्ण प्रताप को सहायक निबंधक बनाने के लिए 40 लाख, राम जतन के बेटे योगेंद्र प्रताप को महानिबंधक बनाने के लिए 40 लाख, गोंडा के विकास सिंह को प्रशासनिक अधिकारी बनाने के लिए 20 लाख, सुनील सिंह को सहायक समीक्षा अधिकारी बनाने के लिए साढ़े आठ लाख और संजय सिंह को अनुभाग अधिकारी बनाने के लिए 29 लाख रुपए लिए गए। ठगों ने इसके बाद बहाना बनाना शुरू कर दिया।कहा एक जज नाराज हो गए हैं। इसलिए भर्तियां रुकी हैं। समय बीतता गया। बाद में कहा कि सोरांव में जमीन दे देंगे लेकिन न जमीन दी न रुपये वापस किए। काफी प्रयास के बाद 11 फरवरी को शमीम सिद्दीकी, राघवेंद्र सिंह, अलीम, सैफ, गौस, कैफ, शाहिद अली और एक अज्ञात के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली गई। राम जतन मंडेला समेत पांच अलग अलग लोगों के एक करोड़ 37 लाख ठगने वाले आरोपियों ने ठगी कर कई बंगले खड़े कर लिए हैं। उनके पास कई लक्जरी गाड़ियां भी हैं। राम जतन ने एफआईआर में लिखवाया है कि गिरोह के लोग वर्षों से जालसाजी में लिप्त हैं।

मैजिक की टक्कर से साइकिल सवार श्रमिक की मौत

प्रयागराज। सहसों हनुमानगंज मार्ग पर अनियंत्रित मैजिक वाहन की टक्कर से साइकिल सवार युवक की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजकर अज्ञात मैजिक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की। कटियारी चकिया निवासी गणेश गुप्ता (33) श्रमिक था। शनिवार शाम वह साइकिल से गोतावा गांव अपने परिचित के यहां शादी में जा रहा था। बहादुरपुर गांव के सामने पीछे से आ रहे तेज रफ़्तार मैजिक वाहन ने गणेश को टक्कर मार दी। वह सड़क पर गिरा तो वाहन उसे कुचलते हुए निकल गया। मौत की खबर परिजनों को हुई तो घर में कोहराम मच गया। गणेश की पत्नी शोभा का रो-रो कर बुरा हाल है। गणेश के तीन बच्चे हैं। गणेश इकलौता कमाने वाला था।

नाले में मिला शव बेली के युवक का

प्रयागराज। राजापुर में शनिवार को नाले में मिला शव बेली कॉलोनी के मो. शाहरुख (35) की थी। शनिवार को पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे उसके परिजनों ने शव की पहचान की। पुलिस को बताया कि चार फरवरी को वह घर से साइकिल से निकला था, लेकिन उसके बाद से पता नहीं चला। डूबने से उसकी मौत हुई थी।

अतरसुइया के गोल पार्क इलाके में बदमाशों ने की लूटपाट, सीसीटीवी कैमरे में हुए कैद

अखंड भारत संदेश

जांच पड़ताल करती पुलिस

कैमरे में कैद शातिर बदमाश

प्रयागराज। अतरसुइया क्षेत्र में बेखौफ बदमाशों ने शनिवार शाम भाजपा नेता कारोबारी नरेश कुंद्रा के दफ्तर में घुसकर पौने दो लाख रुपये लूट लिया। विरोध की कोशिश पर तमंचे से फायरिंग की और धमकी देते हुए भाग निकले। सरेशाम वारदात से इलाके में सनसनी फैल गई। एसपी सिटी, सीओ समेत कई थाने की फोर्स और क्राइम ब्रांच की टीम मौके पर पहुंची। छानबीन की बाद सीसीटीवी फुटेज के आधार पर नकाबपोश लुटेरों की तलाश चल रही है।मीरापुर तिकोनिया पार्क के पास तीन मंजिला मकान में नरेश कुंद्रा और उनके भाई योगेश कुंद्रा परिवार के साथ रहते हैं। वह अलग-अलग कंपनियों की बिस्कुट, नमकीन व दूसरे खाद्य पदार्थ की सप्लाई करते हैं। उनकी फर्म कुंद्रा एजेंसी के नाम से है, जिसका दफ्तर मकान के भूतल पर है। नरेश भाजपा के पूर्व महानगर उपाध्यक्ष रह चुके हैं। बताया जाता है कि शाम करीब छह बजे दफ्तर में मैनेजर शशि शेखर उपाध्याय, कंप्यूटर आपरेटर रजत, इरशाद व वीरेंद्र अपना-अपना काम कर रहे थे। इसी दौरान बाइक सवार दो नकाबपोश बदमाश भीतर दाखिल हुए फिर एक ने मैनेजर को गन प्वाइंट पर लेकर कुर्सी से उठा दिया। दूसरा कैश बाक्स से पैसा निकालकर अपनी शर्ट के भीतर डालने लगा। असलहे से लैस बदमाशों को देख दूसरे कर्मचारी भागते हुए विरोध का प्रयास किया तो फायरिंग कर दी। इससे खलबली मच गई।योगेश ने बदमाशों का पकड़ने का प्रयास किया तो उन पर तमंचा तान दिया और फिर बाइक लेकर सदियापुर की तरफ भाग निकले। दुस्साहसिक अंदाज में हुई घटना से इलाके में सनसनी फैल गई। थोड़ी ही देर में एसपी सिटी दिनेश कुमार सिंह समेत कई थाने की पुलिस मौके पर पहुंच गई। फुटेज से पता चला है कि बदमाशों ने कार्यालय के बाहर कुछ देर तक सिगरेट पीते हुए रेकी की थी। फिर लूट की वारदात को अंजाम दिया। नरेश ने बताया कि एक लाख 75 हजार रुपये बदमाश ले गए हैं।

कछारी इलाके की 'पारो' करती है मदहोश

(सुनील गिरि)

आगामी दिनों में विधानसभा का चुनाव व होली का है त्यौहार, कछारी इलाकों में धधक रही है अवैध शराब की भट्ठिया

फाइल फोटो

प्रयागराज। जैसी उम्र वैसा प्याला, वक्त के साथ इनसे अच्छा भला कौन समझेगा। आगामी दिनों में विधानसभा चुनाव के तहत प्रयागराज में 27 फरवरी को मतदान होना तय हैं। साथ ही इसके बाद होली का त्यौहार भी है। चुनाव व होली दोनों का मौसम है और अपना पाला मजबूत करने के लिए कुछ चीज सबसे ज्यादा सुलभ रही है। वह है कच्ची शराब। यमुनापार के कछारी इलाकों में अंगूरी का नशा सिर चढ़कर बोलती है। कोशिश यही रहती है कि हर तबके, हर उम्र के लोग इसे चखें, अंगूरी की कैटेगरी दिन में पीने के लिए अलग और रात के लिए अलग। नैनी कोतवाली क्षेत्र के तहत अरैल, बसवार समेत कई अन्य स्थानों पर वहीं औद्योगिक क्षेत्र के लवायन कला, मवैया सहित कई क्षेत्रों में जाइए कुछ इस प्रकार कानों में बार-बार सुनाई पड़ते हैं। एक बार की सुनने पर तो एक ऐसी महिला या पुरुष के नाम लगेंगे, लेकिन हकीकत में इसका संबंध देसी यानी की कच्ची शराब से है। पीने वालों की जैसे दिन फिर गए हों। आगामी दिनों में चुनाव और होली दोनों सिर पर चढ़ कर बोलने वाला है। पीने वालों के दिन अभी से ही फिर गए हैं। लुका छुपी यह सब करने का प्रयास किया जा रहा है। जो सब जानते हैं कि यह गैर वाजिब है। फिर ठेठ गंवई इलाकों में सूरा मतदाताओं को अभी से लुभाने के लिए प्रयास जारी है और एक मजबूत जरिया बनता जा रहा है। पुलिस को चकमा देने के लिए अवैध शराब कारोबारियों ने तो देसी शराब के नामकरण तक कर डाले हैं। अब गौर करें 'पारो' पर यह हल्की शराब शुरूर देती है। इसी तरह 'मदहोश' भी है। लोग कहते हैं कि से पीकर कोई बहकता नहीं है और रात के लिए थोड़ा कसैला स्वाद यहां जरूरी हो जाता है। इसके लिए 'टार्जन' और रात कली है। आगामी चुनाव में प्रत्याशियों की नजर उन युवा बुजुर्ग मतदाताओं पर अधिक होती है। इसमें कई ऐसे हैं, जिन्हें सुरूर के लिए 'असला' है। वह हल्की मानी जाती है। होली और चुनाव में कितनी अहमियत रखता है। यह यहां आकर पता चलता है।

भक्त की निष्छल भावना निर्गुण निराकार ब्रह्म को सगुण साकार बना देती है : पं निर्मल कुमार शुक्ल

पसना। वैसे तो वेदों में परमात्मा को अज अनादि अव्यक्त अगोचर मन बुद्धि से परे और कण कण मे व्यापक तथा जगत का नियंता कहा गया है।यह सारा जगत उन्ही परमात्मा की इच्छा मात्र से प्रकट होता है वह सब के पिता हैं इसीलए उन्हें जगत्पिता कहा जाता है किन्तु वही निर्गुण निराकार ब्रह्म भक्तों के श्रृद्धा और विश्वास से परवश होकर सगुण साकार रूप धारण कर लेता है।उक्त उद्गार पं रामरक्षा मिश्र लौवा कोन के निवास पर भागवत महापुराण कथा के चतुर्थ दिवस मानस महारथी पं निर्मल कुमार शुक्ल ने विशाल जनसमूह को भाव विभोर करते हुए व्यक्त किया।आपने कहा कि महाराज नंद और यशोदा इनका जीवन इतन सरल और परमार्थ से परिपूर्ण था कि भगवान बालकृष्ण स्वयं चलकर उनकी गोद में आ गये।आज तक यही मान्यता रही है कि भगवान को जाग कर पाया जाता है।जो सोवत हैं वो खोवत हैं जो जागत हैं वो पावत है लेकिन यशोदा ने यह सिद्धांत ही बदल दिया वो तो तान दुपट्टा सो रही हैं और परमात्मा स्वयं रो रो कर उन्हें जगा रहा है। दूसरी बात बड़े बड़े संत महात्मा राजा महराजा अपना घर बार छोड़कर जंगल की गुफाओं में शरीर को तपस्या से सुखाते हैं तक भगवान मिलते हैं लेकिन यहां तो नंद यशोदा एक कदम भी कहीं नहीं उठाए परमात्मा स्वयं बिन बुलाए मेहमान जैसा चल कर आ गया।इसका कारण यह है कि यहां पति नंद है जो दूसरे को आनंद दे वह नंद और जो लोगों को यश दे वह यशोदा अगर पति पत्नी समाज को यश और आनंद देने लगें तो उन्हें भगवान को ढूंढने नहीं जाना पड़ेगा बल्कि भगवान स्वयं उन्हे खोजते हुए आ जाएंगे। आध्यात्मिक दृष्टि से साधक का शुद्ध मन ही मथुरा है जहां परमात्मा का जन्म होता है और गो याने इंद्रियों का समूह ही गोकुल है मन से निकाल कर समस्त इन्द्रियों तक भगवान को पहुंचा देना ही कृष्ण का गोकुल प्रस्थान है।इससे पूर्व आज समुद्र मंथन वामन अवतार मोहिनी अवतार कच्छप अवतार तथा राम जन्म की मनोहारी कथा सुना कर विद्वान वक्ता ने सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कृष्ण जन्मोत्सव पर बहुत सुन्दर झांकी निकाली गई वसुदेव यशोदा और बाल कृष्ण का दिव्य दर्शन करके सारे श्रोता झूम उठे।कल भगवान कृष्ण की बाल लीला ऊखल बंधन गो चारण काली मद मर्दन और गोवर्धन पूजा की कथा संपन्न होगी । यजमान राम रक्षा मिश्र और जमुना प्रसाद मिश्र ने सभी श्रोताओं से अधिकाधिक संख्या में कथा श्रवण करने का आग्रह किया है।

10 मार्च को अखिलेश यादव की अगुवाई में बनने जा रही सपा की सरकारः रेवती रमण

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। उत्तर प्रदेश में हुए दो चरण के चुनावों के बाद तस्वीर पूरी तरह से साफ हो गई है। सूबे की जनता ने सत्ताधारी भाजपा को पूरी तरह से नकार दिया है और आगामी दस मार्च को अखिलेश यादव की अगुवाई में फिर से समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने जा रही है। यह बातें कुंवर रेवतीरमण सिंह ने कही।

बारा से सपा प्रत्याशी अजय भारती उर्फ मुन्ना के समर्थन में शिवराजपुर के केशव वाटिका में आयोजित कार्यक्रम के संबोधित करते हुए राज्यसभा सांसद ने कहा कि दो चरण के चुनावों में 75 से 80 सीट सपा गठबंधन को मिलने जा रही है। कहा कि मोदी और योगी सरकार की तानाशाही और दमनकारी नीतियों से समाज का हर वर्ग ऊब गया है।सांसद ने कहा कि कब तक किसान, व्यापारी और बेरोजगारों की भावनाओं से खेला जाएगा। अभी तक न तो काला धन लौटा, न किसानों आय दोगुनी हुई और न ही बेरोजगारों को रोजी-रोटी मिली। खेती-किसानी से लेकर रोजमर्रा की वस्तुएं महंगी होती जार ही हैं। और, मौजूदा सरकार जुमलेबाजी में व्यस्त है।राज्यसभा सांसद ने कहा कि अखिलेश यादव की सरकार बनते ही 300 यूनिट मुफ्त बिजली, गरीब महिलाओं को 15 सौ रुपये समाजवादी पेंशन, हर माह राशन निशुल्क दिया जाएगा। कार्यक्रम में सपा के बारा विधानसभा प्रत्याशी अजय भारती उर्फ मुन्ना भइया ने कहा कि परिवर्तन का समय चल रहा है, कुछ ही दिन शेष बचे हैं। आप लोग वोट देकर सपा की सरकार बनाएं। सपा की सरकार बनने के बाद हर छोटी-बड़ी समस्याओं का समाधान किया जाएगा। अध्यक्षता रामलालक मिश्र और संचालन कामद प्रताप सिंह ने किया। इस मौके पर एमएलसी वासुदेव यादव, ब्लाक प्रमुख इंद्रनाथ मिश्र, द्वारिका सिंह पटेल, सूर्य निधान पांडेय, रतन केसरवानी, सत्यभामा मिश्रा, अरविंद कुमार मिश्रा, सचिन वैश्य, सौरभ श्रीवास्तव, अनुज मिश्रा, रंगीले मिश्रा, नरेंद्र शुक्ल, प्रमोद शुक्ल, गुलाब कली, महीप सिंह, पंचेश्वर त्रिपाठी, जोरवट प्रधान फैजान अहमद, शिवनारायण सिंह, वजीर खान, मुलायम सिंह यादव, अनीश खान, रामपाल मीडिया प्रभारी शैलेंद्र सिंह समेत सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

विकास कार्यों को गिनाकर बसपा प्रत्याशी ने मांगा समर्थन

बसपा प्रत्याशी डा.अजय कुमार ने किया क्षेत्रभ्रमण, कहा - चुनाव जीतने पर शीघ्र करवाए जाएंगे अवशेष विकास कार्य

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। बहुजन समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी विधायक डा. अजय कुमार के आने से अन्य दलों के प्रत्याशियों की नींद हराम हो गई है। कुछ दिन पहले तक बारा विधानसभा क्षेत्र में जहां लड़ाई सिर्फ भाजपा और सपा की दिख रही थी, वहीं अब बसपा प्रत्याशी डा. अजय कुमार के आने से लड़ाई त्रिकोणीय हो गई है। बसपा प्रत्याशी ने कहा कि उन्होंने अपने कार्यकाल में क्षेत्र के विकास में अनगिनत कार्य करवाए। भाजपा से बसपा का दामन थामने के बाद क्षेत्र की जनता का डा. अजय कुमार भारती को जनता का अपार समर्थन मिल रहा है, जिसकी वजह से अन्य पार्टियों के उम्मीदवारों को शिकस्त देकर विधानसभा में उन्हें तीसरी बार जाने का मौका मिल सकता है। 264 बारा विधानसभा सुरक्षित सीट होने की वजह से डा. अजय कुमार भारती का सामना मौजूदा भाजपा व अपना दल (एस) के संयुक्त प्रत्याशी वाचस्पति तथा समाजवादी पार्टी प्रत्याशी अजय भारती मुन्ना से सीधा मुकाबला प्रतीत हो रहा है। जिससे चुनावी दंगल त्रिकोणीय होता दिख रहा है। डॉ अजय कुमार का मानना है कि विधानसभा में बहुजन समाजवादी पार्टी का वोट व खुद के वोट से 264 बारा विधानसभा चुनाव 2022 में भारी बहुमत से जीत दिलाते हुए कामयाबी उनके कदम चूमेगी। मौजूदा समय में क्षेत्र की तमाम बिरादरी व सामाजिक संस्थाओं का डॉक्टर अजय कुमार को भरपूर समर्थन व सहयोग मिल रहा है। डा. अजय कुमार ने जनसंपर्क के दौरान बताया कि उनकी जीत सुनिश्चित है। मौजूदा विधायक रहते हुए क्षेत्र में बिजली, पानी, जर्जर, सडक, स्कूल, स्वास्थ्य आदि समस्याओं से जनता जूझ रही थी जिसे मैंने अपने कार्यकाल में विकास का कार्य किया है क्षेत्र की समस्याओं का जो भी कार्य समय अभाव रहने के कारण शेष रह गया है, उसे आने वाले समय में पूरा किया जाएगा। डा. अजय कुमार ने कहा कि इस बार कराए गए विकास कार्य के मुद्दे को लेकर फिर से जनता के बीच चुनावी समर में उतरे हैं। डा. अजय कुमार ने 264 बारा विधानसभा की जनता से अपील की है कि आगामी 27 फरवरी 2022 को बहुजन समाजवादी पार्टी के चुनाव निशान हाथी के बटन को दबाकर भारी मतों से विजई बनाते हुए विधानसभा भेजने का कार्य करें।

रामकृपाल कोल की जीत सुनिश्चित : बबलू शुक्ल

कोरांव। कांग्रेस प्रत्यासी रामकृपाल कोल की जीत सुनिश्चित है। उक्त बातें कांग्रेस लीडर जिला प्रभारी आनंद प्रकाश शुक्ल उर्फ बबलू शुक्ल ने प्रेस प्रतिनिधि से वार्ता के दौरान कही। उक्त बातें पार्टी कार्यालय पर श्री शुक्ल ने कहा कि सारे वर्ग का इस बार वोट रामकृपाल को वोट मिल रहा है। ब्राह्मण समाज में भी इस बार कांग्रेस प्रत्यासी को मात्र कैंडिडेट के नाम पर वोट मिल रहा है। प्रियंका गांधी के समर्थन में वचूर्वाल मीटिंग से कार्यकताओं का मतदाताओं का उत्साह बढ़ा है। पूर्व विधायक प्रत्यासी कांग्रेस रामकृपाल कोल ने कहा की इस बार भारी संख्या में सर्व समाज का वोट मिल रहा है। उन्होंने कहा कि किसानों बेरोजगारों के हितार्थ कांग्रेस बहुत ही आवश्यक है। मौर्य रामनारायण ने कहा की मेरा समाज बहुतायत में रामकृपाल कोल के साथ है। क्योंकि मेरे वर्ग के लोग तथा अन्य जाति के लोग व्यक्तिगत संबंधों और कैंडिडेट के नाम पर कांग्रेस की नीतियों के आधार पर एवं जिताऊ सपा का उम्मीदवार होते हुए टिकट काट दिए जाने के कारण जनाधार बढ़ता जा रहा है। पूर्व जिला।पंचायत सदस्य रोहिणी पाल ने बताया कि बसपा प्रत्यासी द्वारा धनगर समाज का विरोध किया गया था जिस कारण हम लोग सिर्फ रामकृपाल कोल पूर्व विधायक के साथ निष्ठा से हैं। आशाराम मिस्त्र कांग्रेस ब्लॉक कमेटी के अध्यक्ष ने कहा कि मेरा ब्राह्मण समाज इस कांग्रेस प्रत्यासी रामकृपाल कोल को जिताने जा रहा है। इसकी वजह ये है कि कोलो का जनमत सर्वाधिक रामकृपाल के साथ है। इस लिए जीत की ओर अग्रसर वाले उम्मीदवार की ओर जाना चाहिए।

पनासा में चुनावी रैली को संबोधित किया सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह

करछना। विधानसभा करछना 260 के अंतर्गत सपा प्रत्याशी कुंवर उज्जवल रमण सिंह के समर्थन में राज्यसभा सपा सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह ने करछना विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत पनासा में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए बीजेपी सरकार को आड़े हाथों लिया और कहा कि महंगाई से जनता त्रस्त आ चुकी है और बीजेपी सरकार को बदलने का जनता ने मन बना लिया है अपने चुनावी जनसभा में सांसद रेवती रमण सिंह ने बीजेपी पर करारा प्रहार करते हुए कहा कि किसानों की फसल आवारा पशु सब बर्बाद कर रहे हैं महंगाई चरम सीमा पर है बेरोजगारी का आलम बहुत बड़ा है जिससे किसान नौजवान इस बार सपा सरकार बनाने का मन बना लिया है उन्होंने सपा प्रत्याशी कुंवर उज्जवल रमण के भारी मतों से विजई बनाने की अपील की इस मौके पर ब्लाक प्रमुख करछना श्रीमती सरोज कमलेश द्विवेदी पूर्व ब्लाक प्रमुख विजय राज सिंह प्रधान मेडरा अखिलेश प्रताप सिंह पूर्व प्रधान मेडरा संतोष पांडे जिला पंचायत सदस्य डॉ विजय यादव, पिंटू सिंह प्रधान गधियाव, विकास पाण्डेय, पूर्व प्रमुख रंग बहादुर सिंह, शिव गणेश पटेल प्रधान हथसरा दूध नाथ यादव, हंस राज सिंह, सहित बड़ी संख्या में प्रधान एवं सैकड़ों समर्थक मौजूद रहे।

राजनैतिक धुरंधरों का इनके क्षेत्रों में प्रभुत्व कम करना आसान नहीं

एक सप्ताह बचे हैं मतदान में, एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं विपक्षी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कुण्डा, रामपुरखास व पट्टी राजनैतिक धुरंधरों का क्षेत्र है। कुण्डा में 1993 से राजा भइया का एकछत्र राज्य है तो रामपुर खास में 1980 से लेकर आज तक चाहे जो लहर रही हो, कांग्रेस के प्रमोद तिवारी ने ही परचम लहराया है। पट्टी में प्रदेश सरकार के वरिष्ठ मंत्री राजेन्द्र प्रताप सिंह मोती सिंह की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई है।

उनके समर्थन में केन्द्र सरकार के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह 20 फरवरी को पट्टी आ रहे हैं। बताया जाता है कि इन तीनों धुरंधरों के विरुद्ध इस बार प्रत्याशी एड़ी-चोटी का जोर लगाकर ताल ठोंक रहे हैं लेकिन राजनैतिक प्रेक्षकों का कहना है कि तीनों धुरंधर अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी पकड़ ढीली नहीं करना चाहते हैं, इसलिये अभी तो यह

प्रमोद तिवारी।

राजा भइया।

मोती सिंह।

कहना जल्दबाजी होगी कि विरोधी कितना भी दम लगा लें, इन मजबूत किलों में सेंध लगा पाना आसान नहीं है। कुण्डा में राजा भइया पहले निर्दलीय लड़कर जीते और अब जनसत्ता लोकतांत्रिक पार्टी बनाकर चुनाव लड़ रहे हैं। कुण्डा में उनके खिलाफ उनका ही पुराना शागिर्द गुलशन यादव समाजवादी पार्टी से तथा शिव प्रकाश सेनानी की पत्नी सिंधुजा मिश्रा भाजपा से चुनाव लड़ रही हैं। इसी प्रकार रामपुर खास में कांग्रेस के धुरंधर नेता प्रमोद तिवारी की बेटी आराधना मिश्र मोना तीसरी बार चुनाव मैदान में हैं। इस क्षेत्र में समाजवादी पार्टी ने अपना प्रत्याशी न उतारकर परोक्ष रुप से कांग्रेस के साथ खड़ी है। इसके अलावा प्रमोद तिवारी का क्षेत्र में पकड़ तो मजबूत है ही, सपा का समर्थन मिल जाने से उनकी स्थिति और मजबूत हो गई है।

उनके खिलाफ भाजपा में पुराने प्रतिद्धन्दी नागेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ छोटे सरकार तथा बसपा ने प्रत्याशी उतारा है जो पूरी ताकत से दम भर रहे हैं। इसी प्रकार पट्टी से प्रदेश सरकार के वरिष्ठ मंत्री राजेन्द्र प्रताप सिह मोती सिंह फिर भाजपा से प्रत्याशी हैं। इनका मुकाबला पुराने प्रतिद्वन्दी सपा के राम सिंह पटेल से, बसपा के फूलचंद्र तिवारी से व कांग्रेस की महिला प्रत्याशी से है। वैसे चर्चा है कि पट्टी क्षेत्र में मुख्य लड़ाई भाजपा व सपा में है। भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में केन्द्र सरकार के वरिष्ठ मंत्री राजनाथ सिंह 20 फरवरी को आ रहे हैं। देखना है कि इन तीनों राजनैतिक महारथी अपना-अपना प्रभुत्व 10 मार्च को भी बनाये रख पाते हैं या नहीं? यहां 27 फरवरी को मतदान है। एक सप्ताह बाद जिले के सभी सातों विधान सभा के प्रत्याशियों का भाग्य ईवीएम में कैद हो जाएगा जो 10 मार्च को खुलेगा।

भाजपा के विजय अभियान में सहभागी बनें मतदाता : धीरज

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रानीगंज विधानसभा क्षेत्र से विधायक/भाजपा प्रत्याशी अभय कुमार उर्फ धीरज ओझा ने मतदाता संपर्क अभियान के तहत देवगढ़, पूरे बसहू, रामनगर, टिकैता, शेखूपुर समेत कई गांवों में डोर टू डोर संपर्क कर जन आशीर्वाद प्राप्त किया। तत्पश्चात भगवतगंज, जामताली, बसहा व बीरापुर में आयोजित सभाओं में प्रतिभाग के दौरान स्थानीय प्रबुद्ध मतदाताओं से भाजपा के विजय अभियान में सहभागी बनने की अपील करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी व मुख्यमंत्री योगी की प्रेरणा से रानीगंज के समग्र विकास की कड़ी में न केवल 1100 करोड़ की विकास परियोजनाओं के क्रियान्वयन के साथ जन कल्याण में समर्पित रहा। उन्होंने आगे कहा कि रानीगंज विधानसभा क्षेत्र के विकास को देखते हुए जनता भाजपा और उनके साथ खुलकर खड़ी है जिसके बल पर इस बार फिर भाजपा को प्रचण्ड विजय मिलेगी। इस दौरान राजेश शुक्ल, संजय मिश्रा, संतोष पाण्डेय, सतीश पाण्डेय, विक्रम सिंग, सुनील मौर्या इत्यादि उपस्थित रहे।

रानीगंज के कई गांवों में विधायक ने किया जनसम्पर्क

विधायक धीरज ओझा का स्वागत करते कार्यकर्ता।

परियावां बाजार में पूर्व ब्लाक प्रमुख ने किया जनसंपर्क

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। कालाकांकर पूर्व ब्लाक प्रमुख बीएन सिंह ने शनिवार को बाबागंज विधान सभा के मुरस्सापुर, परियावां, अन्सारगंज में अपने ब्लाक अध्यक्ष संजय त्रिपाठी ,प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी, योगेंद्र सिंह, अनिल मौर्य गुड्डू ओझा, मनोज सिंह पिन्टू सिंह, सुरेश यादव सहित दर्जनों कार्यकर्ताओ के साथ पैदल जनसंपर्क किया और जनसत्तादल पार्टी के बाबागंज विधायक विनोद सरोज पर अपना मतदान करने की अपील किया। जनसंपर्क के दौरान सभी ब्यापारी भाइयों से शत प्रतिशत मतदान में हिस्सा लेने के लिए भी जोर दिया।

विधायक पर टिप्पणी को लेकर दो के खिलाफ केस, एक धराया

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जिले की रामपुर खास की विधायक एवं सीएलपी नेता आराधना मिश्रा मोना के खिलाफ सोशल मीडिया पर अमर्यादित एवं आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर पुलिस ने दो आरोपियो के खिलाफ केस दर्ज किया है। वहीं पुलिस ने एक आरोपी को हिरासत में लिया है। ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने शुक्रवार को पुलिस को विधायक मोना के खिलाफ टिप्पणी को लेकर तहरीर सौंपी। चुनाव के समय क्षेत्रीय विधायक को लेकर सोशल मीडिया पर टिप्पणी देख पुलिस के भी हाथ पांव फूल उठे। आननफानन मे अधिवक्ता ज्ञानप्रकाश की तहरीर पर पुलिस ने केस दर्ज किया है। अधिवक्ता ने दी गई तहरीर मे कहा है कि कोतवाली के कैथौला गांव निवासी पंकज सिंह उर्फ अभय प्रताप सिंह पुत्र शारदाशरण सिंह ने एक अन्य आरोपी रायपुर तियाई निवासी भोले सिंह विसेन के साथ साजिश कर फेसबुक पर क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के खिलाफ अभद्र टिप्पणी की। तहरीर मे कहा गया है कि अभद्र टिप्पणी को लेकर कार्यकताओं के साथ क्षेत्रीय लोगों मे भी आक्रोश उत्पन्न हुआ है। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी पंकज सिंह उर्फ अभय प्रताप तथा रायपुर तियाई निवासी भोले सिंह विसेन के खिलाफ कई गंभीर धाराओं के साथ सरसठ आईटी एक्ट का भी केस दर्ज किया है। पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद आरोपी पंकज सिंह को दबिश देकर धर दबोचा।

कांग्रेस ने प्रदान की युवा शक्ति को संवैधानिक महत्वता: मोना

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। रामपुर खास की कांग्रेस विधायक आराधना मिश्रा मोना के शनिवार को स्थानीय नगर पंचायत की बाजार मे हुए जनसम्पर्क किया। पद यात्रा में विधायक के साथ तहसील छोर से अस्पताल छोर तक हुजूम का नजारा खुद आराधना मिश्रा मोना को अचरज मे डाले दिखा।

इस दौरान छात्राओं ने विधायक मोना के साथ फोटो खिंचवायी। विधायक आराधना मिश्रा ने व्यापारियों तथा अधिवक्ताओं व प्रबुद्ध वर्ग के साथ आम लोगों से क्षेत्रीय विकास की मजबूती में समर्थन का आहवान किया। इसके पहले विधायक मोना ने सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी के साथ कैम्प कार्यालय पर महिलाओं तथा युवाओं से संवाद करते हुए क्षेत्र के बहुमुखी विकास की निरंतरता बनाये रखने का आहवान किया। महिला कांग्रेस तथा युवक कांग्रेस द्वारा आयोजित अलग अलग सम्मेलनों मे विधायक आराधना मिश्रा मोना ने महिला शक्ति को राष्ट्रीय शक्ति करार दिया। उन्होंने कहा कि देश व समाज के नवनिर्माण के लिए कांग्रेस ने युवा शक्ति को संवैधानिक महत्वता प्रदान की। इस दौरान विधायक मोना ने चैक स्थित इंदिरा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण भी किया। इस मौके पर डा. पूर्णिमा मिश्रा, डा. ऋचासुकुमार, शालिनी मिश्रा, साधना गौतम, गीता सिंह, श्वेता शुक्ला, शिवांगी सिंह, पूनम द्विवेदी, किरन पटेल, शबनम बानो, गौरव मिश्र, बेलाल रहमानी, खुर्शीद शेख, पूजा मिश्रा, निशा मिश्रा आदि रहे।

नगर पंचायत की बाजार में महिलाओं के साथ मोना ने निकाली पदयात्रा

पद यात्रा में विधायक मोना का स्वागत करती छात्राएं।

भाजपा के अहंकार के खिलाफ यूपी की जनता में है गुस्सा : प्रमोद तिवारी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी ने केन्द्र की मोदी सरकार पर मंहगाई तथा बेरोजगारी को लेकर अभी भी अहंकार मे बने रहने का तीखा तंज कसा है। वहीं सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने छुटटा जानवर तथा खाद व बीज एवं गृहस्थी के सामानो मे मंहगाई समेत कई मुददों पर योगी सरकार पर विफलता का आरोप लगाते हुए कहा है कि सरकार के कुप्रबंधन से यूपी की व्यवस्था चैपट हो उठी है। लखनऊ व कानपुर तथा रायबरेली मे पार्टी चुनाव प्रचार से वापस लौटे प्रमोद तिवारी ने शनिवार को यहां मीडिया से कहा कि प्रदेश की जनता केंद्र एवं राज्य की भाजपा सरकार से हर मोर्चे पर छल को लेकर त्रस्त नजर आ रही है। उन्होनें कहा कि दावा किया कि मंहगाई तथा कानून व्यवस्था के मोर्चे पर विफल योगी सरकार को सत्ता से बेदखल करने को लेकर उनके चुनाव प्रचार मे जनता का रूझान साफ नजर आया है। इस दौरान प्रमुख अमित सिंह, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल भी मौजूद रहे।

रंगोली प्रतियोगिता में डायट पहला व पीबीपीजी कालेज को मिला दूसरा स्थान

शत-प्रतिशत मतदान के लिये जीआईसी में हुई रंगोली प्रतियोगिता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उप शिक्षा निदेशक एवं डायट प्राचार्य मोहम्मद इब्राहिम के सौजन्य से जनपद मुख्यालय जीआईसी प्रतापगढ़ के मैदान में एक जनपद स्तरीय भव्य रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके माध्यम से आगामी 27 फरवरी को होने वाले विधानसभा चुनाव में शत प्रतिशत मतदान के लिए लोगों को जागरूक किया गया।

इसमें जनपद के सभी डीएलएड बीटीसी एवं बीएड महाविद्यालय के प्रशिक्षु छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया। रंगोली प्रतियोगिता में समस्त बनाई गई रंगोली का निरीक्षण मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया ने किया और उन्होंने मतदाता जागरूकता के लिए बनाई गई रंगोली की भूरी भूरी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम मतदान के दिन धर्म, वर्ग, जाति, भाषा एवं संप्रदाय से ऊपर उठकर अवश्य मतदान करें। इस दिन को हम महापर्व के रूप में मनाएं।

इसी के साथ उन्होंने मतदाता जागरूकता के लिए लगाए गए हस्ताक्षर अभियान मे अपने हस्ताक्षर करके उसे प्रारंभ किया और उसे गति प्रदान की। इस अवसर पर उनके साथ उप शिक्षा निदेशक एवं प्राचार्य डायट मोहम्मद इब्राहिम एवं स्वीप के नोडल अधिकारी एवं जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदानंद साथ रहे। इस अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता के सम्मानित निर्णायक मंडल के रूप में इनाडु प्रसाद सह जिला विद्यालय निरीक्षक, राजकुमार सिंह प्रधानाचार्य राजकीय इंटर कॉलेज एवं सीमा गौतम नगर शिक्षा अधिकारी रहे। प्रतियोगिता में डायट अतरसंड प्रतापगढ़ प्रथम स्थान पर रहा। दूसरे स्थान पर पीबीपीजी कॉलेज प्रतापगढ़ रहा और तीसरे स्थान पर डॉक्टर जय मंगल सिंह शिक्षा संस्थान भुपियामऊ रहा। इस अवसर पर मतदाता जागरूकता सदर के विधानसभा स्तरीय नोडल अधिकारी डॉ मोहम्मद अनीस, राकेश कनौजिया, फिरोज अहमद, विशाखा श्रीवास्तव, सिम्मी सिंह, धर्मेंद्र कुमार ओझा, कुमारी नूर फातिमा, अजीत सिंह, अरविंद सरोज, संजय पांडे, विजय कुमार, शिक्षा यादव, अन्नपूर्णा यादव, शिव बहादुर, आलोक सिंह आदि उपस्थित रहे।

जीआईसी में आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में शामिल छात्र-छात्राएं।

106 दिव्यांग/80 वर्ष के अधिक मतदाता घर पर करेंगे मतदान

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल ने बताया है कि विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 में निर्वाचन आयोग द्वारा दी गयी व्यवस्था के क्रम में एवीएससी एवं एवीपीडी मतदाताओं को डाक मतपत्र के माध्यम से घर पर ही मतदान कराया जायेगा। उन्होने बताया है कि जो दिव्यांग एवं 80 वर्ष के अधिक के मतदाता मतदान केन्द्र पर आने में असमर्थ है जिन्होंने फार्म 12डी भर कर आवेदन किया है ऐसे मतदाताओं का मतदान कराया जायेगा। उन्होने बताया है कि 20 फरवरी को 106 दिव्यांग/80 वर्ष के अधिक मतदाताओं का मतदान विधानसभा क्षेत्र अन्तर्गत घर पर ही कराया जायेगा। उन्होने बताया है कि विधानसभा क्षेत्र प्रतापगढ़ के 15, रामपुरखास के 06, बाबागंज (अ0जा0) के 13, पट्टी के 15, विश्वनाथगंज के 13 व रानीगंज विधानसभा क्षेत्र के 44 दिव्यांग/80 वर्ष से अधिक मतदाताओं का मतदान घर पर कराया जायेगा।

दौड़ में अजीत कुमार व हैमर थ्रो में आकांक्षा सिंह रही अव्वल

पीजी कालेज में दो दिवसीय खेल कूद प्रतियोगिता हुई सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मदन मोहन मालवीय पीजी कॉलेज कालाकांकर में दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 62 छात्र तथा 55 छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता का शुभारम्भ कालाकांकर राज भवन के प्रबंधक डा0 घनश्याम यादव व महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ शिवम श्रीवास्तव ने किया। इस प्रतियोगिता के समापन समारोह के मुख्य अतिथि कालाकांकर के युवराज प्रख्यात सिंह थे। इन्होंने विजयी छात्र छात्राओं को पुरस्कृत किया और इनका मनोबल बढ़ाया। आकांक्षा सिंह हैमर थ्रो में प्रथम 800 मीटर मे अजीत कुमार यादव प्रथम, 1500 मीटर मे अजीत कुमार प्रथम 400 मीटर मे देवेंद्र यादव प्रथम जेवलिन थ्रो मे देवेंद्र यादव प्रथम 100 मीटर एवं 200 मीटर मे अमित पाल प्रथम रहे। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी शिक्षक डॉ सूर्यभान सिंह, डॉ प्रदीप सिंह, डॉ इंदुरेखा सिंह, डॉ रेखा सिंह, डॉ शिव भूषण गुप्ता, डॉ विनीता सिंह, डॉ रामकरण, भूपेश सिंह, सृष्टि कुशवाहा एवम महाविद्यालय के स्पोर्ट्स फैकल्टी के शिक्षक एस. पी चैहान आदि मौजूद रहे। महाविद्यालय के प्राचार्य ने सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त किया और प्रतिभागियों को भविष्य निर्माण हेतु प्रोत्साहित किया। इन्होंने चैंपियन छात्र छात्राओं को विशेष रूप से पुरस्कृत किया। खेलकूद में चैम्पियन आकांक्षा सिंह व देवेन्द्र यादव रहे।

छात्र को पुरस्कृत करते प्राचार्य डा0 शिवम श्रीवास्तव।

ओटीपी पूछकर कर क्रेडिट कार्ड से उड़ाए 70 हजार

पट्टी, प्रतापगढ़। क्रेडिट कार्ड को ब्लॉक कराने के लिए कस्टमर केयर पर फोन करने पर ओटीपी पूछ कर ग्राहक के खाते से उचक्के ने 70 हजार रुपये निकाल लिया। पीड़ित ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आवश्यक कार्रवाई की मांग की है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के अशोकपुर गांव के रहने वाला शिवम पांडे पुत्र केशवराम ने बताया कि शुक्रवार को वह अपने क्रेडिट कार्ड को ब्लॉक कराने के लिए कस्टमर केयर पर बात किया तो उसे एक ऐप डाउनलोड करने के लिए कहा गया ऐसा करने के उपरांत उससे ओटीपी पूछ कर उसके खाते से तीन बार में कुल 70 हजार रुपये निकाल लिया जिससे उसके होश उड़ गए। शनिवार को पट्टी कोतवाली पहुंचकर उसने इस संबंध में पट्टी पुलिस को आवश्यक कार्यवाही करने के लिए तहरीर दिया है।

सपा जिलाध्यक्ष छविनाथ रिहा होने पर पहुंचे कुंडा, हुआ स्वागत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विपक्षियों की साजिश व फर्जी मुकदमे में एक साल से अधिक समय से जेल में बंद सपा जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव शनिवार को जेल से रिहा होने के बाद लंबे वाहन के काफिले के साथ कुंडा नगर पहुंचे। उनके कुण्डा नगर पहुंचने पर सपा कार्यकताओं व नगरवासियों ने गगनभेदी नारे के साथ फूल मालाओं से लादकर जोरदार स्वागत किया। इस दौरान छविनाथ यादव ने कहा कि आज हम अपने परिवार के बीच में पहुंचे हैं। जिस प्रकार से बेटा मां के आंचल की छांव में बैठकर आनंद की अनुभूति की पराकाष्ठा को प्राप्त करता है, उसी प्रकार आज हम अपनों के बीच आनंदित हो रहे हैं। बता दें कि छविनाथ यादव के भाई गुलशन यादव कुंडा विधानसभा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी हैं। उनके चुनाव कार्यालय पर थोड़ी देर रुकने के बाद अपने सहयोगियों के साथ शेखपुर, डीहा, पुरनेमऊ, मोहद्दीनगर होते हुए बाबा होदेश्वर नाथ धाम पहुंच कर माथा टेका।

चार आरोपियों के खिलाफ मारपीट व धमकी का केस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने चार आरोपियो के खिलाफ जमीनी विवाद को लेकर मारपीट व गालीगलौज तथा धमकी का केस दर्ज किया है। कोतवाली के बेलखरियन का पुरवा सगरा सुंदरपुर निवासी अरविंद कुमार पुत्र बृजलाल शर्मा ने दी गई तहरीर मे कहा है कि सत्रह फरवरी की रात नौ बजे विपक्षियो ने उसे लाठी डंडे से मारापीटा। जमीनी विवाद मे गांव के राजकुमार पुत्र कालीदीन सूरज व बुल्ले पुत्रगण राजकुमार व राजकुमार की पत्नी ने दरवाजे पर पहुंचकर मारपीट की। शोर मचाने पर आरोपियों ने पीड़ित को गाली देते हुए जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने शुक्रवार की रात आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

तेज रफ्तार ट्रक ने अधिवक्ता को कुचला, मौके पर हुई मौत

जेठवारा मोहनगंज मार्ग पर लोगों ने लगाया जाम

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। शनिवार की सुबह थाना क्षेत्र के देवापुर निवासी हाई कोर्ट प्रयागराज के अधिवक्ता अनवर (30) वर्ष पुत्र रुकनुद्दीन जेठवारा मोहनगंज मुख्य मार्ग के किनारे मॉर्निंग वॉक कर रहे थे। इसी बीच जेठवारा की ओर से आ रही तेज रफ्तार बालू लदी ओवर लोड ट्रक उसे कुचलते हुए मुख्य मार्ग पर ही पलट गयी। घटना से घबराया चालक ट्रक छोड़कर मौके से भाग निकला।अधिवक्ता की मौत की खबर मिलते ही परिजनों समेत गांव के तमाम लोगो की भीड़ जमा हो गयी। शव को क्षत विक्षत स्थिति में देख परिजनों में कोहराम मच गया। दर्दनाक घटना के बाद जहाँ मुख्य मार्ग पर जाम लग गया, वहीं विलम्ब से मौके पर पहुँची पुलिस के प्रति भी लोगो मे नाराजगी दिखी।

फिलहाल पुलिस ने जेसीबी मशीन मंगाकर किसी तरह रास्ते को बहाल कराया औ? लाश कब्जे में लेकर पीएम को भेज दिया। बता दें कि शासन के शख्त निर्देश के बाद भी जेठवारा थाना क्षेत्र में बालू लदी ओबर लोड ट्रके फरार्टे भर रही हैं और पुलिस मौन बनी रहती है। लोगों का कहना है कि यदि जेठवारा पुलिस सचेत होती तो अधिवक्ता की जान बच सकती थी। बताते हैं कि थाने के करीब मान्धाता मोड़ व पैट्रोल पंप के समीप प्रति दिन ओवर लोड बालू लदी ट्रको की मंडी सजती है जिन्हें पुलिसिया परमिट प्राप्त है। पुलिस के इस रवैये से नियम कानून की धज्जियां उड़ रही है।

जमीनी विवाद में आरोपियों ने दी जान से मारने की धमकी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। मकान बन जाने के बाद दो मकान के बीच में खाली जगह के स्वामित्व को लेकर हुए विवाद के मामले में आरोपियो ने एक परिवार को जमकर गाली-गलौज किया और जान से मारने की धमकी दिया। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के शुभवा गांव के रहने वाले नंदलाल पुत्र बंशीलाल ने बताया कि उसके घर के बीच में खाली जगह उसकी जमीन का हिस्सा है लेकिन पड़ोसी आरोपीगढ़ शनिवार को उसी जमीन पर अवैध निर्माण करने लगे प्रार्थी ने विरोध किया तो सभी आरोपी एकजुट होकर गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित ने डायल 112 को फोन करके सूचना दी तब हमलावर पीछे हुए पीड़ित ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर उचित कार्रवाई की मांग की है।

गोली का जवाब गोले से देने का फैसला भाजपा ने किया : कैलाश विजयवर्गीय

रीता बहुगुणा जोशी ने कहा कि केवल हमारी सरकार ही राष्ट्र को मजबूत बना सकती है, जय परशुराम जय श्री राम के नारों से गूंज उठा प्रबुद्ध वर्ग संवाद

अखंड भारत संदेश

प्रबुद्ध वर्ग के सम्मेलन में उमड़ी भीड़ और उपस्थित लोगों को संबोधित करते डिप्टी सीएम

कौशाम्बी। विधानसभा सिराथू के कड़ा मंडल के दारानगर स्थित एक कॉलेज में भाजपा से सिराथू प्रत्याशी डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के समर्थन में भाजपा प्रबुद्ध वर्ग संबाद में भाजपा महासचिव कैलाश विजयवर्गीय और उत्तर प्रदेश सरकार की मंत्री रीता बहुगुणा जोशी ने भीड़ को संबोधित किया कार्यक्रम स्थल जय परशुराम जय श्री राम के नारों से गूंज उठा लोगों ने नारों के साथ विजयवर्गीय और रीता बहुगुणा जोशी का स्वागत किया

लोग सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांगते हैं

महासचिव कैलाश विजय वर्गीय ने कहा कि देश में मोदी हटाओ अभियान चल रहा है आपको उससे बचकर केशव और कमल को चुनना है वर्गीय बोले कि पहले देश की सीमा पर गोली चलाने के लिए दिल्ली से पूछना पड़ता था लेकिन अब गोली का जवाब गोले से देने का फैसला भाजपा सरकार ने किया है। विपक्ष को निशाना बनाते हुए वर्गीय बोले लोग सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांगते हैं जबकि सैनिक हमारे लिए साधु-सन्यासी के समान हैं। महासचिव ने कहा कि राम भक्तों पर गोली चलाने वाले अब इस राम मंदिर से अच्छा मंदिर बनाने की बात कर रहे हैं। इस मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए विजय वर्गीय ने कहा कि प्रबुद्ध वर्ग से समाज में असर और प्रभाव है इसलिए लोगों और समाज में भाजपा जैसे ज्योति का दीपक जलाते रहे। और आप सब प्रबुद्ध जन के दर्शन से महाकाल के दर्शन हो गए। साथ ही जनसंख्या नियंत्रण कानून का भी जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि आप सब के सहयोग से ही यह कानून लागू हो पाएगा।

केवल हमारी सरकार ही राष्ट्र को मजबूत बना सकती है

मंच पर आते ही ब्राम्हणों की प्रशंसा करते हुए कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि ब्राह्मण समाज ने लोगों को सत्ता में बैठाया है कभी किसी चीज का लोभ नहीं किया। मंत्री रीता बहुगुणा जोशी ने कहा कि केवल हमारी सरकार ही राष्ट्र को मजबूत बना सकती है, हमारी संस्कृति बचा सकती है और हमें सुरक्षा प्रदान कर सकती है। केशव प्रसाद मौर्य की तारीफ करते हुए रीता बहुगुणा जोशी ने कहा कि ऐसे मौके बार-बार नहीं आते आपने पहले भी मुख्यमंत्री दिया है अब उपमुख्यमंत्री केशव मौर्य को नहीं खोना है। मंत्री रीता जोशी ने कहा कि अगर आपको केशव मौर्य को खोजना है तो किसी गली नुक्कड़ में नहीं विकास की डोर में खोजो जरूर मिलेंगे।

त्रिदेव संगम में पवित्र डुबकी लगाने पहुंचे यूपी के डिप्टी सीएम केशव मौर्य

इससे पहले यूपी के डिप्टी सीएम और विधानसभा सिराथू से भाजपा प्रत्याशी केशव मौर्य शनिवार को अपने विधानसभा के कड़ा मंडल के त्रिदेव संगम में पहुंचे?। डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने यूथ अध्यक्ष, महामंत्री और प्रभारियों से मिलकर त्रिदेव संगम पर कड़ा मंडल के गांधी मेमोरियल इंटर कॉलेज में जनसभा को संबोधित किया।

सिराथू की जीत के लिए मैं पूरी तरह से आश्वस्त- केशव मौर्य

जनसभा को संबोधित करते हुए केशव मौर्य ने कहा कि मेरी इस अत्यधिक व्यस्तता में भी जो आप लोग हनुमान जी की शक्तिशाली सेना की तरह निस्वार्थ काम कर रहे हैं इसलिए ही सिराथू की जीत के लिए मैं पूरी तरह से आश्वस्त हूं डिप्टी सीएम ने विपक्ष पर हमला करते हुए कहा कि पिछले 2 चरणों में जो मतदान हुआ है उसमें साइकिल उड़कर सैफई चली गई है साथ ही उन्होंने कहा कि जैसे सिराथू में सपा बसपा और कांग्रेस का कोई अता पता नहीं है वैसे ही पूरे प्रदेश में भी इन सबका कोई अता पता नहीं है। केशव मौर्य ने डबल इंजन को माध्यम बताते हुए कहा कि जब डबल इंजन की सरकार नहीं थी तो लोगों की जमीने कब्जा होती थी और पूरी तरह गुंडाराज था लेकिन अब न ऐसा हुआ है और न होगा। साथ ही भू माफियाओं को सावधान करते हुए उन्होंने कहा कि अगर कोई अवैध कब्जा करता है तो उसे खाली कराकर गरीबों को मकान और बच्चों के स्कूल का निर्माण किया जाएगा। डिप्टी सीएम ने कार्यकताओं को आश्वस्त करते हुए कहा कि आप लोग जो जनता से वादा करेंगे वो वादा आपका नहीं केशव प्रसाद मौर्य का वादा होगा साथ ही योजनाओं को बताते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता को किसी भी योजना से वंचित नहीं रखा जाएगा।

केशव बोले- पहले बिजली आती नहीं थी और अब जाती नहीं है

संकल्प पत्र में लिखे संकल्पों को बताते हुए केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि 10 मार्च के बाद पार्टी जीतते ही आप लोगों को सिंचाई का बिल नहीं देना होगा और साथ ही होली और दिवाली पर एक-एक सैलेंडर सरकार की तरफ से मुफ्त देने का ऐलान भी किया।

योजनाओं और उपलब्धियों की हुई बौछार

कसिया के मतदाता सम्मेलन में पहुंचे भाजपा राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय और साथ ही कड़ा मंडल की जनसभा को डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने किया संबोधित। लोगों ने भारत माता की जय और जय श्रीराम के नारे से सभी का स्वागत किया।

न्यूज झरोखा

निमंत्रण से घर लौट रहा युवक हुआ हादसे का शिकार

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के नगर पंचायत अझुवा में बीती रात एक युवक हादसे का शिकार हो गया जिसे एम्बुलेंस कर्मियों ने अस्पताल मे भर्ती कराया है। जानकारी के अनुसार कुलदीप सिंह उम्र लगभग 22 वर्ष पुत्र सुरेश निवासी सलेमपुर गोली अमाव जिला फतेहपुर बीती देर शाम निमंत्रण करने गया था वापस घर जाते समय भोला चौराहा अझुवा के पास राष्ट्रीय राजमार्ग बेकर पर मोटर साइकिल सहित अनियंत्रित होकर वह सड़क पर घसीट गया जिससे बाइक सवार गम्भीर घायल हो गया मौके पर पहुंचे लोगों ने एम्बुलेंस के माध्यम से उसे इस्माइल पुर सीएचसी भेज दिया गम्भीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने घायल को जिला अस्पताल रिफर कर दिया जहां उसका उपचार चल रहा है। वहीं लोगों ने बताया कि युवक जमकर नशा किये हुए था।

प्रत्याशी के कार्यालय में प्रेक्षक ने मारा छापा

अझुवा कौशाम्बी। विधानसभा चुनाव 2022 में विधानसभा सिराथू से भाजपा प्रत्याशी डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के केंद्रीय कार्यालय में चुनाव प्रेक्षक अरविंद और पुलिस टीम ने शुक्रवार को अचानक छापा मारा है विपक्षी दल के नेताओं द्वारा डिप्टी सीएम के कार्यालय में आपत्तिजनक सामग्री की शिकायत की गई थी लेकिन प्रेक्षक के छापे के दौरान डिप्टी सीएम के कार्यालय में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं मिला है जिससे विपक्षी दलों के मुंह पर एक बार फिर जोरदार तमाचा पड़ा है।

प्राथमिक विद्यालय मे नही आया दो महीने से सफाई कर्मी

इमामगंज कौशाम्बी। मूरतगंज ब्लाक के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय जोत खातून में सफाई कर्मी दो महीने से नहीं आया जिसमें स्कूल मे काफी गंदगी हो गई है प्रधानाध्यापक ने बताया कि सफाई कर्मी 2 महीने से सरकारी स्कूल में सफाई करने नहीं आया औ? हम सफाई कर्मी को बुलाए थे लेकिन सफाई करने के लिए वह तैयार नहीं है स्कूल में सफाई ना होने के कारण बच्चों को तरह-तरह की बीमारियां का कारण गन्दगी बन सकता है सफाई कर्मी के मनमानी से स्कूल की सफाई व्यवस्था चौपट है लेकिन ग्राम प्रधान भी सफाई कर्मी पर अंकुश नहीं लगा सके हैं शिक्षक और छात्रों ने जिला पंचायत राज अधिकारी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए सफाई कर्मी पर कार्यवाही करते हुए स्कूल की सफाई व्यवस्था सुनिश्चित कराए जाने की मांग की है।

पांच दिवसीय स्काउट और गाइड का प्रशिक्षण शिविर संपन्न

कौशाम्बी। टीआरएस कॉलेज आफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी जयंतीपुर नेवादा में स्काउट और गाइड का पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर शुक्रवार को संपन्न हुआ बीएड छात्र अध्यापक छात्रा अध्यापकों का पांच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण का समापन शुक्रवार को हुआ जिसमें प्रशिक्षणार्थियों को शिविर संचालक श्यामबाबू यादव जिला संगठन कमिश्नर कौशांबी व वंदना कुशवाहा ने सीमित संसाधनों में टेंट लगाकर साज सज्जा कर बिना बर्तन के भोजन पका कर किसी परिस्थितियों में बचे रहने के उपाय व ध्वज शिष्टाचार प्राथमिक चिकित्सा गांठे बंधन, दिशा का ज्ञान सिटी के संकेत खोज के चिन्ह आदि की जानकारी दी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि टीआरएस कॉलेज के प्राचार्य रविंद्र सिंह ने टेंट कैंप का निरीक्षण किया।

बालू कारोबारी के कर्मी की बाइक छीन ले गए लुटेरे

कौशांबी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के मायाराम पुरवा में भरवारी के बाइक एजेंसी मालिक का बालू डम्प का कारोबार है इस बालू डम्प के कारोबार में चरवा थाना क्षेत्र के अमनी लोकीपुर गांव निवासी राम विश्राम पुत्र रामदास कर्मचारी के पद पर कार्यरत है प्रतिदिन की तरह राम विश्राम बालू डम्प में काम करने के बाद पुरखास बाजार सौदा खरीदने गए थे पुरखास बाजार में उनकी बाइक छीन कर लुटेरे फरार हो गए हैं घटना शुक्रवार की देर शाम की है मामले की सूचना पीड़ित ने सराय अकिल पुलिस को दी है।

झांसा देकर शिक्षक दंपति ने हड़पा साढ़े तीन लाख

पुलिस अधीक्षक से शिकायत कर पीड़ित ने मुकदमा दर्ज कराए जाने की मांग की

कौशाम्बी। कड़ा विकास खंड के प्राथमिक स्कूल में तैनात एक शिक्षक दंपति ने वजहा निवासी राजकुमार पांडेय से साढ़े तीन लाख रुपए की ठगी कर ली है मामले की शिकायत पीड़ित परिजनों ने पुलिस से करते हुए शिक्षक दंपति पर मुकदमा दर्ज कराए जाने की मांग की है। कोखराज थाना क्षेत्र के बजहा मंदिर कॉलोनी के पास रहने वाले शिक्षक कुलदीप साहू ने बजहा निवासी राजकुमार पांडेय को झांसे में लेकर साढ़े तीन लाख रुपए की रकम ठग लिया है शिक्षक दंपत्ति कुलदीप साहू ने राजकुमार को बताया कि उन्होंने इलाहाबाद में एक मकान खरीदा है रकम कम पड़ गई है जिससे उनके सामने दिक्कत है और उन्हें उधार रुपया दे दिया जाए जिससे मकान खरीदने में होने वाली दिक्कत दूर हो जाए। बताते चलें कि कड़ा विकासखंड में तैनात शिक्षक दंपत्ति सिकंदरपुर बजहा कोखराज क्षेत्र में रहते हैं पड़ोसी के चलते राजकुमार पांडेय ने कुलदीप साहू शिक्षक दंपति का भरोसा कर लिया और बैंक खाते से साढ़े तीन लाख रुपए उनके कहने पर शिक्षक दंपति कुलदीप साहू और उनकी बहन के बैंक खाते में ट्रांसफर कर दिया रकम मिलने के बाद शिक्षक दंपति की नियत खराब हो गई और वापस करने में आनाकानी करने लगे सामाजिक दबाव के बाद दंपत्ति ने साढ़े तीन लाख रुपए चेक से रकम राजकुमार को दिया लेकिन उसके बाद शिक्षक दंपति के बैंक खाते में रकम शेष ना होने से चेक क्लियर नहीं हो सकी और डिसऑनर हो गई जिस पर राजकुमार पांडेय ने शिक्षक दंपत्ति कुलदीप साहू से अपने रकम की मांग की जिस पर शिक्षक दंपत्ति ने उनके साथ गाली-गलौज कर अभद्रता की है जिससे आक्रोशित राजकुमार पांडेय ने पुलिस अधीक्षक को पत्र देकर शिक्षक दंपति पर मुकदमा दर्ज कराए जाने और साढ़े तीन लाख रुपये की रकम वापस कराए जाने की मांग की है।

विधानसभा सिराथू के ग्राम पंचायत सैनी के गेस्ट हाउस में संपन्न हुआ प्रभावी मतदाता सम्मेलन

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि पूरा सिराथू हमारे साथ है इसलिए सिराथू से भाजपा की जीत तय है

अखंड भारत संदेश

मतदाता सम्मेलन में उपस्थित जनता को संबोधित करते डिप्टी सीएम

अझुवा कौशाम्बी। सिराथू विधानसभा क्षेत्र के सैनी स्थित एक गेस्ट हाउस में प्रभावी मतदाता सम्मेलन का आयोजन भारतीय जनता पार्टी द्वारा किया गया कार्यक्रम में प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य मौजूद रहे। इस दौरान कार्यकताओं में सिराथू व केशव प्रसाद मौर्य के प्रति काफी उत्साह दिखा और लोग बहुत सक्रिय दिखे। मतदाता सम्मेलन बैठक में डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि पूरा सिराथू हमारे साथ है इसलिए सिराथू से भाजपा की जीत तय है। केशव मौर्य ने कहा कि वर्ष 2022 तक सभी लाभार्थियों को आवास का लक्ष्य पूरा होगा और हमारी सरकार ने प्रदेश के सभी लाभार्थियों को शौचालय दिया है जिससे महिलाओं को इज्जत और सम्मान मिला है। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि जिन लोगों ने कभी गैस के सपने नहीं देखे थे उन्हें हमारी सरकार ने उज्जवला योजना के अंतर्गत गैस चूल्हा भी दिया है केशव मौर्य बोले कि मैं सिराथू का नेता नहीं सिराथू का बेटा हूं भाजपा कार्यकताओं ने भी डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य को विधानसभा सिराथू से प्रदेश की सबसे बड़ी जीत दिलाने का संकल्प लिया सैनी में आयोजित प्रभावी मतदाता सम्मेलन में भाजपा मंडल अध्यक्ष कमलेश निषाद, मंडल उपाध्यक्ष रमाशंकर जिला पंचायत सदस्य सुनीता रणविजय साथ ही जगन्नाथ व अजय सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

कार्यकताओं का मान सम्मान हित है सर्वोपरि : केशव प्रसाद मौर्य

बूथ अध्यक्ष बूथ महामंत्री बूथ प्रभारी के साथ त्रिदेव संगम का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

त्रिदेव संगम में डिप्टी सीएम का सम्मान करते पार्टी जन

अझुवा कौशाम्बी। भारतीय जनता पार्टी अपना दल (एस) निषादराज पार्टी के विधानसभा सिराथू से संयुक्त प्रत्यासी उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने गांधी मेमोरियल इंटर कालेज दारानगर में कड़ा मंडल के बूथ अध्यक्षों, बूथ महामंत्री बूथ प्रभारी के साथ त्रिदेव संगम कार्यक्रम में पहुंचे जहां कार्यकताओं पदाधिकारियों को सम्बोधित कर उनका उत्साह बढ़ाया है। उपस्थित भीड़ को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि कार्यकताओं का मान सम्मान मेरे लिए सर्वोपरि है जब कार्यकताओं ने 2012 में कमल खिला दिया यह तो 2022 है कार्य कर्ता खुद चुनाव लड़ रहा है ऐसा विश्वास है पिछले दो चरणों के चुनाव में साइकिल उड़कर सैफई चली गयी है चुनाव में सपा बहुजन समाजपार्टी,कांग्रेस का आता पता नही है डबल इंजन की सरकार में गुंडागर्दी, अवैध कब्जा पर नकेल लगाई गई है उन्होंने कहा कि जो जमीन भूमाफियाओं ने कब्जा कर रखी है उसे भी खाली कराया जाएगा 10 मार्च के बाद बहुत कार्य होने हैं जिसकी चर्चा हमने पिछले दिनों हुई 8 स्थानों पर जनसभा के दौरान कहा है। संकल्प पत्र की याद दिलाते हुए डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि हमारी सरकार गरीबों को समर्पित सरकार हैं जो योजनाएं चल रही है वह तो चल ही रही है सपा बसपा की सरकार में 300 रुपए पेंशन मिलता था अब 1000 रुपए पेंशन मिलता है सरकार बनने के बाद पेंशन 1500 रुपए की जाएगी गांव देहात में जरूरतमंदों को कैंप लगाकर चिन्हित कर पेंशन 1500 रु दिया जाएगा पानी की टंकी से हर घर को पानी पहुंचाएंगे बिजली पहले आती नहीं थी अब जाती नहीं इस दौरान कार्यकताओं में जोश देखा गया।

चौकी के बाहर बेखौफ तरीके से बिक रही अवैध शराब

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के बरियावां पुलिस चौकी के बाहर एक शराब कारोबारी द्वारा लंबे समय से अवैध शराब का कारोबार किया जा रहा है उसी रास्ते से प्रतिदिन चौकी पुलिस का आना जाना है लेकिन सब कुछ जानते हुए भी पुलिस अनजान बनी है पूरे दिन शराब खरीदने वालों का इस दुकान पर आना जाना लगा रहता है लेकिन चौकी पुलिस शराब कारोबारी से अनजान बनी हुई है ग्रामीणों की माने तो एक पूर्व प्रधान का भतीजा शराब के अवैध कारोबार में लगा है और प्रधान के रुतबे के आगे पुलिस ने हथियार डाल दिए हैं अवैध तरीके से चौकी के बाहर बिक रही शराब के बाबत ग्रामीणों ने पुलिस अधीक्षक का ध्यान आकृष्ट कराते हुए अवैध शराब बिक्री पर रोक लगाए जाने और शराब के कारोबार में लगे कारोबारी पर मुकदमा दर्ज कराए जाने की मांग की है।

चायल की धरती पर तेईस को दहाड़ेंगे राजा भैय्या

वैश्य समाज का समर्थन मिलने से अन्य प्रत्याशियों की बिगड़ी गुणा गणित

अखंड भारत संदेश

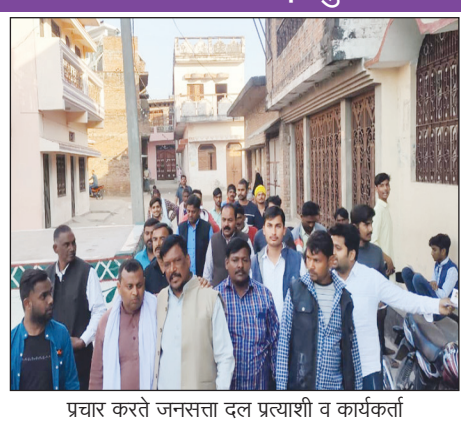

प्रचार करते जनसत्ता दल प्रत्याशी व कार्यकर्ता

भरवारी कौशाम्बी। चायल विधान सभा से जनसत्ता दल के प्रत्याशी अनिल केशरवानी के समर्थन में जनसत्ता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजा भैय्या 23 फरवरी को विधानसभा के भरवारी और सराय अकिल कस्बे में चुनावी जनसभा को संबोधित करेंगे जनसभा के दौरान रोड शो का भी आयोजन किया गया है सर्ववैश्य समाज की एक जुटता से अन्य सभी प्रत्याशियों का समीकरण बिगड़ा दिखाई पड़ रहा है चायल की धरती पर जनसत्ता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवम पूर्व कबीना मंत्री रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैय्या आगामी 23 फरवरी को समय एक बजे नगर पालिका परिषद भरवारी के लखन लाल कॉलोनी में प्रत्याशी अनिल केशरवानी के समर्थन में सभा करेंगे सभा की तैयारी प्रत्याशी उनके समर्थकों द्वारा की जा रही है सभा के बाद रघुराज प्रताप सिंह रोड शो करते हुए चरवा मनौरी के रास्ते सरायअकिल में भी एक विशाल सभा को संबोधित करेंगे। इस बीच चायल विधानसभा से जनसत्ता दल के प्रत्याशी अनिल केशरवानी ने कहा कि उन्हें वैश्य समाज का पूरा समर्थन मिला है चायल विधानसभा में वैश्य समाज के लगभग पचपन हजार वोटर है अनिल केसरवानी ने कहा कि वैश्य समाज के मतदाताओं का उन्हें पूरा समर्थन मिला हुआ है जिसके चलते सभी दलों के प्रत्याशियों के चुनाव का समीकरण बिगाड़ते दिख रहा है जनसत्ता दल प्रत्याशी अनिल केसरवानी अपनी जीत सुनिश्चित करते हुए डोर टू डोर आशीर्वाद लेने में कोई कोर कसर नही छोड़ना चाहते है वही वैश्य समाज का भी कहना है कि आज तक किसी भी पार्टी ने वैश्य समाज पर भरोसा नही किया जिसके चलते वैश्य समाज एक जुट होकर आरी निशान को जिताने का काम करेगा इस मौके पर अतिन केशरवानी श्री किशन केशरवानी गामा केशरवानी शिवकुमार केशरवानी प्रकाश केशरवानी सुशील केशरवानी हिमांशु केशरवानी राकेश अरोड़ा सुरेश केशरवानी मंगल सिंह आदर्श ठाकुर शिवेंद्र सिंह सतेंद्र सिंह मयंक सिंह सुनील केशरवानी प्रेम चंद्र केशरवानी आदि लोगो ने सैकड़ो गावँ का भ्रमण कर आरी चुनाव चिन्ह के लिए वोट मंगा है।

प्रधानमंत्री के आगमन की तैयारियां शुरू

मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र के टेवा में प्रधानमंत्री का हो रहा आगमन

अखंड भारत संदेश

प्रधानमंत्री आगमन की तैयारियों के संबंध में बैठक करते सांसद विधायक जिलाध्यक्ष व अन्य

कौशांबी। भारतीय जनता पार्टी के मंझनपुर कार्यालय में जिला अध्यक्षा भाजपा अनीता त्रिपाठी ने प्रधानमंत्री के आगमन से संबंधित व्यवस्था को लेकर बैठक की है और तैयारियों की समीक्षा की है 23 फरवरी को मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र के टेवा में देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आगमन की तैयारियों के संबंध में क्षेत्रीय उपाध्यक्ष दिलीप सिंह पटेल ने सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ आवश्यक काम काजी बैठक कर रणनीति बनाई है बैठक में मुख्य अतिथि क्षेत्रीय उपाध्यक्ष दिलीप सिंह पटेल ने कहा कि जिन कार्यकताओं को जो जिम्मेदारी दी गई है वह अपने दायित्व का निर्वहन पूरी जिम्मेदारी के साथ करें और साथ ही उन्होंने कहा की निश्चय ही भारतीय जनता पार्टी की सरकार पुनः बनेगी इस मौके पर कौशांबी सांसद विनोद सोनकर विधायक संजय कुमार गुप्ता सिराथू विधायक शीतला प्रसाद पटेल जिला प्रभारी अनिल सिंह ने प्रधानमंत्री के आगमन से संबंधित तैयारियों के संबंध में अपनी-अपनी बात रखी प्रधानमंत्री के आगमन की तैयारियों की बैठक में जिला महामंत्री संजय जयसवाल दीपचंद दिवाकर कौशल विद्यार्थी संतोष शरद चंद्र आशीष केसरवानी उर्फ बच्चा जिला उपाध्यक्ष धर्मराज मौर्य अजय पांडेय अकबर सिंह गोलू सिंह पटेल सत्यम केसरवानी जितेन साहू प्रवासी गण मंडलों के मंडल अध्यक्ष सहित तमाम पार्टी कार्यकर्ता पदाधिकारी मौजूद रहे।

आधी रात को घर में घुसे चोर लाखों को उठा ले गए सामान

वर्षो पहले भरवारी क्षेत्र में कई चोरियों का पुलिस नहीं कर सकी खुलासा

भरवारी कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के भरवारी कस्बे के एनडी कालोनी में बीती आधी रात को घर के भीतर घुसे चोरों ने 10 लाख रुपए के सोने चांदी का जेवर एक लाख नगद व अन्य सामान उठा ले गए हैं मामले की जानकारी पुलिस को दी है। जानकारी के मुताबिक संतोष कुमार मिश्रा पुत्र माता प्रसाद मिश्रा भरवारी कस्बे के एनडी कॉलोनी में रहते हैं उनके घर में शुक्रवार की आधी रात को चोर घुस गए और घर के भीतर से 10 लाख रुपए के सोने चांदी के जेवर और एक लाख रुपए नगद सहित तमाम कीमती सामान गायब कर दिया है खबर लिखे जाने तक मामले में पुलिस ने मुकदमा नहीं दर्ज किया है। भरवारी कस्बा और आसपास का क्षेत्र चोरी की घटनाओं से दहल रहा है तमाम पूर्व में घटनाएं हो चुकी हैं लेकिन चोरी की घटनाओं का खुलासा पुलिस नहीं कर सकी है बीते वर्ष भरवारी कस्बे के राकेश अरोड़ा के घर भी 10 लाख रुपए से अधिक के सोने चांदी के जेवर नगदी चोर उठा ले गए थे वर्षों बीत जाने के बाद भी थाना और चौकी पुलिस चोरी की घटना का खुलासा नहीं कर सकी है जिससे पुलिस की निष्क्रियता का अंदाजा लगाया जा सकता है पुलिस की लापरवाही से नगर वासियों में भय के साथ आक्रोश व्याप्त है नगर वासियों ने पुलिस अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए चोरी की वर्तमान और पूर्व की घटनाओं के खुलासे की मांग की है।

सरकारी स्कूल से आधी रात को सामान उठा ले गए चोर

अषाढ़ा कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के करारी थाना अंतर्गत अषाढा स्थित प्राथमिक और जूनियर स्कूल में बीती रात चोरी हो गई प्राथमिक स्कूल में लगे 5 पंखा 3 सीएफएल और कई अन्य सामान बेखौफ चोर उठा ले गए स्कूल के बगल में पुलिस चौकी भी है पुलिस चौकी के बगल में सरकारी स्कूल से बेखौफ चोर सामान उठा ले गए हैं और पुलिस मूकदर्शक बनी रही गई है पुलिस कर्मियों द्वारा बताया जाता है कि चौकी इंचार्ज की ड्यूटी चुनाव में लग गई है जिसके कारण चोरों ने मौके का फायदा उठाया है।

डिप्टी सीएम के समर्थन में विधायक संजय गुप्ता ने की जनसभा

अखंड भारत संदेश

सिराथू विधानसभा क्षेत्र में नुक्कड़ सभा करते विधायक संजय गुप्ता

कौशाम्बी। सिराथू विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के समर्थन में चायल विधायक संजय कुमार गुप्ता ने सभा आयोजित कर आम जनता से समर्थन मांगा है इस मौके पर उन्होंने उत्तर प्रदेश की योगी सरकार और केंद्र की मोदी सरकार के विकास कार्यों की जानकारी देते हुए कहा कि भाजपा के राज में गुंडागर्दी समाप्त हो गई है आम जनता अमन चैन से जिंदगी जी रही है उन्होंने कहा कि भाजपा के राज में चारों ओर विकास हो रहा है और आम जनता खुशहाल है उत्तर प्रदेश सरकार के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के समर्थन में चायल विधायक संजय कुमार गुप्ता ने सिराथू विधानसभा 251 के दशरथपुर, रामपुरवा नौढिया सहित कई स्थानों पर जगह जगह नुक्कड़ सभा कर प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को बताया साथ ही विधायक श्री गुप्ता ने कहा कि आज आपका बेटा डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य सिराथू विधानसभा से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी हैं और उन्हें भारी बहुमत से जितने के लिए कमल के फूल वाली बटन दबा कर विजई बनाने की अपील संजय कुमार गुप्ता विधायक ने मतदाताओं से किया है।

संपादक की कलम से

'विश्व व्हेल दिवस'

नीली व्हेल (बलैनोप्टेरा मस्कुलस) एक समुद्री स्तनपायी जीव है। इसकी लंबाई 30 मीटर (98 फीट) तक देखी गई है। इसका वजन 173 टन (191 लघु टन) तक दर्ज किया गया है। यह वर्तमान अस्तित्व में रहने वाले जानवरों में सबसे बड़ा जानवर है[

इसकी शुरूआत 1980 में हुई। जब हम्पबैक व्हेल के सम्मान में हवाई के मऊ द्वीप पर विश्व व्हेल दिवस मनाया गया।

पुरी दुनिया में फरवरी महीने के तीसरे रविवार को 'विश्व व्हेल दिवस' मनाया जाता है। इस दिन लोग विश्व की खूबसूरत प्राणियों में से एक व्हेल के बारे में जागरूकता फैलाते हैं और व्हेल प्रजाति की समुचित देखभाल और उसके देखभाल में आने वाली चुनौतियों का डटकर सामना करने का संकल्प भी लेते हैं। इसकी शुरूआत 1980 में हुई। जब हम्पबैक व्हेल के सम्मान में हवाई के मऊ द्वीप पर विश्व व्हेल दिवस मनाया गया। इसकी मुख्य वजह हम्पबैक व्हेल का हवाई तट पर आना था। ऐसा कहा जाता है कि हम्पबैक व्हेल हमेशा हवाई के तट पर तैरती थी। जिससे हम्पबैक व्हेल को देखने के लिए लोगों की भीड़ लगी रहती थी। इसके बाद पैसिफिक व्हेल फाउंडेशन द्वारा हम्पबैक व्हेल के सम्मान में व्हेल डे मनाने की शुरूआत की गयी। इस दिन पैसिफिक व्हेल फाउंडेशन द्वारा परेड और झांकियां निकाली जाती हैं। जिसमें व्हेल की वेशभूषा में बच्चे-बड़े सभी नजर आते हैं। इसके साथ ही कई प्रमुख हस्तियां भी इस कार्यक्रम में शामिल होती हैं। व्हेल समुद्रों में रहने वाला एक स्तनधारी प्राणी है। जिसे जल का सबसे बड़ा जीव कहा जाता है। इसके सिर के अग्र भाग पर एक छिद्र होता है। जिससे व्हेल सांस लेती है। आकार के बारे में कहा जाता है कि व्हेल हाथी और डायनासोर से भी कई गुना बड़ी होती है। इसकी लंबाई 30 मीटर होती है जबकि वजन 180 टन होता है। ऐसा कहा जाता है कि व्हेल 5 करोड़ वर्ष पूर्व अस्तित्व में आई। हालांकि, व्हेल पर खतरे का संकट उस वक्त मंडराने लगा था जब 17वीं शताब्दी में कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा व्हेल का शिकार व्यापार के लिए किया जाने लगा। जिससे व्हेल का अस्तित्व खतरे में आ गया था।

खेल सुविधाओं को यूं बर्बाद मत करो

-भूपिंद्र सिंह-

हिमाचल प्रदेश का अधिकांश भूभाग पर्वतीय होने के कारण यहां शिक्षा संस्थानों के पास खेल मैदानों का अभाव है। यही सबसे बड़ा कारण है कि हम पहाड़ी दमखम में अव्वल होते हुए भी खेलों में वह सब नहीं कर पाए हैं जो कर सकते हैं। प्रदेश के पास आज से दो दशक पहले तक खेल ढांचे के नाम पर सैकड़ों साल पहले राजा-महाराजाओं द्वारा मेले व उत्सवों के लिए बनाए गए चंद मगर बेहतरीन मैदान चंबा, मंडी, नादौन, सुजानपुर, जयसिंहपुर, कुल्लू, अनाडेल, रोहड़ू, रामपुर, सोलन, चैल, नाहन आदि जगहों पर थे। इन मैदानों पर हिमाचल प्रदेश की खेल गतिविधियां कई दशकों से मेलों, उत्सवों व राजनीतिक रैलियों से बचे समय में चलती रही हैं। वैसे तो हिमाचल प्रदेश की तरक्की में विभिन्न सरकारों का योगदान रहा है, मगर हिमाचल प्रदेश में पहली बार नई सदी के शुरूआती वर्षों में प्रोफेसर प्रेम कुमार धूमल की सरकार ने राज्य में अंतरराष्ट्रीय स्तर के खेल ढांचे को खड़ा करने की शुरूआत की और आज हिमाचल प्रदेश में कई खेलों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्ले फील्ड एथलेटिक्स, क्रिकेट, हाकी, तैराकी व इंडोर खेलों के लिए उपलब्ध है। क्रिकेट में अनुराग ठाकुर के प्रयासों ने हिमाचल प्रदेश को क्रिकेट के अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर लाकर खड़ा कर दिया है जो काबिले तारीफ है। बिलासपुर के लुहणू का खेल परिसर पूर्व

मंत्री व वर्तमान में कोट कहलूर के विधायक ठाकुर रामलाल के प्रयत्नों से सामने आया है। एथलेटिक्स सभी खेलों की जननी है। इसी से सब खेल निकले हैं और इसके प्रशिक्षण के बिना किसी खेल में दक्षता नहीं मिल सकती है। हिमाचल प्रदेश में आज हमीरपुर, बिलासपुर व धर्मशाला में तीन सिंथेटिक ट्रैक बन कर तैयार हैं। शिलारू के साई सैंटर में दो सौ मीटर का प्रैक्टिस ट्रैक बन कर तैयार है। सरस्वतीनगर में काम हो रहा है। किसी किसी राज्य के पास अभी तक एक भी ट्रैक नहीं है। हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर व धर्मशाला सिंथेटिक ट्रैकों पर लोग टहलते नजर आते हैं। इनमें हमीरपुर के ट्रैक का तो हाल ही बहुत बुरा है। खेल विभाग वहां पर न तो नियमित चौकीदार दे पाया है और न ही मैदान कर्मचारी। यह करोड़ों की संपत्ति लावारिस बर्बाद हो रही है। दो साल पहले दीपावली के अवसर पर तो ट्रैक पर मोमबत्तियां जला कर क्षतिग्रस्त कर दिया था। खेल विभाग तब भी कुंभकर्णी नींद से जागा है। धर्मशाला की तरह हमीरपुर में भी खिलाड़ियों के लिए पहचान पत्र बनाना होगा। भर्ती के लिए बाहर कच्चे पर केवल ट्रायल के लिए स्वीकृत किया जा सकता है। शेष ट्रेनिंग बाहर के अन्य मैदानों व सड़कों पर हो सकती है। सिंथेटिक ट्रैक पार्क बन चुके हैं। वहां आम लोगों का प्रवेश वर्जित कर देना चाहिए, केवल एथलीट के लिए ही प्रवेश रखना चाहिए। तभी इन प्ले फील्ड को लंबे समय तक खिलाड़ियों के लिए उपलब्ध करवाया जा सकता है। कल जब हिमाचल प्रदेश के पास अंतरराष्ट्रीय स्तर के एथलीट होंगे और प्रशिक्षण के लिए उखड़ा हुआ ट्रैक होगा तो फिर पहाड़ की संतान को पिछड़ने का दंश झेलना पड़ेगा। इसलिए इस बबार्दी को अभी से रोकना होगा। तभी हम अपनी आने वाली पीढ़ियों से न्याय कर सकेंगे। इस कॉलम के माध्यम से इस विषय पर बार-बार लिखने के बाद भी हिमाचल सरकार इन विश्व स्तरीय खेल सुविधाओं पर ध्यान नहीं दे रही है। प्रदेश को भी हिमाचल में ट्रेनिंग कर पहाड़ की संतानें राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए कुछ लोगों के जुनून ने बिना सुविधाओं के मिट्टी पर ट्रेनिंग कर राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीत कर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दस्तक दी थी। तभी यह अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधा आने वालों को मिल पाई है। हिमाचल प्रदेश में इस समय हर जिला स्तर सहित कई जगह उपमंडल स्तर पर भी इंडोर स्टेडियम बन कर तैयार हैं, मगर उन स्टेडियमों में बनी प्ले फील्ड का उपयोग प्रशिक्षण के लिए खिलाड़ियों को ठीक से करना नहीं मिल रहा है। वहां पर अधिकतर शहर के लाला व अधिकारी अपनी फिटनेस करते हैं। ऊना व मंडी में तरणताल बने हैं, मगर वहां पर भी कोई प्रशिक्षण कार्यक्रम आज तक शुरू नहीं हो पाया है। हिमाचल प्रदेश में तैराक ही नहीं हैं।

यहां पर भी प्रशिक्षण न हो कर गर्मियों में मस्ती जरूर हो जाती है। ऊना में हाकी के लिए एस्ट्रो टर्फ बिछी हुई है, मगर उसकी तो पहले ही दुर्गति हो गई है। हिमाचल प्रदेश सरकार का युवा सेवाएं एवं खेल विभाग अभी तक करोड़ों रुपए से बने इस खेल ढांचे के रखरखाव में नाकामयाब रहा है। उसके पास न तो चौकीदार हैं और न ही मैदान कर्मचारी, पर्याप्त प्रशिक्षकों की बात तो बहुत दूर की बात है। नई खेल नीति में लिखा है कि सरकार विभिन्न खेल संघों, पूर्व खिलाड़ियों व प्रशिक्षकों से इन सुविधाओं का उपयोग कराने के लिए खेल अकादमियों का गठन कराएगी। हिमाचल प्रदेश के कई पूर्व खिलाड़ी जो खेल आरक्षण से सरकारी नौकरी में हैं, अपनी ड्यूटी को ईमानदारी से करने के बाद सबेरे व शाम उभरते खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दे रहे हैं। हैंडबाल में स्नेहलता, कुश्ती में जौनी चौधरी सहित और भी कई खेलों में कई सरकारी नौकर जो पूर्व खिलाड़ी रहे हैं, ईमानदारी से प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए हुए हैं। क्या सरकार ऐसे जुनूनी शौकिया प्रशिक्षकों को खेल विभाग में कम से कम पांच वर्षों के लिए प्रतिनियुक्ति पर लाकर या उन्हीं के विभाग में उन्हें खेल प्रबंधन व प्रशिक्षण देने का अधिकार देकर हिमाचल प्रदेश की इस करोड़ों रुपए से बनी खेल सुविधाओं का सदुपयोग कर राज्य में खेलों को गति नहीं दे सकती है।

राजनीति का गिरता स्तर

-कुलदीप चंद अग्निहोत्री-

सत्ता प्राप्ति के लिए कितना गिरा जा सकता है, इसका अनुभव इन दिनों पंजाब की राजनीति में किया जा सकता है। वहां विधानसभा के लिए चुनाव हो रहे हैं। वर्तमान में वहां सोनिया कांग्रेस की सरकार है। उसे अकाली दल, आम आदमी पार्टी और एनडीए से चुनौती दी जा रही है। वैसे तो संयुक्त किसान मोर्चा भी मैदान में है, लेकिन वह खेल बिगाड़ने वाला ज्यादा सिद्ध हो सकता है, जीतने वालों में अभी उसका शुमार नहीं हो पाया। सोनिया कांग्रेस की सरकार और सत्ता दोनों ही दांव पर है, इसलिए वह पंजाब में अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रयास करेगी, इसमें कोई संशय नहीं है। लेकिन इसके लिए पार्टी किस स्तर तक जा सकती है, इसका अनुभव कुछ दिनों से हो रहा है। दो दिन पहले सोनिया कांग्रेस की पंजाब में चुनाव रैली थी। मुख्यमंत्री चरनजीत सिंह चन्नी और कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी उस रैली में थीं। मुख्यमंत्री चन्नी ने वहां बहुत ही जोश से घोषणा की कि पंजाब में उत्तर प्रदेश, बिहार और दिल्ली के भैये राज करना चाहते हैं। हम ऐसा नहीं होने देंगे। उसके बाद उन्होंने पंजाब के लोगों से अपील की कि सभी पंजाबी इकट्ठे हो जाओ और इन भैयों को पंजाब में मत घुसने दो। सबसे ताज्जुब की बात तो यह है जब चन्नी लोगों को इन ह्यभैयोंह्ण के खिलाफ ललकार रहे थे तो प्रियंका गांधी मंच पर ही खड़ी होकर तालियां बजा रही थी। सत्ता प्राप्त करने के लिए भारत के एक इलाके के लोगों को दूसरे इलाके के लोगों के खिलाफ भड़काने का काम उस पार्टी की ओर से किया जा रहा है जो अपने आप को राष्ट्रीय पार्टी लिखती और कहती है। महात्मा गांधी कहा करते थे कि सत्ता प्राप्ति के लिए जिन साधनों का प्रयोग किया जाए, वे शुद्ध होने चाहिए। गलत साधनों से प्राप्त की गई सत्ता जन कल्याणकारी नहीं हो सकती। अपने अंतिम दौर में पहुंच चुकी सत्ता की इस लड़ाई में जीतने के लिए कांग्रेस ने भारत के एक प्रांत के लोगों को दूसरे प्रांत के लोगों से लड़ाने का यह जो नया हथियार निकाला है, क्या इसे शुद्ध साधन कहा जा सकता है? चरनजीत सिंह चन्नी उस प्रांत के लोगों को पंजाब में न घुसने देने के लिए कह रहे हैं जिसमें दशगुरु परंपरा के दसवें गुरु श्री गोविंद सिंह जी का जन्म हुआ था। जन्मसाखियों में आता है कि पटना के लोग बाल गोविंद की लीलाएं देखने के लिए लालायित रहते थे। इधर चन्नी केवल सत्ता प्राप्ति के लिए अपनी निकृष्ट लीला का प्रदर्शन कर रहे हैं। जब चन्नी देश के लोगों को आपस में लड़ाने के लिए पंजाब के लोगों को उकसा रहे थे तो प्रियंका गांधी को मंच पर इसका विरोध करना चाहिए था। इसलिए नहीं कि वे स्वयं उत्तर प्रदेश या दिल्ली से ताल्लुक रखती हैं, बल्कि इसलिए कि चन्नी उनके सामने ही देश को तोड़ने का आह्वान कर रहे थे। लेकिन प्रियंका गांधी ने इसका विरोध नहीं, बल्कि खुशी में तालियां बजा-बजा कर इसका खुलेआम समर्थन किया। इससे सोनिया कांग्रेस की भीतर की सोच और रणनीति प्रकट होती है। 1984 में उसने इसी प्रकार पंजाब के खिलाफ कुछ लोगों को भड़का कर दिल्ली में नरसंहार करने दिया था।

उद्देश्य तब भी एक ही था। किसी भी साधन से सत्ता प्राप्त करना। उधर सोनिया कांग्रेस के ही एक दूसरे नेता सुनील जाखड़ इससे भी खतरनाक अभियान छेड़े हुए हैं। जहां चन्नी एक प्रांत के लोगों को दूसरे प्रांत के लोगों से लड़ाने की गोटियां बिछा रहे हैं, वहीं सुनील जाखड़ पंजाब में ही एक बिरादरी के लोगों को दूसरी बिरादरी के लोगों से लड़ाने के लिए झाग उगल रहे हैं। उद्देश्य वही है किसी तरह भी कांग्रेस के हाथ से सत्ता नहीं जानी चाहिए। कर्नाटक में एटीएम मूल के कुछ मुसलमानों ने भारतीय मुसलमानों की लड़कियों को आगे करके ह्यहिजाब आंदोलनह्ण चला रखा है। भारत में एटीएम के मुसलमान अरब, तुर्क व मुगल मंगोल मूल के हैं। वे हमलावरों के साथ हिंदुस्तान में आए थे और यहीं बस गए, लेकिन यहां की मिट्टी से नहीं जुड़ पाए। वे अभी भी उन दिनों के सपने देखते रहते हैं जिन दिनों उनके पुरखे हिंदुस्तान पर राज करते थे। लेकिन उनके दुर्भाग्य से एटीएम मूल के मुसलमानों की संख्या भारत में बमुश्किल दो से पांच प्रतिशत से ज्यादा नहीं है। इसलिए वे अपनी कुटिल रणनीति के लिए भारतीय मुसलमानों को, जिन्हें वे दोयम दर्जे का मानते हैं, आगे कर देते हैं। कर्नाटक में भी यही हो रहा है। एटीएम ने वहां भारतीय मूल के मुसलमानों की लड़कियों को आगे करके स्कूल की यूनिफार्म या वर्दी के खिलाफ आंदोलन छेड़ रखा है। उनका कहना है कि मुसलमानों के बच्चे स्कूल में स्कूल की वर्दी नहीं पहनेंगे, बल्कि हिजाब पहनेंगे। इस आंदोलन का पंजाब से कुछ लेना-देना नहीं है। लेकिन सोनिया कांग्रेस के सुनील जाखड़ इस आंदोलन को पंजाब में ही एक दूसरे रूप में लाना चाहते हैं। वह जगह-जगह लोगों को ललकार रहे हैं कि सावधान हो जाओ। आज कर्नाटक में हिजाब पर हाथ डाला जा रहा है, कल पंजाब में दस्तार यानी पगड़ी पर हाथ डाला जाएगा। स्कूल की वर्दी के नाम से पगड़ी पर प्रतिबंध लगाया जाएगा। अंधे को अंधेरे में दूर की सूझी। जाहिर है यह चुनाव के दिनों में पंजाब में में हिंदू और सिख को आमने-सामने लाने की घटिया कोशिश कही जाएगी।

कुल मिला कर कांग्रेस की सत्ता प्राप्त करने के लिए यह नई रणनीति है जिसका फिलहाल पंजाब में प्रयोग किया जा रहा है, यह जानते हुए भी कि पंजाब सीमांत राज्य है।

क्या ऐसा तो नहीं कि सुनील जाखड़ परोक्ष रूप से पाकिस्तान को ही सुझाव दे रहे हों कि पंजाब में आप इस मुद्दे को भी अपने व्यापक साधनों का प्रयोग करके उछाल सकते हो। वैसे भी पाकिस्तान हिजाब बनाम स्कूल वर्दी के इस मसले पर आग उगल ही रहा है।

बेहद अलग से दिख रहे हैं 5 राज्यों के चुनाव

-ऋतुपर्ण दवे-

क्या पाँच राज्यों में हो रहे विधानसभा चुनाव वाकई देश की राजनीति में नया प्रयोग का रास्ता बनने जा रहे हैं। यूँ तो अब तक इस मिथक को तोड़ नहीं जा सका है कि दिल्ली की सत्ता का रास्ता उत्तर प्रदेश से ही होकर गुजरता है। काफी हद तक सही भी है। उत्तर प्रदेश के उत्तराखण्ड में बँट जाने के बाद भी हैसियत में किसी प्रकार की कोई कमीं नहीं आई। लेकिन राजनीतिक दलों के बनते, बिगड़ते समीकरणों से नया कुछ होने के आसार से इंकार नहीं किया जा सकता है। यह तो सही है कि जीतेगा तो लोकतंत्र लेकिन सत्ता की कुर्सी पर उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, पंजाब, गोवा और मणिपुर में ऊँट किस करवट बैठेगा कहना मुश्किल जरूर है।

देश की राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाने वाले अकेले उत्तर प्रदेश की हैसियत 10 मार्च को किस मोड़ पर होगी, अभी कयास ही हैं। पश्चिमी और पूर्वी उत्तर प्रदेश के हालात काफी अलग हैं। सीधी टक्कर सत्ताधारी भाजपा व सहयोगियों तथा सपा व सहयोगियों के बीच है। बसपा और काँग्रेस मैदान में जरूर हैं पर रेस में दिखते नहीं। 2017 की तरह इस बार किसी लहर का कहर न होने से बाँकी दलों की आस बची

हुई है। हाँ, इस बात से इंकार नहीं कि चुनावी नतीजे 2017 से इतर होंगे। उत्तर प्रदेश की सियासत का एक अलग मिजाज है। राजनीतिक दल उम्मीदवारों को स्थानीय उम्मीदों व जातीय आधार पर तय करते हैं। अगड़े-पिछड़े और दलित मतदाताओं की भूमिका की छाप सबसे ज्यादा यहीं दिखती है। वोट कटवा, बी पार्टी, डमी कैण्डिडेट और धार्मिक मुद्दों पर जैसी संवेदनशीलता उत्तर प्रदेश में दिखा करती है, वैसी दूसरे राज्य में उतनी नहीं। इस कारण भी इस बार के चुनाव काफी अलग हैं। इस बात को भी ध्यान में रखना होगा कि अयोध्या विवाद निपटारे के बाद, तेजी से बन रहे राम मंदिर और राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का वादा कि साल 2023 में गर्भ गृह में रामलला को विराजमान होंगे चुनाव में असर डालेगा। हिजाब का मसला भी ऐन चुनावों के वक्त भले ही सोची समझी चाल या महज इत्तेफाक हो लेकिन अलग ढ़ंग से भंजाने की कोशिशें होंगी। उत्तर प्रदेश के पहले चरण और दूसरे चरण के मतदान के बाद राजनीतिक दलों के दावे कुछ भी हों लेकिन नतीजों का पिटारा खुलने के बाद ही समझ आएगा कि उत्तर प्रदेश का देश की राजनीतिक धारा मे कैसा दबदबा बना।

उत्तराखण्ड की सभी 70 व गोवा की 40 सीटों के चुनाव भी 14 फरवरी को निपट जाएंगे। यहाँ चुनाव से ठीक पहले यहाँ भी हिजाब विवाद के बीच मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का वादा कि भाजपा सरकार बनी तो शपथ ग्रहण के तुरंत बाद यूनिफॉर्म सिविल कोड लागू कराने खातिर ड्राफ्ट कमेटी बनेगी जिसके दायरे में विवाह, तलाक, जमीन जायदाद व उत्तराधिकार के मामले भी शामिल होंगे, बड़ा राजनीतिक पैंतरा माना जा रहा है। भाजपा ने उत्तराखण्ड में बड़े-बड़े प्रयोग करते हुए चार साल के कार्यकाल में तीन मुख्यमंत्रियों बदले। धामी उनमें सबसे नए हैं। यहाँ आम आदमी पार्टी मुफ्त बिजली और दिल्ली पैटर्न का प्रचार कर अपनी जड़ें जमाने तो काँग्रेस साख बचाने के लिए संघर्षशील दिखी। लेकिन सत्ता के संघर्ष को लेकर ज्यादा कुछ बदले ऐसा लगता नहीं।

सुन्दर समुद्र तटों और एक अलग तरह के खुलेपन के लिए मशहूर गोवा में भाजपा के लिए चुनौती पेश करने की कोशिशें कितनी सफल या विफल होती हैं, नतीजे बताएंगे। लेकिन हाँ इतना जरूर है कि मनोहर परिकर जैसे ईमानदार नेता की कमीं जरूर गोवा वासियों को टीसती रही।

भारतीयों की सुरक्षा

-सिद्धार्थ शंकर-

यूक्रेन में फंसे भारतीय छात्रों की तरफ से फ्लाइट्स नहीं मिलने को लेकर की जा रही शिकायत के बाद सरकार एक्टिव हो गई है। सरकार ने कोरोना वायरस के कारण एयर बबल एग्रीमेंट के तहत यूक्रेन आने-जाने के लिए सीमित फ्लाइट्स संचालित करने का प्रतिबंध हटा लिया है। इंडियन एविएशन मिनिस्ट्री ने कहा कि अब यूक्रेन के लिए एयरलाइंस कितनी भी फ्लाइट्स संचालित कर सकती हैं। साथ ही स्पेशल चार्टर्ड फ्लाइट्स भी ऑपरेट की जा सकती हैं। इससे पहले छात्रों की गुहार सुनते हुए केंद्र सरकार ने बुधवार को ही भारतीय विदेश मंत्रालय के साथ ही यूक्रेन में मौजूद भारतीय दूतावास में भी स्पेशल कंट्रोल रूम बना दिए थे, जो यूक्रेन में मौजूद भारतीय नागरिकों की हर समस्या सुलझाने में मदद कर रहे हैं। यूक्रेन मसले को लेकर यूरोप में लगातार बेचैनी बढ़ती जा रही है। यूरोपीय यूनियन ने यूक्रेन स्थित दूतावास के गैर जरूरी कर्मचारियों को वापस देश

लौटने के लिए कहा है। इटली के विदेश मंत्रालय ने अस्थायी तौर पर अपने नागरिकों को यूक्रेन छोड? के लिए कहा है। इसके अलावा डोनेट्सक, लुहान्सक और क्रीमिया क्षेत्र की यात्रा ना करने की सलाह भी दी है। तुर्की ने जरूरी ना होने पर नागरिकों को पूर्वी यूक्रेन ना जाने की सलाह दी है। नीदरलैंड्स और एस्टोनिया ने अपने नागरिकों को जल्द से जल्द यूक्रेन छोड? की सलाह दी है। आयरलैंड ने दूतावास के कर्मचारियों में कमी की है। विभिन्न देशों के यह अलर्ट बता रहे हैं कि रूस और यूक्रेन में तनाव कम होने की खबरें अभी पुख्ता नहीं हैं और कभी भी युद्ध भड़क सकता है। इस परिस्थिति में केंद्र सरकार का विमानों की आवाजाही पर लगा प्रतिबंध हटाना सही फैसला है। देखा जाए तो यूक्रेन में फंसे भारतीय नागरिकों की सुरक्षा गंभीर चिंता का विषय बन गई है। चिंता इसलिए भी बढ़ गई क्योंकि यूक्रेन की राजधानी कीव में भारतीय दूतावास ने इस संकटग्रस्त देश में रह रहे सभी भारतीय नागरिकों, खासतौर से छात्रों को वहां से चले जाने का परामर्श जारी कर दिया था। जाहिर है, भारतीय दूतावास हालात की गंभीरता को समझ रहा है। उसे भी लग रहा है कि अगर रूस और यूक्रेन के बीच जंग छिड़ गई ।

राणा अयूबः चंदे के धंधे में सेक्यूलरिज्म की सरदार

-डॉ. अजय खेमरिया-

राणा अयूब, सेक्यूलर लॉबी की पसंदीदा पत्रकार। हिंदुत्व के विरुद्ध ऐसी आवाज, जिसे उदारवादियों की जमात नई अरुंधती राय तक बताते नहीं अघाती, इन दिनों बेनकाब नजर आ रही हैं। केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय ने उन्हें 2.69 करोड़ की चंदा वसूली और उसके दुरूपयोग के आरोपों की जांच की जद में ले लिया है। उनके बैंक खातों से 1.77 करोड़ की राशि अटैच कर दी है। आरोप ऐसे हैं कि सारी प्रगतिशीलता और बौद्धिकता शरमा जाए। कोविड काल में प्रवासी मजदूरों और व्यवस्थाओं को लेकर दुनिया भर में भारत सरकार की छवि को खराब करने वाली पत्रकार राणा अयूब ने इन्ही गरीबों के नाम पर चंदा जुटाया और उसे अपने पिता एवं बहन के नाम फिक्स डिपॉजिट कर दिया। गोवा में शाही छुटियाँ बिताई, प्रगतिशीलता के नाम पर जकात का चंदा भी गरीबों के नाम पर जमा किए गए चंदे से दिया और एफसीआरए कानून को धता बताकर विदेशी चंदा भी जुटाया। पुलिस में बाकायदा प्राथमिकी दर्ज होने और ईडी की कार्रवाई के बाद राणा अयूब उसी घिसे-पिटे बहाने के साथ सामने आई कि उन्हें मुस्लिम होने की वजह से तंग किया जा रहा है। जब कोरोना शुरू हुआ था तो लोगों की मदद के नाम पर 2020 में 'केटो' क्राउडफंडिंग वेबसाइट के जरिए धन की उगाही शुरू की। उन्होंने गरीबों की मदद करने के लिए अप्रैल 2020, जून 2020 औ? मई 2021 में केटो प्लेटफॉर्म पर फंडरेजिंग कैम्पेन शुरू किया था। चंदा उगाही के लिए अपने पिता और बहन के खातों का उपयोग किया गया। ईडी ने जब इस मामले में कार्रवाई की तो राणा अयूब ने बचकाना बचाव करते हुए कहा कि उस दौरान उनके पास पैनकार्ड नहीं था। कोरोना पीड़ितों की मदद करना भी आवश्यक था। इसीलिए मैंने अपने अब्बू और बहन के अकाउंट की डिटेल्स दी थी। अब इस बचाव के आधार पर इतनी सजग पत्रकार की करामात को आसानी से समझा जा सकता है। कहने को राणा अयूब खुद को प्रगतिशील कहती हैं और हिन्दू मान्यताओं को रूढ़िवादिता के आधार पर निशाने पर लेती हैं लेकिन आपको आश्चर्य होगा कि इस पत्रकार के अंदर एक कट्टर मुस्लिम भी जीवित है। इस्लाम में अनुयाइयों को अपनी बचत में से 2.5 प्रतिशत जकात यानी दान के लिए देने का आग्रह है। राणा अयूब ने सार्वजनिक रूप से कोरोना पीड़ितों के नाम से करोड़ों की धन उगाही की और जुटाए गए फंड का एक हिस्सा रमजान के महीने में जकात के तौर पर दे दिया।

महान साधक थे रामकृष्ण परमहंस

-रमेश सर्राफ धमोरा-

स्वामी रामकृष्ण परमहंस भारत के एक ऐसे महान संत एवं विचारक थे जिन्होंने सभी धर्मों की एकता पर जोर दिया था। उन्हें बचपन से ही विश्वास था कि ईश्वर के दर्शन हो सकते हैं। ईश्वर की प्राप्ति के लिए उन्होंने कठोर साधना और भक्ति की। अपनी साधना से रामकृष्ण इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संसार के सभी धर्म सच्चे हैं और उनमें कोई भिन्नता नहीं है। वे ईश्वर तक पहुंचने के भिन्न-भिन्न साधन मात्र हैं। श्री रामकृष्ण परमहंस अपने समय के महान साधक व मानवता के पुजारी थे। इनका जन्म पश्चिम बंगाल के हुगली जिले में कामारपुकुर नामक गांव में 18 फरवरी 1836 को एक निर्धन निष्ठावान ब्राहमण परिवार में हुआ था। इनके जन्म पर ही प्रसिद्ध ज्योतिषियों ने रामकृष्ण के महान भविष्य की घोषणा कर दी थी। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी सुन इनकी माता चन्द्रा देवी तथा पिता क्षुदिराम अत्यन्त प्रसन्न हुए। इनको बचपन में गदाधर नाम से पुकारा जाता था। पांच वर्ष की उम्र में ही वे अद्भुत प्रतिभा और स्मरणशक्ति का परिचय देने लगे। अपने पूर्वजों के नाम व देवी- देवताओं की स्तुतियां, रामायण, महाभारत की कथायें इन्हें कंठस्थ याद हो गई थी। 1843 में उनके पिता का देहांत हो गया तो परिवार का पूरा भार इनके बड़े भाई रामकुमार पर आ पड़ा था। रामकृष्ण जब नौ वर्ष के हुए तो उनके यज्ञोपवीत संस्कार का समय निकट आया। उस समय एक विचित्र घटना हुई। ब्राह्मण परिवार की यह परम्परा थी कि नवदिक्षित को इस संस्कार के पश्चात अपने किसी सम्बंधी या किसी ब्राह्मण से पहली शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। एक लुहारिन जिसने रामकृष्ण के जन्म से ही परिचर्या की थी। बहुत पहले ही उनसे प्रार्थना कर रखी थी कि वह अपनी पहली भिक्षा उसके पास से प्राप्त करे। लुहारिन के सच्चे प्रेम से प्रेरित हो बालक रामकृष्ण ने वचन दे दिया था। अतः यज्ञोपवीत के पश्चात घर वालों के लगातार विरोध के बावजूद उन्होंने ब्राह्मण परिवार में प्रचलित प्रथा का उल्लंघन कर अपना वचन पूरा किया। यह घटना सामान्य नहीं थी। सत्य के प्रति प्रेम तथा इतनी कम उम्र में सामाजिक प्रथा के इस प्रकार ऊपर उठ जाना, रामकृष्ण की आध्यात्मिक क्षमता और दूरदर्शिता को ही प्रकट करता है। रामकृष्ण का मन पढ़ाई में न लगता देख उनके बड़े भाई उन्हें अपने साथ कलकत्ता ले आये और अपने पास दक्षिणेश्वर में रख लिया। यहां का शांत एवं सुरम्य वातावरण रामकृष्ण को अपने अनुकूल लगा। 1858 में इनका विवाह शारदा देवी नामक पांच वर्षीय कन्या के साथ सम्पन्न हुआ। जब शारदा देवी ने अपने अट्ठारहवें वर्ष में पदार्पण किया तब श्री रामकृष्ण ने दक्षिणेश्वर के पुण्यपीठ के अपने कमरे में उनकी षोड़शी देवी के रूप में यथोपचार आराधना की। यही शारदा देवी रामकृष्ण संघ में माताजी के नाम से परिचित हैं। रामकृष्ण के जीवन में अनेक गुरु आये पर अन्तिम गुरुओं का उनके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। एक थी भैरवी, जिन्होंने उन्हें अपने कापालिक तंत्र की साधना करायी और दूसरे श्री तोतापुरी जो उनके अन्तिम गुरु थे। गंगा के तट पर दक्षिणेश्वर के प्रसिद्ध मंदिर में रहकर रामकृष्ण मां काली की पूजा किया करते थे। गंगा नदी के दूसरे किनारे रहने वाली भैरवी को अनुभूति हुई कि एक महान संस्कारी व्यक्ति रामकृष्ण को उसकी दीक्षा की आवश्यकता हैं। गंगा पार कर वो रामकृष्ण के पास आयी तथा उन्हें कापालिक दीक्षा लेने को कहा। रामकृष्ण ने भैरवी से दीक्षा ग्रहण की। भैरवी द्वारा बतायी पद्धति से वो लगातार साधना करते रहे तथा मात्र तीन दिनों में ही सम्पूर्ण क्रिया में निपुण हो गये। रामकृष्ण के अन्तिम गुरु तोतापुरी थे जो सिद्ध तांत्रिक तथा हठ योगी थे। वे रामकृष्ण के पास आये तथा उन्हें दीक्षा दी। रामकृष्ण को दीक्षा दी गई परम शिव के निराकार रूप के साथ पूर्ण संयोग की।

स्ट्रांजा मेमोरियल मुक्केबाजी टूनार्मेंट के लिये भारतीय टीम सोफिया रवाना

नयी दिल्ली। भारत की 17 सदस्यीय टीम 73वें स्ट्रांजा मेमोरियल टूनार्मेंट में भाग लेने के लिये शुक्रवार को बुल्गारिया रवाना हो गई। यूरोप का सबसे पुराना अंतरराष्ट्रीन य मुक्केबाजी टूनार्मेंट 18 से 28 फरवरी तक सोफिया में खेला जायेगा। भारतीय मुक्केबाजों का इस साल यह पहला विदेशी टूनार्मेंट है। अभ्यास के दौरान चोटिल होने से छह पुरूष मुक्केबाजों को पीछे हटना पड़ा जिससे सात मुक्केबाज ही पुरूष वर्ग में भारतीय चुनौती पेश कर सकेंगे। महिला वर्ग में भी एशियाई चैम्पियन पूजा रानी (81 किलो) और सोनिया लाठेर (57 किलो) के नाम वापिस लेने के बाद 10 ही मुक्केबाज बचे हैं। भारतीय खेल प्राधिकरण ने कहा है कि सरकार टीम की भागीदारी का पूरा खर्च वहन करेगी।

चोटिल रूड ने रियो ओपन से नाम वापिस लिया, बारिश के कारण खेल रूका

रियो दि जिनेरियो। दूसरी वरीयता प्राप्त नॉर्वे के कैस्पर रूड ने पेट में चोट के कारण रियो ओपन क्लेकोर्ट टेनिस टूनार्मेंट से नाम वापिस ले लिया। रूड ने एक प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि रविवार को अर्जेंटीना ओपन फाइनल में लगी चोट का असर उन्हें अभी तक महसूस हो रहा है। रूड ने वह टूनार्मेंट जीता था। उनकी जगह स्पेन के राबर्टो कारबालेस बाएना खेल रहे हैं जिन्हें दूसरे सेट में अर्जेंटीना के फ्रांसिस्को सेरूंडोलो ने 6.3, 6.2 से हराया। अब सेरूंडोलो का सामना सर्बिया के मियोमीर केसमानोविच से होगा जिसने छठी वरीयता प्राप्त इटली के लोरेंजो सोनेगो को 7.5, 6.4 से मात दी।

कांबली ने रणजी में शतक लगाने पर ढुल की तारीफ कर कहा, टीम इंडिया के लिए खेलना तय

नई दिल्ली। भारत के पूर्व क्रिकेटर विनोद कांबली को लगता है कि अगर युवा खिलाड़ी यश ढुल घरेलू मैचों में लगातार अच्छा प्रदर्शन करते रहे, तो वह निश्चित तौर पर टीम इंडिया के लिए खेलेंगे।

यश ने गुरुवार को तमिलनाडु के खिलाफ चल रहे रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप एच मैच में शतक लगाया था। कांबली ने यश की प्रशंसा करते हुए कहा कि बल्लेबाज टीम इंडिया की सीनियर जर्सी पहनने से सिर्फ एक अच्छा सीजन दूर है। कांबली ने कहा, यश ढुल ने प्रथम श्रेणी मैचों में अपनी शैली में आगमन की घोषणा की है। उन्होंने शतक हासिल करने के लिए बहुत ही संयम के साथ पारी खेली, मुझे यकीन है कि लगातार घरेलू प्रदर्शन और एक अच्छे आईपीएल सीजन के साथ, इस युवा खिलाड़ी के लिए भारत के लिए खेलना तय है। बधाई हो मिस्टर ढुल। टॉस जीत कर तमिलनाडु ने पहले गेंदबाजी करने का विकल्प चुना, जिसके बाद यश ने बल्लेबाजी की शुरूआत करते हुए 16 चौकों की मदद से सिर्फ 133 गेंदों पर अपना शतक बनाया। यश 50वें ओवर में 113 रन बनाकर आउट हो गए, जिससे दिल्ली ने पहले दिन 291/7 रन बनाए। इस महीने की शुरूआत में यश ने फाइनल में इंग्लैंड को हराकर भारत को रिकॉर्ड पांचवां आईसीसी अंडर-19 विश्व कप का खिताब दिलाया था।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट में न्यूजीलैंड ने शिकंजा कसा

क्राइस्टचर्च। हेनरी निकोल्स के आठवें टेस्ट शतक की मदद से न्यूजीलैंड ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन पहली पारी में 387 रन की बढत बना ली जबकि दूसरी पारी में भी मेहमान टीम ने तीन विकेट 34 रन पर गंवा दिये। निकोल्स के शतक, विकेटकीपर टॉम ब्लंडेल के 96 रन, कोलिन डे ग्रांडहोमे के 45 और दक्षिण अफ्रीका मूल के नील वेगनेर के 49 रन की मदद से न्यूजीलैंड ने पहली पारी में 482 रन बनाये। दक्षिण अफ्रीका टीम पहली पारी में 95 रन पर आउट हो गई थी। पहले दिन 23 रन देकर सात विकेट लेने वाले मैट हेनरी ने 11वें नंबर पर 58 रन की पारी खेली। हेनरी और ब्लंडेल ने आखिरी विकेट के लिये 96 रन जोड़े। दूसरे दिन का खेल समाप्त होने से पहले नौ ओवर दक्षिण अफ्रीका पर भारी पड़े। दूसरी पारी की दूसरी ही गेंद पर उसने सारेल एरवी का विकेट गंवा दिया। कप्तान डीन एल्गर खाता खोले बिना आउट हो गए जबकि एडेन मार्कराम दो रन ही बना सके। दक्षिण अफ्रीका का स्कोर चार रन पर तीन विकेट था जिसके बाद तेम्बा बावुमा (22) और रासी वान डेर डुसेन (नौ) ने पारी को संभाला। इससे पहले निकोल्स ने न्यूजीलैंड के लिये 105 रन बनाये। उन्होंने 267 मिनट तक क्रीज पर डटकर बल्लेबाजी की और तीसरे विकेट के लिये वेगनेर के साथ 80 रन जोड़े। न्यूजीलैंड ने तीन विकेट पर 116 रन से आगे खेलना शुरू किया था और ऐसे समय में एक विकेट और गिरने पर तस्वीर कुछ और होती।

जोकोविच का दुबई पहुंचने पर गर्मजोशी से स्वागत

दुबई। कोरोना का टीका नहीं लगवाने के कारण आस्ट्रेलिया ओपन नहीं खेल सके सर्बिया के टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच का बृहस्पतिवार को दुबई पहुंचने पर गर्मजोशी से स्वागत किया गया और वह दुबई एक्सपो में भी गए। जोकोविच यहां ड्यूटी फ्री टेनिस चैम्पियनशिप खेलने आये हैं। उन्होंने एक्सपो 2020 में सर्बिया के पवेलियन का भी दौरा किया और प्रशंसकों के साथ सेल्फी खिंचवाई। पवेलियन में उनकी चैरिटी नोवाक जोकोविच फाउंडेशन के लिये एक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया था। यह फाउंडेशन सर्बिया में बाल शिक्षा के लिये काम करता है। .

मुश्ताक ने पाकिस्तान दौरे के लिये आस्ट्रेलिया को धन्यवाद दिया

कराची। पाकिस्तान के मुख्य कोच सकलेन मुश्ताक ने ऐतिहासिक श्रृंखला के लिये पाकिस्तान का दौरा करने पर आस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम को धन्यवाद दिया है। आस्ट्रेलियाई टीम 24 साल बाद पाकिस्तान दौरे पर 27 फरवरी को पहुंचेगी और यहां उसे तीन टेस्ट, तीन वनडे और एक टी20 मैच खेलना है। मुश्ताक ने कहा, मैं 24 साल बाद पाकिस्तान आने के लिये आस्ट्रेलिया को धन्यवाद देता हूं। मुझे यकीन है कि यह रोचक श्रृंखला होगी। उन्होंने कहा, पाकिस्तान में सभी चाहते हैं कि क्रिकेट टीमें यहां आकर खेलें।हम खुल दिल से पूरी दुनिया का इस्तकबाल करते हैं।

हरियाणा स्टारआईपीएल: लखनऊ सुपर जायंट्स ने सीएम योगी को गिफ्ट किया पहला बल्ला

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की नई टीम लखनऊ सुपर जायंट्स ने टूनार्मेंट शुरू होने से पहले टीम का पहला बल्ला उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को गिफ्ट किया है। टीम के मालिक संजीव गोयनका और लखनऊ टीम के मेंटर गौतम गंभीर ने राजधानी लखनऊ में मुख्यमंत्री आदित्यनाथ से मुलाकात की और उन्हें टीम की ओर से पहला बल्ला गिफ्ट किया।

लखनऊ सुपर जायंट्स ने ट्विटर पर गौतम गंभीर और संजीव गोयनका की आदित्यनाथ के साथ मुलाकात की तस्वीर साझा करते हुए लिखा कि लखनऊ सुपर जायंट्स की ओर से पहला बल्ला मुख्यमंत्री आदित्यनाथ को भेंट किया गया, उनके समर्थन के लिए आभार। उल्लेखनीय है कि इस बार आईपीएल में दो नई टीमें जुड़ रही हैं। इनमें लखनऊ सुपर जायंट्स के अलावा गुजरात टाइटंस का नाम शामिल है। लखनऊ सुपर जायंट्स टीम आईपीएल की सबसे महंगी टीम है। आरपीएसजी ग्रुप ने 7090 करोड़ रुपये में खरीदा था, जबकि सीवीसी ग्रुप ने अहमदाबाद की टीम को 5625 करोड़ रुपये में खरीदा था लखनऊ ने गौतम गंभीर को टीम का मेंटर नियुक्त किया है तथा जिम्बाबे के पूर्व दिग्गज एंडी फ्लावर को मुख्य कोच बनाया है। भारतीय बल्लेबाज केएल राहुल को कप्तान नियुक्त किया है।

बिलासपुर में विभिन्न खेलों के लिए ट्रायल 24 से, चुने हुए खिलाड़ियों को मिलेगी कई सुविधाएं

नाहन। राज्य का युवा सेवा एवं खेल विभाग खेलो इंडिया उत्कृष्टता केंद्र बिलासपुर, राज्य खेल छात्रावास बिलासपुर तथा ऊना में 2022-23 सत्र के लिए ट्रायल आयोजित करेगा। सिरमौर जिला युवा सेवा एवं खेल अधिकारी मनुज शर्मा ने बताया कि एथलेटिक्स जूडो और बॉक्सिंग के लिए ट्रायल 24 और 25 फरवरी को, कबड्डी, हॉकी हैंडबॉल के लिए ट्रायल 25 फरवरी, वॉलीबॉल, कुश्ती के लिए 26 फरवरी को खिलाड़ियों का ट्रायल कहलूर खेल परिसर लूहणु में किया जाएगा। सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को प्रातः 9:00 बजे कहलूर खेल परिसर के मैदान में अपना पंजीकरण करवाना होगा। प्रतिभागी खिलाड़ियों की आयु 13 वर्ष से 15 वर्ष के बीच होनी चाहिए तथा 13 वर्ष के आयु वर्ग के खिलाड़ी की लंबाई 158 सेंटीमीटर तथा वजन 43 किलोग्राम और 14 वर्ष आयु वर्ग के खिलाड़ी की लंबाई 164 सेंटीमीटर और वजन 49 किलोग्राम होना चाहिए। इसी तरह, 15 वर्ष के आयु वर्ग के खिलाड़ी की लंबाई 165 सेंटीमीटर तथा वजन 50 किलोग्राम होना चाहिए।

सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों का ट्रायल प्रातः 10:00 बजे से आरंभ हो जाएगा। ट्रायल में भाग लेने वाले इच्छुक प्रतिभागियों को विभाग की तरफ से टीए-डीए नहीं दिया जाएगा। ट्रायल के दौरान चुने हुए खिलाड़ियों को मुफ्त आवास, भोजन, चिकित्सा, बीमा, खेल सामान व आधुनिक ढंग से प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। सभी चयनित खिलाड़ी अपनी पढ़ाई किसी भी स्थानीय स्कूल या कॉलेज से जारी रख सकते हैं। संबंधित खेलों में राज्य, राष्ट्रीय, सब जूनियर, जूनियर व स्कूली स्तर के पदक विजेता खिलाड़ी न्यूनतम शारीरिक मापदंड नहीं पूरी करने पर भी चयन प्रक्रिया में प्रवेश के लिए पात्र होंगे तथा आयु सीमा भी 13 से 19 वर्ष के बीच अनिवार्य होगी, लेकिन वरीयता 13 से 15 वर्ष की आयु के खिलाड़ियों को दी जाएगी।

भारत ने दूसरे टी20 मुकाबले में वेस्टइंडीज को आठ रनों से हराया, 2-0 से बनाई अजय बढ़त

कोलकाता। कोलकाता के ईडेन गार्डेंस में शुक्रवार को तीन मैचों की टी-20 सीरीज के दूसरे मुकाबले में भारतीय टीम ने वेस्टइंडीज को आठ रनों से हरा दिया। इस जीत के साथ भारत ने सीरीज में 2-0 से अजेय बढ़त बना ली है। सीरीज का तीसरा टी-20 मुकाबला रविवार को इसी ग्राउंड पर खेला जाएगा।मुकाबले में वेस्टइंडीज की टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम ने 20 ओवर में 5 विकेट पर 186 रन बनाए और मेजबान टीम को

187 रनों का लक्ष्य दिया। इसके जवाब में वेस्टइंडीज की टीम 20 ओवरों में 3 विकेट के नुकसान पर 178 रन ही बना सकी।

186 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज टीम की शुरूआत अच्छी रही। शुरूआत पांच ओवरों में टीम ने 34 रन बनाए। छठे ओवर में टीम को पहला झटका लगा। काइल मेयर्स को यजुवेंद्र चहल ने 9 रन पर आउट किया। दूसरा झटका नौवें ओवर में लगा। रवि बिश्नोई ने ब्रेंडन किंग को 22 रन पर पवेलियन भेजा। इसी तरह तीसरा झटका 19वें ओवर में लगा। निकोलस पूरन 61 रन बनाकर भुवनेश्वर कुमार की गेंद पर आउट हुए। रोवमन पावेल ने 36 गेंदों पर नाबाद 68 रनों की पारी खेली जबकि पोलार्ड 3 रन बनाकर नाबाद रहे।

भुवनेश्वर में हॉकी प्रो लीग के खेलों में दर्शकों के स्टेडियम के भीतर जाने पर लगी रोक

भुवनेश्वर। हॉकी इंडिया (एचआई) और अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) ने यहां कलिंगा हॉकी स्टेडियम में होने वाले आगामी डबल-हेडर वीकेंड प्रो लीग 2021/2022 मैचों के लिए दर्शकों को अनुमति नहीं देने का फैसला किया है।

भारतीय पुरुष और महिला टीमें 26 और 27 फरवरी को स्पेन के खिलाफ खेलेंगी, जिसके बाद 12 और 13 मार्च को जर्मनी के खिलाफ मैच होंगे। पुरुष टीम फिर 19 और 20 मार्च को अर्जेंटीना से डबल हेडर में भिड़ेगी। पुरुष और महिला टीमें भी दो और तीन अप्रैल को इंग्लैंड से खेलेंगी।

हॉकी इंडिया द्वारा शुक्रवार को जारी एक बयान में कहा गया है कि भुवनेश्वर (उड़ीसा) में खेल की लोकप्रियता और स्टेडियम में भीड़ ने उन्हें मैचों के लिए दर्शकों को अनुमति देने की अपनी योजना पर पुनर्विचार करने को कहा है।

एचआई के बयान में कहा गया है, इस क्षेत्र में खेल की व्यापक लोकप्रियता और स्टेडियम में अपेक्षित भीड़ के साथ आयोजकों का मानना है कि, लोगों की संख्या को नियंत्रित करना और फिर गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित कोविड-19 दिशानिर्देशों और प्रोटोकॉल का पालन करना, यह संभव नहीं होगा। मौजूदा कोविड-19 महामारी की स्थिति के कारण सामाजिक गड़बड़ी एक प्राथमिकता है और प्रशंसकों और एथलीटों की सुरक्षा को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। बयान में आगे कहा गया है कि, कलिंगा हॉकी स्टेडियम, भुवनेश्वर में एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2021/2022 के आगामी घरेलू टूनार्मेंट हॉकी इंडिया और एफआईएच 26 फरवरी से शुरू होगा। एचआई ने कहा कि स्टेडियम केवल मान्यता प्राप्त परिचालन कर्मचारियों, टूनार्मेंट के प्रतिभागियों और प्रायोजकों को अनुमति देगा।

एचआई ने कहा, आयोजकों के लिए, टूनार्मेंट में भाग लेने वाली टीमों और सहयोगी स्टाफ के स्वास्थ्य और उनकी सुरक्षा सर्वोपरि है। जबकि स्टेडियम केवल मान्यता प्राप्त परिचालन कर्मचारियों, टूनार्मेंट के प्रतिभागियों के लिए खुला होगा। हॉकी इंडिया और एफआईएच द्वारा आमंत्रित प्रायोजकों, भाग लेने वाले संगठनों के कर्मचारियों, प्रतिनिधियों और मेहमानों के लिए, मैचों का दुनिया भर के प्लेटफार्मों पर इसका सीधा प्रसारण किया जाएगा और प्रशंसक अपनी पसंदीदा टीमों और खिलाड़ियों के प्रदर्शन का उत्साह मनाएंगे। वहीं, मार्च में होने वाले मैचों के लिए फरवरी के अंत में स्थिति की समीक्षा की जाएगी।

चौथा टी20 मैच जीतने के लिए ऑस्ट्रेलिया को टक्कर देगी श्रीलंकाई टीम

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया की टीम शुक्रवार को यहां मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में चौथे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में श्रीलंका के खिलाफ जीत हासिल करने के लिए मैदान पर उतरेगी। हालांकि, टीम ने पांच मैचों की सीरीज में 3-0 से कब्जा कर लिया है। वहीं, श्रीलंका की टीम चौथा मैच जीतने और क्लीन स्वीप से बचने के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम को कड़ी टक्कर देगी। 15 फरवरी को कैनबरा के मनुका ओवल में कम स्कोर वाले मैच में छह विकेट से जीत के बाद मेजबान टीम ने पांच मैचों की श्रृंखला में 3-0 की बढ़त ले ली है। पहले दो मैचों में अपना सर्वश्रेष्ठ देने के बावजूद, श्रीलंका तीसरे टी20आई में आंशिक रूप से वापसी करने में विफल रहा क्योंकि उनके कई खिलाड़ी ऑस्ट्रेलिया आने के बाद से कोविड-19 की चपेट में आ गए हैं। श्रीलंकाई गेंदबाजों ने पूरी सीरीज में शानदार प्रदर्शन किया है लेकिन बल्लेबाजों का अच्छा प्रदर्शन नहीं रहा है। पहले टी20 आई में, श्रीलंका ऑस्ट्रेलिया को मैच में टक्कर देता रहा, लेकिन बल्लेबाजों के अच्छा प्रदर्शन नहीं करने के बाद वह मैच हार गई। पथुम निसांका एकमात्र टीम के बल्लेबाज रहे, जिन्होंने श्रृंखला में अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन दूसरे टी20 आई में उनकी 73 रनों की शानदार पारी तब बेकार गई जब टीम सुपर ओवर में मैच हार गए। श्रीलंका के लिए तीसरे टी20 में मजबूती से बाहर आने की उम्मीदें थीं, लेकिन गेंदबाजों ने उन्हें परेशान करना जारी रखा, जिससे मेजबान टीम एक बार फिर से खिलाड़ियों पर हावी हो गई।

तीसरे मैच से पहले कोविड-19 से संक्रमित होने के बाद वानिंदु हसरंगा की अनुपस्थिति टीम के लिए एक बड़ा झटका बन गई। महत्वपूर्ण समय पर विकेट लेने की उनकी क्षमता ने श्रीलंका को पहले दो टी20 आई में बल्लेबाजों पर दबाव बनाने में मदद की थी। हसरंगा की अनुपस्थिति में, महेश दीक्षाना ने लंका के गेंदबाजी आक्रमण का नेतृत्व कर शानदार प्रदर्शन किया लेकिन अन्य गेंदबाजों से टीम को कोई समर्थन नहीं मिला। श्रीलंका के पास अंतिम दो टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में जीत के लिए चरित असलंका, दनुष्का गुणातिलक और कुसल मेंडिस जैसे बल्लेबाजों के लिए अपने बल्ले से योगदान देना महत्वपूर्ण होगा। हालांकि मेजबान टीम ने सीरीज तो जीत ली है, लेकिन जीत उनके लिए आसान नहीं है। सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर और एरोन फिंच की फॉर्म से जूझने के कारण बल्लेबाज अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए। हालांकि, उनके गेंदबाजों ने असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन किया है, विशेष रूप से फिर से फिट गेंदबाज जोश हेजलवुड ने तीन मैचों में आठ विकेट लिए हैं।

अब जबकि सीरीज में कब्जा करने के बाद, उनके प्रमुख पेसर टेस्ट कप्तान पैट कमिंस, मिशेल स्टार्क और हेजलवुड को आराम दिया गया है और अगले टी20 विश्व कप से टीम सिर्फ छह महीने दूर हैं। कैनबरा में पिछले टी20 के दौरान, ऑस्ट्रेलिया छह विकेट से आसान जीत हासिल करने में सफल रहा। ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर श्रीलंका को बल्लेबाजी दी थी। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान फिंच ने आईसीसी के हवाले से कहा, हम टीम को मजबूत बनाने के लिए खिलाड़ियों का फेरबदल कर रहे हैं। वास्तव में ये बहुत अच्छे संकेत हैं। अगर हम एक विशेष संयोजन के साथ अपनी टीम बनाना चाहते हैं, तो हमे कुछ खिलाड़ियों को आजमाने की जरूरत है। हमे टीम में सात बल्लेबाजों की जरूरत है जो खेल को आगे तक ले जाएं।

मेरे पिता ऑटो चलाकर रोजाना मुझे 60 रुपये स्टेडियम जाने के लिए देते थे : मोहम्मद सिराज

बेंगलुरू। भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने कहा है कि उनके पिता एक ऑटो चालक थे, जो उन्हें हैदराबाद के उप्पल स्टेडियम जाने के लिए केवल 60 रुपये प्रतिदिन देते थे। सिराज वहां मैच सीखने के लिए जाते थे। सिराज को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की ओर से रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु ने ऑस्ट्रेलिया के ग्लेन मैक्सवेल और पूर्व कप्तान विराट कोहली के साथ मेगा नीलामी से पहले बरकरार रखा था। उन्होंने शुक्रवार को आरसीबी पॉडकास्ट में कहा कि आईपीएल ने उन्हें प्रसिद्धि दी और उन्हें सामाजिक दायरे में रहने के तरीके को सिखाया। उन्होंने कहा, जब मैं स्टेडियम में अभ्यास के लिए जाता था, तो मेरे परिवार ने उस दौरान काफी संघर्ष किया था। मेरे पास केवल एक प्लेटिना (मोटरसाइकिल) थी। पिताजी मुझे पेट्रोल के लिए 60 रुपये देते थे। मैं उस रुपये से उप्पल स्टेडियम तक पहुंचने का प्रबंधन करता था, जो मेरे घर से काफी दूर था। सिराज ने कहा, जब मुझे आईपीएल के लिए चुना गया, तो परिवार की रुपये की समस्याएं समाप्त हो गई। पिताजी ने ऑटो चलाना बंद कर दिया, मां ने घर का काम करना बंद कर दिया, हमने किराए के मकान में रहना बंद कर दिया, हमने उस दौरान एक नया घर खरीदा। मुझे और कुछ नहीं चाहिए जीवन में।

गैंग रेप में दोषी करार हुआ ये दिग्गज खिलाड़ी, इंटरनेशनल अरेस्ट वॉरेंट जारी

ब्राजील। ब्राजील की फुटबॉल टीम के पूर्व स्ट्राइकर रोबिनियो को इटली की अदालत ने गैंग रेप में दोषी करार दिया है और उसके खिलाफ इंटरनेशनल अरेस्ट वॉरेंट जारी कर दिया है। ब्राजील का यह खिलाड़ी यूरोप के कई नामी फुटबॉल क्लब में खेल चुका है, उसने मैनचेस्ट सिटी, एसी मिलान जैसे क्लबों के लिए भी अपना खेल दिखाया है। इटली के न्याय मंत्रालय ने बुधवार को जानकारी दी कि उसे गैंग रेप में दोषी करार दिया है और वैश्विक एजेंसी इंटरपोल को उसे अरेस्ट करने को कहा है। इटली की जस्टिस मिनिस्ट्री ने इंटरपोल से कहा है कि वह रोबिनियो को अरेस्ट कर उसे सौंप दे। इटली ने इंटरपोल से इसलिए मदद मांगी है क्योंकि ब्राजील ने इस खिलाड़ी को दोषी करार नहीं दिया है, जिसका मतलब है कि वह ब्राजील में गिरफ्तार नहीं होगा, रोबिनियो अब तभी गिरफ्तार हो सकेगा, जब वह विदेशी यात्रा पर होगा। अदालत ने उसे 9 साल की सजा सुनाई है। 38 वर्षीय यह फुटबॉलर मौजूदा समय में ब्राजील में रह रहा है और उसने हमेशा इन आरोपों से इनकार किया है, इस फुटबॉलर को साल 2017 में मिलान की एक कोर्ट ने रोबिनियो समेत ब्राजील के 5 लोगों को एक महिला के साथ गैंग रेप में दोषी पाया था। अपील कोर्ट ने साल 2020 में इन 6 लोगों को दोषी करार दिया, जिसे इटली के सुप्रीम कोर्ट ने पिछले महीने मान्यता दी है।

रोबिनियो समेत इन 6 लोगों पर आरोप है कि उन्होंने एक डिस्कोथक्यू में महिला के साथ अल्कोहल लेने के बाद गैंग रेप किया था, रोबिनियो ने ब्राजील की ओर से 100 इंटरनेशनल मैच खेले हैं। जबकि वह रियाल मैड्रिड और मैनचेस्टर सिटी और एसी मिलान के लिए भी खेल चुका है।

बांग्लादेश दौरा: अफगानिस्तान टीम को राहत, सभी खिलाड़ियों की कोरोना रिपोर्ट निगेटिव आई

चटगांव। बांग्लादेश दौरे पर आई अफगानिस्तान क्रिकेट टीम को बड़ी राहत मिली है। बांग्लादेश के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला से पहले किए गए दूसरे रैपिड एंटीजन टेस्ट में अफगानिस्तान के सभी खिलाड़ी और सहयोगी स्टाफ की कोरोना रिपोर्ट निगेटिव आई है।

अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने एक बयान में कहा कि अफगानिस्तान और बांग्लादेश के बीच एकदिवसीय श्रृंखला की शुरूआत से पहले राहत भरी खबर है। अफगानिस्तान के सभी खिलाड़ी और सहयोगी स्टाफ के सदस्यों की बुधवार को किए गए दूसरे रैपिड एंटीजन टेस्ट की रिपोर्ट निगेटिव आई है। बोर्ड के अनुसार मंगलवार सुबह अफगानिस्तान टीम के कुछ सदस्य कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद खिलाड़ी 15 फरवरी से सिलहट में पृथकवास पर थे जहां एकदिवसीय श्रृंखला से पहले उन्हें हफ्ते भर की ट्रेनिंग और अनुकूलन शिविर में हिस्सा लेना था। कुछ सदस्यों के पॉजिटिव पाए जाने के बाद टीम को मंगलवार को अपना अभ्यास सत्र रद्द करना पड़ा था। अब कोविड-19 परीक्षण के नतीजे निगेटिव आने के बाद अफगानिस्तान की टीम ने गुरुवार से तैयारी शुरू कर दी है।

उल्लेखनीय है कि एकदिवसीय श्रृंखला का पहला मैच 23 फरवरी को चटगांव में खेला जाएगा।

न्यूजीलैंड ने रिकॉर्ड रन चेस कर, भारतीय महिला टीम के खिलाफ सीरीज में 3-0 से बनाई अजेय बढ़त

क्वीन्सटाउन। भारत न्यूजीलैंड के खिलाफ चल रही सीरीज में शुक्रवार को यहां ओवल में कीवियों की महिला टीम ने रिकॉर्ड लक्ष्य का पीछा किया, जिसमें लॉरेन डाउन ने शानदार नाबाद 64 रनों की पारी खेली। इस जीत के साथ, न्यूजीलैंड महिला टीम ने पांच मैचों की श्रृंखला में 3-0 की अजेय बढ़त बना ली है, और अगले महीने आत्मविश्वास से भरे आईसीसी महिला विश्व कप में उतरेगी। भारतीय बल्लेबाजों के तीन बेहतरीन अर्धशतकों ने टीम को 49.3 ओवर में 279 रन बनाए, लेकिन मेजबान टीम भी उतनी ही प्रभावशाली थी और पांच गेंद शेष रहते लक्ष्य को पूरा करने में सफल रही। 20 ओवरों के अंदर 128 रनों की आवश्यकता थी, जब डाउन ने 52 गेंदों में नाबाद 64 रन बनाए, आखिरी ओवर की पहली गेंद पर एक छक्का लगाकर पांच गेंद शेष रहते टीम को बेहतरीन जीत दिलाई। डाउन को केटी मार्टिन (35) और फ्रेंकी मैके (12 गेंदों में नाबाद 17) का साथ मिला, जो कि असंभव लक्ष्य पीछा करने के लिए 171/6 से वापसी की गई थी। यह महिला एकदिवसीय इतिहास में न्यूजीलैंड का सबसे सफल रन चेस था और कुल मिलाकर दूसरा सबसे बड़ा लक्ष्य था। इससे पहले, भारत के 279 रनों पर न्यूजीलैंड के लिए एमी सैटरथवेट (59) और अमेलिया केर (67) ने शानदार पारी खेली, वहीं, सोफी डिवाइन (0) और सूजी बेट्स (5) जल्द ही पवेलियन लौट गईं, जिससे टीम का स्कोर तीसरे विकेट के नुकसान पर 103 रन बनाए थे। झूलन गोस्वामी ने पिछले साल ऑस्ट्रेलिया के दौरे में 3/47 का दावा करते हुए विश्व स्तरीय गुणवत्ता के साथ गेंदबाजी करना जारी रखा, लेकिन डाउन ने टीम की नैया पार लगाई। इससे पहले, भारत ने टॉस हारने के बाद शानदार शुरूआत की, क्योंकि 10 ओवरों में बिना विकेट खोए 86 रन जोड़े, सभिनेनी मेघना (41 गेंदों में 61 रन) ने 33 गेंदों में अपना पहला वनडे अर्धशतक दर्ज किया। वहीं, मेघना ने अपने 61 रनों में नौ चौके और दो छक्के लगाए। मेघना के साथ शैफाली वर्मा भी थीं, जिन्होंने 57 गेंदों में 51 की ताबड़तोड़ पारी खेली, हालांकि न्यूजीलैंड ने बीच के ओवरों में तेज गेंदबाजी और बेहतर फिल्डिंग के प्रयासों से मैच में वापसी की। रोजमेरी मैयर (10 ओवरों में 2/43) ने बीच के ओवरों में भारत को परेशान किया, जिससे उनकी रन बनाने की गति पर अंकुश लग गया लेकिन दीप्ति शर्मा (नाबाद 69) ने पारी को फिर तेजी से आगे बढ़ाया, जिससे भारत एक विशाल स्कोर तक पहुंच सका।

यूक्रेन संकट पर वाणिज्यिक उपग्रहों से प्राप्त चित्रों से मिल रही है जानकारी

वाशिंगटन। वाणिज्यिक उपग्रह से प्राप्त चित्रों में सामने आया है कि रूस की सेनाएं यूक्रेन को घेर रही हैं हालांकि, इस तस्वीरों की अपनी सीमाएं हैं। मैक्सर जैसी कंपनियों के वाणिज्यिक उपग्रहों से हाल में प्राप्त उच्च गुणवत्ता वाले चित्रों में सामने आया है कि यूक्रेन से लगती सीमा पर रूस के सैनिक, एयरफील्ड और तोपखाना तैनात किया जा रहा है। दक्षिण बेलारूस और क्रीमिया में भी सैन्य जमावड़े की गतिविधियां सामने आई हैं जिसे रूस से 2014 में यूक्रेन से हथिया लिया था। इन तस्वीरों से अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के अधिकारियों के दावे सही प्रतीत होते हैं कि रूसी सेनाएं उस स्थिति में हैं जहां से वह यूक्रेन पर हमला कर सकती हैं। हालांकि, वाणिज्यिक उपग्रहों से प्राप्त तस्वीरों में इसकी पुष्टि नहीं हो सकती कि रूस के कितने सैनिक एकत्र हैं या यूक्रेन पर हमला होगा या नहीं। अमेरिकी नौसेना के सेवानिवृत्त एडमिरल जेम्स स्टाव्रिडिस ने कहा कि मैक्सर से प्राप्त तस्वीरों से अच्छी जानकारी मिल सकती है लेकिन उतनी सटीक सूचना नहीं मिल सकती जितना अमेरिकी नेताओं को मिलती है।

अमेरिकी सीनेट भी यूक्रेन के साथ, सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित

वाशिंगटन। यूक्रेन पर रूस के हमले की आशंकाओं के बीच अमेरिकी सीनेट ने यूक्रेन के साथ होने की बात कही है। इस संबंध में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव में रूस के संभावित हमले की स्थिति में स्वतंत्र और लोकतांत्रिक यूक्रेन के समर्थन की बात कही गई है।

अमेरिकी सीनेट ने यूक्रेन की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने का प्रस्ताव पारित किया है। इसके लिए राजनीतिक व राजनयिक मदद के साथ अतिरिक्त घातक और गैर-घातक सुरक्षा सहायता प्रदान करने की वचनबद्धता प्रकट की गई है। यह भी कहा गया है कि क्षेत्रीय अखंडता को बहाल करने के लिए यूक्रेन की सरकार के प्रयासों का समर्थन किया जाएगा। अमेरिकी सीनेट ने राष्ट्रपति जो बाइडन से यूक्रेन पर रूसी हमले की स्थिति में तत्काल पाबंदियां लगाने को भी कहा गया है।

प्रस्ताव में कहा गया है कि यदि रूस यूक्रेन पर हमला करे तो राष्ट्रपति बाइडन उस पर भारी जुमार्ना लगाएं। सीनेट ने कहा कि यूरोप में शांति बहाल करने के लिए यह कदम उठाना जरूरी होगा। इस संबंध में रूस की ओर से दावा किया गया है कि इस प्रस्ताव में रूस के खिलाफ जंग छेड़ने या सैन्य ताकत के इस्तेमाल जैसी बातें नहीं हैं।

उधर, रूस के रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता इगोर कोनाशेनकोव ने एकबार फिर दावा किया है कि रूस ने यूक्रेन के साथ सीमा से अपने कुछ बलों को वापस बुला लिया है। यूक्रेन पर आक्रमण करने की किसी भी योजना से इनकार करने के साथ रूस ने जोर देकर कहा है कि रूसी सीमाओं के पास नाटो की बढ़ती उपस्थिति से उसकी अपनी सुरक्षा खतरे में है।

अमेरिकी न्यायाधीश ने ट्रंप को जांच के सिलसिले में बयान दर्ज कराने का आदेश दिया

न्यूयॉर्क (अमेरिका)। अमेरिका में एक न्यायाधीश ने बृहस्पतिवार को आदेश दिया कि पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपनी कारोबारी गतिविधियों की जांच के सिलसिले में सवालों के जवाब दर्ज कराएं।

न्यायाधीश आर्थर एन्गोरोन ने आदेश दिया कि ट्रंप और उनके दो बच्चे इवांका तथा डोनाल्ड ट्रंप जूनियर न्यूयॉर्क के अटॉर्नी जनरल लेतिशिया जेम्स द्वारा दिसंबर में जारी किए गए सम्मन का पालन करें। उन्होंने कहा कि ट्रंप और उनके दो बच्चे 21 दिनों के अंदर अपने बयान दर्ज कराएं। न्यायाधीश ने ट्रंप और जेम्स के कार्यालय के वकीलों की दो घंटे तक चली जिरह के बाद यह फैसला दिया। अदालत ने कहा, अंतिम विश्लेषण में, राज्य के अटॉर्नी जनरल ने एक कारोबारी ईकाई की जांच शुरू की और संभावित वित्तीय धोखाधड़ी के प्रचुर सबूतों का पता लगाया तथा वह इस कारोबार से जुड़े कई लोगों से सवाल-जवाब करना चाहती हैं। उनके पास ऐसा करने का स्पष्ट अधिकार है। इस फैसले के खिलाफ अपील की जा सकती है। ट्रंप के प्रवक्ता ने अभी इस फैसले पर कोई टिप्पणी नहीं की है। जेम्स ने कहा कि उनकी जांच में ऐसे सबूत मिले हैं कि ट्रंप की कंपनी ने कर्ज और कर में छूट लेने के लिए गोल्फ कोर्स और स्काईस्क्रैपर्स जैसी संपत्तियों के मूल्यांकन में फजीर्वाड़ा किया।

ब्राजील में भूस्खलन, बाढ़ से मरने वालों की संख्या 105 तक पहुंची, 140 लोग लापता

ब्राजील। ब्राजील के रियो डी जनेरियो राज्य के पेट्रोपोलिस शहर में इस सप्ताह की शुरूआत में भारी बारिश के कारण हुए भूस्खलन और बाढ़ के कारण मरने वालों की संख्या बढ़कर 105 हो गई, जबकि 140 लोग अभी भी लापता हैं।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, गुरुवार को एक बयान में, रियो डी जनेरियो नागरिक सुरक्षा अधिकारियों ने कहा कि कम से कम 400 अग्निशामक बचे लोगों की तलाश के लिए सेना के कर्मियों के साथ काम कर रहे हैं, भूस्खलन और बाढ़ से पेट्रोपोलिस का एक बड़ा हिस्सा नष्ट हो गया है। रियो डी जनेरियो शहर से लगभग 68 किमी उत्तर में स्थित पहाड़ी शहर में मंगलवार को भारी बारिश के कारण 50 से अधिक भूस्खलन हुए। 500 से अधिक परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया, जबकि बिजली ग्रिड और पेयजल आपूर्ति भी प्रभावित हुई।

रियो डी जनेरियो राज्य के गवर्नर क्लाउडियो कास्त्रो ने परिस्थितियों की तुलना युद्ध की स्थिति से की, जबकि पेट्रोपोलिस के मेयर के कार्यालय ने सार्वजनिक आपदा की स्थिति का फैसला किया और अगले 48 घंटों में और अधिक बारिश की संभावना के बारे में आबादी को अलर्ट जारी किया।

इजरायल ने पाकिस्तान के साथ सैन्य अभ्यास में लिया हिस्सा

नई दिल्ली। इजरायली नौसेना ने पुष्टि की है कि उसने पाकिस्तान, सऊदी अरब और कुछ अन्य देशों के साथ अमेरिका के नेतृत्व वाले अभ्यास में भाग लिया है, जिनके यहूदी देश के साथ राजनयिक संबंध नहीं हैं।

अमेरिकी नौसेना ने गुरुवार को एक बयान में कहा कि 31 जनवरी से शुरू हुए अंतरराष्ट्रीय समुद्री अभ्यास (आईएमएक्स) में 60 सेनाओं के 9,000 से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया।

प्रतिभागियों में पाकिस्तान, सऊदी अरब, ओमान, कोमोरोस, जिबूती, सोमालिया और यमन शामिल थे, जिनके इजरायल के साथ राजनयिक संबंध नहीं हैं।

कई देशों के साथ इजरायल ने हाल ही में संबंधों को सामान्य किया है- जैसे संयुक्त अरब अमीरात और बहरीन - ने भी अभ्यास में भाग लिया। रिपोर्ट में कहा गया है कि बहरीन अमेरिका का करीबी सहयोगी है और अमेरिकी नौसेना के पांचवें बेड़े की मेजबानी करता है।

अमेरिकी नौसेना ने कहा कि द्विवार्षिक अभ्यास 2012 में शुरू किया गया था और यह मध्य पूर्व में सबसे बड़ा बहुराष्ट्रीय नौसैनिक अभ्यास बन गया है।

इजराइली मीडिया ने बताया कि यह उन देशों के साथ सैन्य अभ्यास में देश की पहली भागीदारी थी, जिनके राज्य के साथ राजनयिक संबंध नहीं हैं।

यूएस 5वें फ्लीट के प्रमुख, एडमिरल ब्रैड कूपर ने भी दोनों नौसेनाओं के बीच बढ़ते संबंधों की सराहना की। कूपर ने कहा, यह संयुक्त अभ्यास अंतरराष्ट्रीय कानून और व्यवस्था की रक्षा के लिए हमारे ध्ढ़ संकल्प को प्रदर्शित करता है। यह हमारे नौसैनिक संबंधों को मजबूत करने के लिए हमारी अंतर-क्षमता का विस्तार करने का एक विशेष अवसर है।

विश्व में कोरोना से जान गंवाने वालों की संख्या पहुंची 58.62 लाख के पार

वाशिंगटन। कोरोना वायरस महामारी की रफ्तार भारत सहित दुनिया के कई हिस्सों में भले ही धीमी पड़ती नजर आ रही है, लेकिन नये मामले और इससे होने वाली मौतों का क्रम अब भी बना हुआ है, जो चिंता का विषय है।

दुनिया भर में कोरोना वायरस संक्रमण की चपेट में आकर मरने वालों की संख्या बढ़कर 58,62,560 हो गयी है तथा संक्रमितों की संख्या बढ़कर 41,96,83,838 हो गयी है।

अमेरिका की जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के कोरोना वायरस रिसोर्स सेंटर की तरफ से दी गई जानकारी के मुताबिक, अब तक विश्व भर में कोरोना वैक्सीन की कुल 10,30,46,87,211 डोज दी जा चुकी है।

दुनिया भर में कोरोना संक्रमण के शीर्ष दस देशों में अमेरिका पहले स्थान पर है, जहां इस महामारी के कुल मामलों की संख्या 7,82,69,443 और अब तक कुल 9,31,741 लोगों की मौत हो चुकी है।

दूसरे स्थान पर भारत है, जहां कोविड संक्रमितों की कुल संख्या 4,27,80,235 हो गई है जबकि कोविड-19 के कारण अब तक जान गंवाने वाले लोगों का आंकड़ा बढ़कर 5,10,905 हो गया है।

इसके बाद इटली तीसरे स्थान पर है, जहां संक्रमितों की कुल संख्या 1,23,23,398 है, जबकि देश में मृतकों का आंकड़ा 1,52,282 हो गया है।

ब्राजील में कोरोना से अब तक 2,79,40,119 लोग संक्रमित हुए हैं तथा 6,42,156 लोगों की मौत हो चुकी है। फ्रांस में कोविड-19 से 2,22,23,882 लोग संक्रमित हुए हैं तथा 1,37,143 लोगों की मौत हुई है।

जर्मनी में वैश्विक महामारी से अभी तक 1,33,09,040 लोग प्रभावित हुए हैं। देश में मृतकों का आंकड़ा 1,20,997 तक पहुंच गया है। वहीं, ब्रिटेन में अभी तक करीब 1,86,28,702 लोग इस महामारी से प्रभावित हो चुके हैं, जबकि 1,60,785 लोगों की इस जानलेवा वायरस से मौत हो चुकी है। स्पेन में कोरोना से अब तक 1,07,78,607 लोग प्रभावित हुए हैं तथा 97,710 लोगों की मौत हो चुकी है।

रूस में कोरोना के मामलों की संख्या बढ़कर 1,46,24,423 हो गई है और इस महामारी से अब तक 3,36,299 लोगों की मौत हो गयी है। तुर्की में कोरोना संक्रमितों की कुल संख्या 1,32,66,265 हो गई है। देश में कोरोना संक्रमण से अब तक 91,646 लोग जान गंवा चुके हैं।

चीन ने क्वाड की आलोचना करते हुए इसे छोटा गुट बताया

संयुक्त राष्ट्र। चीन ने भारत, जापान, आस्ट्रेलिया और अमेरिका को मिलाकर बनाए गए संगठन क्वाड की आलोचना करते हुए इसे छोटा गुट करार दिया और कहा कि इससे आपसी संघर्ष को बढ़ावा मिलेगा जो उन्हीं के लिए नुकसानदायक साबित होगा।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चीन के स्थायी प्रतिनिधि झांग जुआन ने गुरूवार को कहा एशिया प्रशांत क्षेत्र में देशों की गुटबाजी कर अमेरिका त्रिपक्षीय तथा चतुर्पक्षीय छोटे गुटों का निर्माण कर रहा है। ऐसा करके वह इस क्षेत्र में संघर्ष को बढ़ावा देने पर उतारू है।

गौरतलब है कि पिछले हफ्ते आस्ट्रेलिया की राजधानी मेलबर्न में इन चारों देशों के विदेश मंत्रियों ने एक बैठक में भारत -प्रशांत क्षेत्र में किसी भी देश की जोर जबदस्ती को दूर करने की अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की थी।

सुरक्षा परिषद में यूक्रेन मसले पर जुआन ने नाटो पर यूरोप में विवाद के साथ भारत प्रशांत क्षेत्र के घटनाक्रम को जोड़ने की कोशिश की। उन्होंने अपने संबोधन में अमेरिका का नाम नहीं लिया लेकिन एक देश का जिक्र किया जो स्पष्ट करता है कि उनका इशारा किस तरफ था। जुआन ने कहा यह जो कर रहा है वह केवल एशिया प्रशांत को विभाजन और उथल-पुथल की तरफ ले जाएगा और इससे क्षेत्र के देशों की हानि होगी ।

इससे शांति और स्थिरता को गंभीर नुकसान होगा जबकि ऐसा करके उसे खुद के लिए कुछ भी नहीं मिल रहा है।

उन्होंने कहा, चीन संबंधित देशों से इतिहास से सबक लेने का आग्रह करता है। क्वाड देशों को आपसी विश्वास बढ़ाने और बातचीत तथा परामर्श के माध्यम से विवादों को निपटाने के ध्ष्टिकोण का पालन करना चाहिए। इस दिशा में वे विश्व शांति और क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान करने के लिए अधिक प्रयास करें।

उन्होंने रूस का समर्थन करते हुए कहा नाटो का विस्तार एक ऐसा मुद्दा है जिसे यूक्रेन से संबंधित मौजूदा तनाव से निपटने के दौरान नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। शीत युद्ध के मद्देनजर नाटो का निरंतर विस्तार हमारे समय की प्रवृत्ति के विपरीत है, जो सामान्य सुरक्षा बनाए रखना है। यह जितना विश्व के अन्य देशों पर लागू होता है उतना ही यूरोपीय क्षेत्र पर लागू होता है। लेकिन एक देश है जो शीत युद्ध की मानसिकता को त्यागने से इनकार करता है।

गौरतलब है कि क्वाड एक सुरक्षा गठबंधन नहीं है और इसका एक संगठन बनने का भी कोई घोषित लक्ष्य नहीं है। इसका अहम लक्ष्य क्षेत्रीय सहायता कार्यक्रमों में सहयोग पर रहा है। लेकिन हिंद-प्रशांत क्षेत्र को किसी देश की आक्रामकता और जबरदस्ती से मुक्त के लिए इसकी प्रतिबद्धता के बयान से चीन में बेचैनी है।

भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर, अमेरिकी विदेश मंत्री एंथानी ब्लिंकन ,ऑस्ट्रेलियाई विदेश मंत्री मारिस पायने और जापान के विदेश मंत्री हयाशी योशिमासा ने मेलबर्न बैठक के बाद एक संयुक्त बयान में कहा कि उन्होंने एक स्वतंत्र और खुले भारत- प्रशांत क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए भारत -प्रशांत देशों के प्रयासों का समर्थन किया। भारत-प्रशांत -एक ऐसा क्षेत्र जो समावेशी और लचीला है, और ये देश अपने लोगों के हितों की रक्षा के लिए किसी भी तरह की जोर जबरदस्ती को विरोध करते हैं।

चीन का उल्लेख किए बिना क्वाड विदेश मंत्रियों ने कहाः क्वाड सहयोगी देश अंतरराष्ट्रीय कानून में निहित स्वतंत्र, खुली और समावेशी नियम-आधारित व्यवस्था का समर्थन करते हैं। यह क्षेत्रीय देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करता है।

रूस के यूक्रेन पर हमला करने की आशंका अब भी बहुत अधिक : बाइडन

कीव। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने आगाह किया है कि रूस आने वाले दिनों में यूक्रेन पर हमला कर सकता है। दुनियाभर के नेता इस संघर्ष का समाधान निकालने की कोशिशों में जुटे हैं लेकिन पूर्व और पश्चिम के बीच संदेह बढ़ता जा रहा है। नाटो सहयोगी देशों ने रूस के इस दावे को खारिज कर दिया है कि वह सीमा से सैनिकों को हटा रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि रूस ने यूक्रेन से लगती सीमा पर करीब 1,50,000 सैनिकों को एकत्रित किया है। पश्चिमी देशों में इस बात को लेकर चिंता बढ़ गयी है कि रूस इन सैनिकों के साथ आखिर कर क्या रहा है। ऐसा अनुमान है कि रूस के कुल जमीनी सैनिकों के 60 प्रतिशत सैनिक यूक्रेन सीमा पर जुटे हैं। क्रेमलिन का कहना है कि उसकी हमला करने की कोई योजना नहीं है लेकिन वह लंबे समय से यूक्रेन को अपना हिस्सा मानता रहा है और नाटो के विस्तार को अपने लिए खतरा मानता है। इन सब के बीच अमेरिकी सरकार ने अब तक की सबसे सख्त चेतावनी जारी की है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने अमेरिकी खुफिया एजेंसियों के एक निष्कर्ष की जानकारी दी, जिस पर अमेरिका और ब्रिटेन ने उम्मीद जतायी कि वे आक्रमण की किसी भी कोशिश का खुलासा करेंगे।

अमेरिका ने हालांकि अपने दावों के समर्थन में ज्यादा जानकारियां देने से इनकार कर दिया है। उन्होंने राजनयिकों से कहा कि आक्रमण को सही ठहराने के लिए रूस हिंसक घटना को अचानक अंजाम देता प्रतीत होता है। ब्लिंकन ने रूस के भीतर तथाकथित आतंकवादी बमबारी, ड्रोन हमले और रासायनिक हथियारों से फर्जी या असली हमले का जिक्र किया। अमेरिकी विदेश मंत्री ने कहा कि यूक्रेन में मिसाइल और बम हमलों के साथ साइबर हमलों से आक्रमण की शुरूआत होगी। उन्होंने कहा कि अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने संकेत दिया है कि रूस यूक्रेन के कुछ समूहों को भी निशाना बनाएगा। ब्लिंकन ने सुरक्षा परिषद के सदस्यों से कहा कि वह स्पष्ट कर देना चाहते हैं, मैं यहां आज युद्ध शुरू करने नहीं बल्कि उसे रोकने आया हूं। रूसी खतरे पर बाइडन की टिप्पणियां बेहद गंभीर है। व्हाइट हाउस में उन्होंने कहा कि वाशिंगटन को रूसी सेना की वापसी का कोई संकेत नहीं दिखा और उन्होंने कहा कि हमले का खतरा अब भी बहुत ज्यादा बना हुआ है क्योंकि रूस ने सैनिकों को वापस बुलाने के बजाय उन्हें यूक्रेन की सीमा की ओर भेजा है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने पत्रकारों से कहा, हमारे पास उपलब्ध जानकारियों से संकेत मिलता है कि वे यूक्रेन पर हमला करने के लिए तैयार हैं। व्हाइट हाउस ने बताया कि बाइडन की इस संबंध में ट्रांस-अटलांटिक नेताओं से शुक्रवार को फोन पर बात करने की योजना है।

अफगानिस्तान के बैंक की फ्रीज परिसंपत्तियों को विभाजित करने के बाइडेन के फैसले की अफगानी उद्योगपतियों ने निंदा की

काबुल। अफगानिस्तान वाणिज्य उद्योग मंडल और खनन संगठन ने अफगानिस्तान की सात अरब डालर की जमा फ्रीज परिसंपत्तियों को सितंबर 2001 के पीड़ितों तथा अफगानी लोगों के कल्याण संबंधी मद में विभाजित करने के अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के फैसले पर कड़ी आपत्ति की है। संगठन के कार्यकारी अध्यक्ष अल हाजी शाखी अहमद पैमान ने गुरूवार को यहां पत्रकारों को बताया अफगानिस्तान की पांच हजार फैक्टरियों और खदान कंपनियों की ओर से मैं बाइडेन के इस निर्णय की कड़ी निंदा करता हूं और यह अन्यायपूर्ण है। हम इसकी कड़ी निंदा करते हैं। उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान उद्योग मंडल और खदान संगठन में लगभग चार लाख लोग प्रत्यक्ष और 15 लाख लोग अप्रत्यक्ष रूप से काम कर रहे हैं। अमेरिका खुद को मानवाधिकारों और लोकतंत्र की आजादी का रहनुमा मानता है। अगर अमेरिका किसी भी तरह के बहाने की आड़ में अफगानिस्तान की परिसंत्तियों को अपने कब्जे में रखना चाहता है तो इस कदम का ना केवल अफगानिस्तान बल्कि विदेशों में भी विरोध किया जाएगा।

गुरूवार को हजारों अफगानियों ने बाइडेन के इस फैसले का कड़ा विरोध करते हुए विरोध प्रदर्शन किया और अफगानिस्तान की फ्रीज की गई परिसंपत्तियों को लौटाने की मांग की है। गौरतलब है कि 11 फरवरी को बाइडेन ने एक कार्यकारी आदेश में अफगानिस्तान के केन्द्रीय दा अफगानिस्तान बैंक की फ्रीज की गई परिसंपत्तियों में से कुछ हिस्सा अफगानी लोगों तथा कुछ हिस्सा वर्ष 2001 के आतंकी हमलों के शिकार अमेरिकी लोगों के परिजनों को देने की बात कही थी। इसमें कहा गया था कि व्हाइट हाऊस प्रशासन 3.5 अमेरिकी डालर की राशि अफगानी लोगों के कल्याण में इस्तेमाल करेगा और 3.5 अरब डालर से अधिक की राशि अमेरिका में ही रहेगी जो उस आतंकी हमलों के शिकार लोगों को अदालती फैसले के बाद दी जाएगी। गौरतलब है कि पिछले वर्ष अगस्त में अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद अफगानिस्तान के केन्द्रीय बैंक में विदशों में जमा नौ अरब डालर से अधिक की राशि तथा परिसंपत्तियां को फ्रीज कर दिया गया था। इनमें से सात अरब डालर के आरक्षित भंडार अमेरिका में थे और शेष राशि जर्मनी, संयुक्त अरब अमीरात, स्विटजरलैंड तथा अन्य देशों में थी।

यूक्रेन रूस के साथ बातचीत के लिए हमेशा तैयार है: किस्लित्स्या

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र में यूक्रेन के राजदूत सर्गेई किस्लित्स्या ने कहा कि यूक्रेन रूस के साथ बातचीत के लिए हमेशा तैयार है। श्री किस्लित्स्या ने गुरूवार को संवाददाता सम्मेलन में एक सवाल के जवाब में कहा, ह्लहम हमेशा बातचीत के लिए तैयार हैं।ह्व उन्होंने यह भी कहा कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने उन्हें संयुक्त राष्ट्र में रूस के राजदूत वसीली नेबेंजिया के साथ बैठने करने के लिए कहा था। श्री नेबेंजिया के कोरोना संक्रमित होने के कारण दोनों राजनयिकों के बीच अभी तक बातचीत नहीं हो पायी है।

यूक्रेन की सेना हमले की योजना नहीं बना रही है: जालुज्नी

कीव। यूक्रेन के कमांडर-इन-चीफ वेलेरी जालुज्नी ने कहा कि सशस्त्र बलों डोनबास के संघर्षग्रस्त पूर्वी क्षेत्र में हमले की योजना नहीं है। पिछले कई दिनों से यूक्रेन और डोनेट्स्क तथा लुहान्स्क सीमा पर माहौल तनावपूर्ण है और दोनों पक्ष एक दूसरे पर गोलीबारी का आरोप लगा रहे है। श्री जालुज्नी ने गुरुवार देर रात रक्षा मंत्रालय के हवाले से कहा, ह्लहम आधिकारिक तौर पर घोषणा कर रहे हैं कि यूक्रेन के सशस्त्र बल पूरी तरह से मिन्स्क समझौतों और अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का पालन कर रहे हैं और किसी भी आक्रामक अभियान या नागरिकों को गोलाबारी करने की योजना नहीं बना रहे हैं। हमारे कार्रवाई केवल रक्षात्मक हैं।ह्व उन्होंने कहा कि डोनबास में तनाव बढ़ने के लिए रूस जिम्मेदार है। उल्लेखनीय है कि कीव ने 2014 में डोनेट्स्क और लुहान्स्क के स्व-घोषित गणराज्य के खिलाफ सैन्य अभियान शुरू किया था जब उन्होंने यूक्रेन की नई सरकार को मान्यता देने से इनकार करते हुए देश से स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। रूस, यूक्रेन, फ्रांस और जर्मनी के नेताओं की मध्यस्थता और एक वर्ष तक चली बातचीत के बाद मिन्स्क में युद्धविराम समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। समझौता अभी तक लागू नहीं हुआ है और छिटपुट झड़पें अभी भी जारी हैं।

मलेशिया में कोरोना के 26,701 नये मामले

कुआलालम्पुर। मलेशिया में कोरोना वायरस (कोविड-19) महामारी के 26,701 नए मरीजों की पुष्टि होने के साथ कुल संक्रमितों की संख्या 3,138,215 पर पहुंच गयी है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार गुरूवार देर रात आए नए मामलों में से 132 मामले विदेश से आए यात्रियों से संबंधित हैं, जबकि 26,569 मामले स्थानीय संक्रमण के हैं। इस अवधि में 39 नए मरीजों की मौत से मृतकों की कुल संख्या 32,240 हो गयी है। मंत्रालय ने बताया कि 11,744 मरीजों के संक्रमण से मुक्त होने के साथ देश में स्वस्थ होने वालों की कुल संख्या 28,88,194 हो गयी है। देश में 2,17,781 सक्रिय मामलों में से 216 मरीज गहन चिकित्सा कक्ष में है, जिनमें से 141 मरीजों ऑक्सीजन सहायता पर रखा गया है।

ब्लिंकन, लावरोव अगले सप्ताह कर सकते है बैठक

वाशिंगटन। अमेरिका के विदेश मंत्री और रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव अगले सप्ताह एक बैठक कर सकते हैं। अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता नेड प्राइस ने यह जानकारी दी है। द वाशिंगटन पोस्ट के एक रिपोर्टर ने ट्वीट कर कहा कि रूसी पक्ष ने बैठक की तारीखों का प्रस्ताव किया था और श्री ब्लिंकन ने इसे स्वीकार कर लिया है। श्री प्राइस ने गुरूवार देर रात कहा, ह्ल ब्लिंकन ने आज संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अपनी टिप्पणी में उल्लेख करते हुए कहा कि हम मानते हैं कि इस संकट के समाधान का एकमात्र कूटनीति और बातचीत से हो सकता है। उन्होंने अगले सप्ताह यूरोप में रूस के विदेश मंत्री लावरोव से मिलने का प्रस्ताव रखा था। रूस की ओर से अगले सप्ताह के आखिर में तिथियों का प्रस्ताव किया, जिसे हम स्वीकार कर रहे हैं, बशर्ते रूस यूक्रेन पर हमला न करे।ह्व उन्होंने कहा कि अमेरिका अपने सहयोगियों और भागीदारों के साथ समन्वय का प्रयास जारी रखेगा। साथ ही नाटो-रूस परिषद और ओएससीई के जरिए मास्को के साथ गतिविधियों को आगे बढ़ाएगा।

बाइडेन यूक्रेन रूस संकट के ताजाघटनाक्रम में सहयोगियों के साथ बैठक करेंगे

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन यूक्रेन-रूस संकट के ताजा घटनाक्रम पर चर्चा के लिए शुक्रवार को प्रमुख सहयोगियों के साथ बैठक करेंगे। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के कार्यालय ने यह जानकारी दी है। श्री ट्रूडो के कार्यालय ने गुरूवार को जारी बयान में कहा, ह्ल प्रधानमंत्री, अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन द्वारा आयोजित एक बैठक में भाग लेंगे। बैठक में फ्रांस, जर्मनी, इटली, पोलैंड, रोमानिया, ब्रिटेन, यूरोपीय संघ और नाटो के नेताओं के साथ यूक्रेन को लेकर चर्चा की जाएगी।ह्व यह बैठक डोनबास क्षेत्र में हो रही गोलाबारी की खबरों के बीच होगी। इससे पहले दिन में डोनेट्स्क और लुहान्स्क पीपुल्स रिपब्लिक ने आरोप लगाया कि यूक्रेन के सशस्त्र बलों ने उनके ठिकानों पर गोलीबारी की है। यूक्रेन के सुरक्षा बलों ने भी डोनबास में संघर्ष विराम उल्लंघन की रिपोर्ट दी है। उन्होंने दावा कि एलपीआर बलों ने बालबाड़ी पर हमला किया है। यूक्रेन ने इसे आतंकवादी हमला करार दिया है। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने भी क्षेत्र में सुरक्षा चिंताओं को लेकर गुरूवार को बैठक की थी।

कनाडा में प्रदर्शनरत ट्रक चालकों की अगुवाई करने वाले दो लोग गिरफ्तार

ओटावा। कनाडा की राजधानी ओटावा की सड़कों पर प्रदर्शन कर जाम लगाने वाले सैकड़ों ट्रक चालकों का नेतृत्व कर रहे दो नेताओं को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व कर रहे तमारा लिच और क्रिस बार्बर को पार्लियामेंट हिल इलाके के पास से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने लगभग तीन सप्ताह से चल रहे विरोध प्रदर्शनों को समाप्त करने की प्रदर्शनकारियों को चेतावनी दी है, लेकिन प्रदर्शनकारी ट्रक चालक वहीं डटे हैं और अपने-अपने ट्रकों के हॉर्न बजाकर वहां से नहीं हटने का संकेत दे रहे हैं। दरअसल, कनाडा में इन दिनों कोविड-19 टीकाकरण और वैश्विक महामारी संबंधी पाबंदियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। ट्रक चालकों की अगुवाई में प्रदर्शनकारियों ने कनाडा की राजधानी ओटावा में ट्रकों के साथ जाम लगा दिया है।

तुर्की में कोरोना मामलों में गिरावट की उम्मीद

अंकारा। तुर्की में अगले दो हफ्तों में कोरोना मामलों में गिरावट आने की उम्मीद है, क्योंकि रोजाना कोरोना मामलों में गिरावट आ रही है। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, तुर्की के स्वास्थ्य मंत्री फहार्टिन कोका ने कहा कि कोरोना के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन के सबसे ज्यादा मामले बड़े शहर इस्तांबुल में दर्ज किए गए, लेकिन अब शहर में संक्रमण में बीते 10 दिनों में 62 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506